

## “सेवाओं के साथ-साथ एक दो के सहयोगी बन वायुमण्डल में तीव्र पुरुषार्थ की लहर फैलाओ, मनजीत बन आत्माओं की मन्सा सेवा करो”

आज विशेष स्नेह का दिन है। चारों ओर के बच्चे स्नेह स्वरूप से मिलन मना रहे हैं। आप सभी भी स्नेह स्वरूप में मगन हैं। आज अमृतवेले से चारों तरफ के बच्चे अमृतवेले से भी पहले स्नेह रूप से दिल के स्नेह के मोतियों की मालायें लेकर पहुंच गये थे। अनेक प्रकार के भिन्न-भिन्न मन के भावों को बाप के आगे वर्णन कर रहे थे। आप जानते हो कि बच्चों का स्नेह कितना प्यारा है। भिन्न-भिन्न भाषायें, भिन्न-भिन्न भाव से बापदादा के आगे अपने दिल की बात बोल भी रहे थे और नयनों से मुख से अपने भाव भी स्पष्ट कर रहे थे। बापदादा चारों ओर के बच्चों के स्नेह के भाव देख सभी के स्नेह में समा गये और दिल से यही बोल निकले वाह बच्चे वाह! और बच्चों के मुख से वाह बाबा वाह! के गीत सुनाई दे रहे थे। बापदादा हर बच्चे को देख बच्चों के लव में लीन थे और बच्चे बाप के लव में लीन थे।

आज का दिन बाप बच्चों को बालक सो मालिक बनाने की दृष्टि से देख रहे थे। आज का दिन बच्चों के राज तिलक का दिन है। आज के दिन बापदादा स्वयं फरिश्ते रूप में रहकर बच्चों को विश्व सेवा अर्थ निमित्त बनाया। स्वयं बैकबोन बनें, बच्चों को विश्व स्टेज पर प्रत्यक्ष किया और बापदादा अभी बच्चों की सेवा को देख, जो जिम्मेवारी दी उसकी रिजल्ट को देख बच्चों पर बहुत-बहुत खुश है और दिल से मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो।

बापदादा ने देखा अभी भी बाप द्वारा दिये हुए विश्व सेवाधारी का वरदान हर बच्चे ने अति स्नेह और दिल से किया है और कर रहे हैं। रिजल्ट भी बापदादा ने देखी, हर एक बच्चे के दिल में लगन है मेरा बाबा और बाप के दिल में स्नेह है वाह मेरे बच्चे। वर्तमान समय मैजारिटी छोटे बड़े सेन्टर्स निवासी बच्चों में उमंग है कि अभी जल्दी से जल्दी चारों ओर बाप को प्रत्यक्ष करना ही है। यह उमंग, यह उत्साह बापदादा ने चक्र लगाके देखा, छोटे बड़े सेवाकेन्द्र के बच्चों को सेवा का उमंग बहुत-बहुत-बहुत अच्छा है और आगे भी अच्छा रहेगा। तो बापदादा आज स्नेह के दिन चारों ओर के चाहे देश, चाहे विदेश सभी बच्चों को अपने दृष्टि से, दिल से स्नेह और सेवा का रिटर्न दिल का स्नेह यादप्यार पदमगुणा दे रहे हैं।

अभी समय अनुसार जो उमंग है कि बाप को प्रत्यक्ष करना है, वह धीरे-धीरे आत्माओं के दिल में भी आने लगा है। समझते हैं कि ब्रह्माकुमारियों ने कुछ पाया है, परिवर्तन हो रहा है। पहले जो समझते थे पता नहीं क्या करते हैं, अभी यहाँ तक आये हैं कि अच्छा कार्य कर रहे हैं। जो हम नहीं कर सकते वह इन्होंने अपने संगठन में सफलता पाई है इसलिए आज बापदादा सामने बैठे हुए बच्चों को वा चारों ओर जो भी बच्चे सुन रहे हैं, देख रहे हैं सभी बच्चों को दिल का स्नेह, दिल का प्यार विशेष दे रहे हैं। अभी आगे क्या करना है? सेवा की मुबारक तो बापदादा ने दे दी, अब बापदादा यही चाहते हैं कि अभी हर एक बच्चे को यह उमंग-उत्साह, दृढ़ निश्चय, तीव्र पुरुषार्थ करना है कि अब बाप समान फरिश्ता बनना ही है क्योंकि अभी सभी को बाप के साथ रिटर्न जरूरी करनी है। समान फरिश्ता बनना ही है क्योंकि सभी का वायदा है साथ चलेंगे, साथ राज्य करेंगे। तो ब्रह्मा बाप भी फरिश्ता बन गया, तो साथ कैसे चलेंगे? ब्रह्मा बाप ने जीवन में ही फरिश्तापन का स्वरूप दिखाया। कितनी जिम्मेवारी रही! सभी को योगी बनाना ही है लेकिन इतनी जिम्मेवारी होते भी आप सबने देखा न्यारा और प्यारा रहा। सदा बेफिक्र बादशाह रहा, फिकर नहीं बेफिक्र बादशाह। ऐसे ही आप बच्चों को भी अभी बाप समान बेफिक्र बादशाह फरिश्ता बनना ही है। यह दृढ़ संकल्प है, बनना ही है! कि यह सोचते हो बन ही जायेंगे!

अभी बापदादा ने देखा कि अभी समय अनुसार जितना सेवा का उमंग-उत्साह प्रैक्टिकल में है इतना ही अभी तीव्र पुरुषार्थी बनना और बनाना, सम्पन्न बनना और बनाना, इस प्वाइंट के ऊपर भी अभी स्वयं भी उमंग-उत्साह में रहना और वायुमण्डल में भी उमंग-उत्साह दिलाना। एक दो के सहयोगी बन अब वायुमण्डल में तीव्र पुरुषार्थ की लहर फैलाओ। जैसे एक दो में सेवा का उमंग वायुमण्डल में फैलाया है ऐसे अभी बापदादा बच्चों में यही शुभ आशा रखते हैं कि यह लहर वायुमण्डल में फैले। बापदादा खुश है लेकिन अभी भी पुरुषार्थ है, तीव्र पुरुषार्थ करना है।

अभी हर बच्चे में बापदादा की यही आश है तो हर बच्चा बाप के आशाओं का सितारा हो ना! हैं? जो समझते हैं हम बाप के आशाओं के सितारे बन यह उमंग-उत्साह वायुमण्डल में फैलायेंगे वह हाथ उठाओ। अच्छा। हाथ तो बहुत अच्छा उठाते हैं। बापदादा हाथों को देखके खुश हो जाते हैं। मैजारिटी ने हाथ उठाया है, पीछे वालों का दिखाई नहीं देता लेकिन आगे वालों का दिखाई दिया। अभी उठा रहे हैं पीछे वाले भी, मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा। बापदादा ने देखा कि विशेष मन में कोई भी बात का उमंग-उत्साह आता है तो वह कार्य साकार रूप में अच्छा हो जाता है इसलिए बापदादा इस बारी स्नेह के दिन में यह होमवर्क दे रहा है कि हर एक बच्चा मन के कारण जो संकल्प और समय व्यर्थ जाता है, अगर कभी भी कोई व्यर्थ संकल्प आ जाता है तो सभी को अनुभव होगा कि उसमें टाइम कितना वेस्ट जाता है। इनर्जी कितनी वेस्ट जाती है। तो बापदादा यह होमवर्क देने चाहता कि यह दो मास हर एक बच्चा मन के व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय की बचत का अपने प्रति विधि बनावे। इन दो मास में हर एक अपना चार्ट रखे कि व्यर्थ समय, व्यर्थ संकल्प के ऊपर कितना कंट्रोल किया? क्योंकि अभी समय के प्रमाण आप सभी को मन्सा शक्ति द्वारा आत्माओं की मन्सा सेवा करने का समय होगा। इसके लिए सदा मन के ऊपर अटेन्शन रखना जरूरी है। कहा हुआ भी है मनजीत जगतजीत। तो मनमनाभव के वायुमण्डल में मन के व्यर्थ को सम्पन्न करना है। कर सकते हैं? करेंगे? वह हाथ उठाओ। बापदादा इनाम देगा। अपनी रिजल्ट आप देखना। मन खुश तो मन की खुशी बांटेंगे। यह पुरुषार्थ में नम्बर सभी आगे से आगे लेने का अटेन्शन रखो। व्यर्थ समाप्त, संकल्प समय दोनों समाप्त और समर्थ संकल्प, समर्थ समय आने वाले समय में वायुमण्डल में फैलेगा।

बापदादा एक बात पर बच्चों को देख खुश है। कौन सी बात पर? कि हर बच्चे ने सेवा तो की है लेकिन साथ में जो बापदादा का इशारा है कि डबल राजा बनो। जानते हो ना! एक स्वराज्य अधिकारी और दूसरा भविष्य राज्य अधिकारी। स्वराज्य अधिकारी और बाप को नशा है कि ऐसा और कोई बाप नहीं जिसका हर बच्चा स्वराज्य अधिकारी हो। आप सभी स्वराज्य अधिकारी हो ना! स्व पर आत्मा राज्य करने वाली है। कर्मेन्द्रियों के वश नहीं, राज्य अधिकारी। तो बाप यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा स्वराज्य अधिकारी सदा रहे, कभी कभी नहीं। बन सकते हैं? यह दो मास जो दिया है, इसमें नोट करना स्वराज्य अधिकारी रहे? या कर्मेन्द्रियों के वश बन गये? अभी कर्मातीत बनना है, समय समीप आ रहा है। तो क्या करना है? चलते-फिरते स्वराज्य अधिकारी बनना ही है। यह संस्कार आप ब्राह्मण बच्चों के ही हैं। डबल राज्य, स्वराज्य और फिर भविष्य में विश्व राज्य। बापदादा चक्र लगाते बच्चों का रिजल्ट नोट करते हैं तो सदा स्वराज्य अधिकारी इसमें अभी अटेन्शन चाहिए। तो दो कार्य बापदादा ने दिया एक यह दो मास स्वराज्य अधिकारी कहाँ तक रहते? वह अपनी रिजल्ट देखनी है और साथ-साथ मन की कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर द्वारा व्यर्थ समाप्त करना है। इसमें जो नम्बर लेंगे उसको बापदादा इनाम देगा। पसन्द है? करना है ना! करेंगे? करेंगे ना! कांध हिलाओ। अच्छा।

बापदादा ने आज सभी का जो स्नेह है वह स्वीकार किया। अमृतवेले तो वतन में भी बहुत बच्चों की रिमझिम थी। एडवांस पार्टी भी वतन में आज अपने दिल का स्नेह देने लिए, लेने लिए आये थे। अब वह बाप से पूछते हैं कि आखिर हमारा यह पार्ट कब तक? क्या जवाब दें? पहली लाइन वाले बताओ क्या जवाब दें? क्या कहा? (दादी जानकी ने कहा हम रेडी हैं) आप अकेले जायेंगी? (सभी जायेंगे) आपका प्यार है ना, ऐसे छोड़कर राज्य कैसे करेंगे। (एडवांस पार्टी वाले हमको क्यों छोड़कर चले गये) उन्हीं का पार्ट था ना। उन्हीं को जाना ही था। अभी आप यह कोशिश करो कि जल्दी जल्दी संगठन तैयार करो। जो दो मास काम दिया है ना, अगर यह काम आप सभी को करा देंगे, रिजल्ट निकालेंगे तो जल्दी हो जायेगा। (बाबा के स्नेह में कर लेंगे) स्नेह तो है, स्नेह में सभी पास है। बापदादा भी देखते हैं कि स्नेह सबका है लेकिन स्नेह के साथ शक्ति भी चाहिए। इसके लिए अमृतवेले को पावरफुल बनाओ, बैठते हैं बापदादा बैठने की मुबारक देते हैं लेकिन जो बैठने का वायुमण्डल शक्तिशाली चाहिए, कोई कैसे बैठता है, कोई कैसे बैठता है। अगर आप फोटो निकालो ना, तो आपको खुद लगेगा कि और कुछ होना चाहिए। जो बापदादा ने ज्वालामुखी योग कहा, उसके ऊपर अभी और गहरा अटेन्शन देना। पुरुषार्थ करते हैं सभी लेकिन पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द जोड़ो। अभी बापदादा ने हर बच्चे को यह दो मास दिये हैं, इसमें जितना अटेन्शन देंगे तो अटेन्शन के साथ बापदादा भी एकस्ट्रा आपको सहयोग देगा। मन के मालिक, मन को ऐसे चलाओ जैसे पांव और बांह को चलाते हो। जो चाहते हो वह करते हैं ना। अभी आप चाहो यहाँ नहीं यहाँ रखूँ तो रख सकते हो ना। ऐसे माइन्ड कन्ट्रोल, जो चाहे वही मन संकल्प करे। रोज रात को रिजल्ट देखो आज मन की रूलिंग पावर,

कन्ट्रोलिंग पावर कहाँ तक रही? अभी व्यर्थ को समाप्त जल्दी-जल्दी करना चाहिए अब समर्थ बन वायुमण्डल में समर्थपन की शक्ति फैलाओ। बापदादा तो बच्चों का दुःख दर्द, पुकार सुन करके बच्चों द्वारा अभी जल्दी समाप्ति कराने चाहते हैं। सुनाया ना, पुरुषार्थ सब कर रहे हैं लेकिन अभी एड करो तीव्र। करना ही है, करेंगे, देखेंगे... यह गे-गे नहीं चलेगा।

स्नेह का नज़ारा भी आज देखा, हर एक के दिल में कितना प्यार है लेकिन जितना प्यार है ना, साथ में उतना शक्ति भी चाहिए। अभी शक्ति को भरो। कभी भी कोई भी बहनें अपने को सिर्फ शक्ति नहीं, शिवशक्ति समझो। शिवशक्ति, बाप साथ है। पाण्डवों से पाण्डवपति साथ है। तो अभी क्या करेंगे? जो बापदादा ने कहा है पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द लगाओ। वायुमण्डल बनाओ। एक दो के सहयोगी बन हर एक अपने-अपने स्थान पर रहते हैं, स्थान को शक्तिशाली बनाओ, साथियों को शक्तिशाली बनाओ। तो क्या करेंगे अभी? नवीनता करेंगे ना! जब मेरा बाबा कहते हैं, तो 'मेरे' जैसा बनना तो पड़ेगा ना। हर एक अपने दिल में दृढ़ संकल्प करो, संकल्प अच्छे-अच्छे करते हो, अमृतवेले बापदादा देखते हैं कि संकल्प अच्छे करते हो यह करेंगे, यह करेंगे, यह करेंगे लेकिन जब कर्मयोगी बनते हो, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो उसमें फर्क हो जाता है। कर्मयोगी की स्थिति उसमें अटेन्शन ज्यादा चाहिए। अच्छा।

सभी खुश तो हैं ना! खुश हैं? देखो नये-नये भी कितने आते हैं। जो नये पहली बार आये हैं वह हाथ उठाओ। देखो कितने हैं? आधा क्लास नये आये हैं। बापदादा आये हुए नये बच्चों को देख खुश है क्योंकि लास्ट समाप्ति के समय से तो पहले आ गये हैं। लेकिन जितना लेट आये हो इतना ही तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा क्योंकि इस थोड़े टाइम में आपको पूरे 21 जन्मों का भविष्य बनाना है। इतना अटेन्शन रखना पड़ेगा। समय को बचाना, सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं गंवाना। तीव्र पुरुषार्थी रहना, साधारण पुरुषार्थ से पहुंचना मुश्किल है। फिर भी बापदादा आये हुए बच्चों को दिल से मुबारक दे रहे हैं। मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

**सेवा का टर्न इन्दौर ज़ोन का है, 7 हजार आये हैं:-** अच्छा। इन्दौर ज़ोन की टीचर्स हाथ उठाओ। बापदादा टीचर्स को मुबारक दे रहे हैं। बापदादा सभी टीचर्स को मुबारक क्यों दे रहे हैं? क्योंकि बापदादा ने देखा कि इन्दौर की सेवा में निमित्त जो बने हैं वह सेवा की रिजल्ट अच्छी दिखा रहे हैं। जो भी वहाँ के विशेष निमित्त बने हैं, बाहर वाले उन्हीं से कनेक्शन अच्छा है। सन्देश अच्छा दिया है अभी आगे क्या करना है? इसमें तो ठीक है, इसकी तो बापदादा मुबारक देते हैं। लेकिन जितना सम्बन्ध-सम्पर्क में हैं, इन्हीं को अभी वारिस बनाओ। सम्पर्क वाले हैं लेकिन वारिस क्वालिटी बाप के आगे लाओ। ला सकते हो, कनेक्शन अच्छा है। (खांसी आ रही है)

आज रथ की तबियत थोड़ी ढीली है। फिर भी बापदादा तो मिलने आ गये। बापदादा को बच्चों को देखकर खुशी होती है वाह बच्चे वाह! यही दिल से निकलता है। जितना आप दिल से वाह! बाबा वाह! कहते हो उससे ज्यादा बापदादा वाह! बच्चे वाह! कहते हैं। तो इन्दौर वाले कनेक्शन जो है उसको थोड़ा समीप लाओ। ला सकते हो। उम्मीदवार हैं। उम्मीदवार को सामने लाओ। अच्छा। फिर भी सेवा के निमित्त आ गये हो बापदादा भी खुश होते हैं कि एकएक ज़ोन को बहुत अच्छा यह चांस मिलता है। ज्यादा से ज्यादा संख्या लाने का चांस मिलता है, तो यह प्रोग्राम बहुत अच्छा बनाया है। हर एक ज़ोन को चांस मिलता है लेकिन चांस लेके फिर उसका रिजल्ट भी निकालना, बापदादा के सामने लाने का। अच्छा।

**डबल विदेशी 400 आये हैं:-** बहुत अच्छा। डबल विदेशी यज्ञ का श्रृंगार हैं। जब भी आते हैं ना तो यज्ञ का श्रृंगार हो, सभी कितने खुश होते हैं क्योंकि आपकी एक विशेषता अच्छी है, जो भी करना है ना वह फौरन करते हो, लम्बा नहीं करते हो। बापदादा देखते हैं कि उमंग-उत्साह ज्यादा बढ़ता जा रहा है। कोई भी ऐसा टर्न नहीं होता जिसमें डबल विदेशी नहीं हों। तो बापदादा डबल विदेशियों को टाइटल देता है डबल पुरुषार्थी। अभी करके दिखाना। डबल पुरुषार्थी बनके रिजल्ट दिखाना। बापदादा को मालूम है सेवा बढ़ती रहती है, समाचार आता रहता है। सेवा भी अच्छी है, अभी सिर्फ जो आज कहा ना, पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द सदा लगाओ। तो तीव्र पुरुषार्थी बच्चे सदा बापदादा को अपने दिल में रखते और बापदादा हर बच्चे को अपने दिल में रखते। सबके दिल में बापदादा है ना। हाथ उठाओ। दिल में कौन रहता है? बापदादा। और बापदादा के दिल में आप बच्चे हैं। बापदादा, जिन बच्चों ने खास यादप्यार भेजी है उन्हीं को खास यादप्यार दे रहे हैं। जयन्ती बच्ची ने भी बहुत दिल से यादप्यार भेजा है,

गायत्री बच्ची ने भी भेजी है और किसका भी नाम था, तो जिन्होंने विशेष यादप्यार भेजी है, बाप ने भी उन्हीं को विशेष यादप्यार दी है। और अगर किसी की कोई भी आश है तो उस आश को पूरा करते हुए उन्हीं को आगे बढ़ाते चलो। आशाये इन्हीं की खराब नहीं होती हैं, अच्छी होती हैं। सेवा का उमंग भी अच्छा होता है तो जिन्होंने खास याद भेजी है उन्हीं को बापदादा पदमगुणा यादप्यार दे रहे हैं। अच्छी आलराउण्ड सेवाधारी है। ऐसे नहीं कहो और याद नहीं हैं, याद सब हैं लेकिन उन्हीं ने विशेष भेजी है इसलिए विशेष दे रहे हैं। कमाल हैं, कोई ज़ोन में विदेशी मिस नहीं होते हैं। (वजीहा ने बहुत प्यार से याद करके पत्र लिखा है) बच्ची अच्छी याद में रहती है। बापदादा ने देखा कि बच्ची की बीमारी ने कितनों का कल्याण किया है। डाक्टर्स भी इसको देखकर खुश होते हैं कि बीमार देखने में नहीं आती है, जितनी बीमारी है! खुशमिजाज रहती है। इसको कहा जाता है बीमारी के ऊपर विजयी। बीमारी अपना काम कर रही है और बच्ची अपने याद के काम में बिजी है। यह भी डबल विदेशियों का एकजैम्पुल है। तो डबल विदेशियों को बापदादा दिल से यादप्यार भी देते हैं और विशेष मुबारक देते हैं मधुबन का श्रृंगार बनके आने का। अच्छा लगता है ना आप लोगों को? सभी बच्चों को भी आप लोगों का आना देख करके खुशी होती है। सबके दिल से वाह! वाह! निकलती है। अभी कमाल तो की है जो जगह-जगह पर अपना सन्देश दिया है लेकिन अभी वारिस क्वालिटी तैयार करो, विदेश से वारिस लाओ तैयार करके। कर सकते हो क्योंकि सबमें फास्ट जाने वाले हो ना। तो यह भी कर सकते हो। अच्छा।

**टीचर्स बहिनें बहुत आई हैं:-** टीचर्स को देखकर तो बापदादा बहुत खुश होते हैं क्योंकि जो निमित्त टीचर्स बनी हैं, वह बापदादा को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनी हुई हैं। कोई भी टीचर को देखते खुश होते हैं क्योंकि टीचर्स माना ही जिसके फीचर्स से फ्युचर दिखाई दे। फ्युचर आपका क्या है? फ्युचर है सदा दिलखुश, सदा अधिकारी, अधीन होने वाले नहीं। तो टीचर्स के फीचर्स यह साक्षात्कार कराते हैं। हर एक टीचर सदा यही समझे कहाँ बोला, कहाँ नहीं बोला भले, लेकिन आपके फीचर्स वर्तमान समय की प्राप्ति और भविष्य की प्राप्ति आपकी शकल दिखाती है। सदा यह अटेंशन रखो कि हमारा चेहरा ऐसा साक्षात्कार कराने वाला है? कोई भी टीचर के सामने आये, टीचर को देख एक तो खुशमिजाज हो जाए, खुशी उसके जीवन में दिखाई दे। ऐसे खुशनुमा और खुशकिस्मत हो। बापदादा ने देखा है हर एक टीचर का लक्ष्य अच्छा है। करना ही है। बनना ही है। ऐसे है ना? लक्ष्य क्या है? यही लक्ष्य है ना! तो यह लक्ष्य लक्षण में दिखाई देता भी है और ज्यादा दिखाई देना चाहिए। जो भी आवे खुशी जरूर ले जाये क्योंकि खुशी हर मनुष्य को आवश्यक है। चाहते हैं लेकिन बन नहीं पाते हैं तो टीचर्स माना फीचर्स द्वारा भी सेवा करे। अनुभव करें कि यह क्या बन गई है! अभी आगे चल करके आपका चेहरा और चलन यह सेवा ज्यादा करेगा क्योंकि जैसे समय नाजुक आयेगा तो समय कम मिलेगा लेकिन चाहना बढ़ेगी, कुछ मिले, कुछ मिले। इसके लिए टीचर्स को सदा ऐसे एवररेडी रहना चाहिए, जो कोई आवे वह कम से कम कुछ लेके ही जावे। चेहरे और चलन द्वारा भी कुछ न कुछ लेके जाये। दाता के बच्चे हो ना! बापदादा तो टीचर्स को देखकर बहुत खुश होते हैं। दिल ही दिल में गुण गाते हैं वाह टीचर्स वाह! क्योंकि हर एक टीचर सेवा तो करते ही हैं और अपनी रिजल्ट रात को भी देखते होंगे कि आज की सेवा क्या हुई! अपना चार्ट तो आपेही देखते हैं। जो लक्ष्य रखा सेवा का वह हुआ। अगर नहीं हुआ कारणे अकारण, तो दूसरे दिन डबल करो। खाली नहीं छोड़ो क्योंकि टीचर्स माना निमित्त दाता के बच्चे दाता। तो बापदादा तो खुश होते हैं चाहे छोटे सेन्टर की हैं चाहे बड़े सेन्टर की हैं लेकिन त्याग करके सेवास्थान पर आना यह भी हिम्मत है ना। तो बापदादा आपकी हिम्मत पर तो खुश है। अब और साथी बनाओ। और भी टीचर्स निकालो क्योंकि सेवा बढ़नी ही है। अभी थोड़ा हंगामा होगा और सब उत्कण्ठा से आपके आगे आयेंगे। सर्विस बढ़ने वाली है, कम होने वाली नहीं है। अच्छा है, एक ज़ोन की हैं और दूसरी तो थोड़ी होगी। (2000 टीचर्स आई हैं) मुबारक हो टीचर्स को।

**कलकत्ता वालों ने बहुत अच्छा श्रृंगार किया है:-** कलकत्ता वालों ने यह सेवा बहुत अच्छी दिल से ली है। बापदादा देखते हैं श्रृंगार क्या भी हो लेकिन दिल से करते हैं। बापदादा दिल देखते हैं इसमें, श्रृंगार नहीं देखता वह तो चलते-फिरते दिखाई दे देता है लेकिन दिल से करते हैं इसकी मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा है। वैसे भी कलकत्ता ब्रह्मा बाप की दिव्य जन्म भूमि है। अच्छा है। आपकी इन्चार्ज दादी भी वन्डरफुल पार्ट बजा रही है। अभी सभी ज़ोन को बापदादा कहते हैं अभी सेवा वारिस क्वालिटी लाओ अभी इसमें नम्बर लो। सेवास्थान बढ़ाये और

बाप के बच्चे भी बढ़ाये इसकी तो मुबारक है लेकिन अभी हर ज़ोन लक्ष्य रखे वारिस क्वालिटी बढ़ाओ। बापदादा हमेशा कहते हैं कि माइक भी हो वारिस भी हो, ऐसी क्वालिटी बढ़ाओ। जिसके कहने से, एक के कहने से अनेक प्रभावित हो जाएं। इसको कहते हैं क्वालिटी। अच्छा।

चारों ओर के अति स्नेही, सहयोगी, सर्विसएबल बच्चों को बापदादा स्नेह के दिन की, स्नेह भरी यादप्यार दे रहे हैं और साथ-साथ बापदादा हर स्नेही बच्चों को यह बात कह रहे हैं कि अब हर बच्चे को तीव्र पुरुषार्थ में नम्बरवन का लक्ष्य रख बनना ही है और ड्रामा बनायेगा ही। सभी बच्चों को चारों ओर के कहाँ भी बैठे हैं, बापदादा सभी को देख रहे हैं कैसे उमंग-उत्साह से बैठे हैं, सुन भी रहे हैं, देख भी रहे हैं। एक-एक बच्चे को स्नेह भरी यादप्यार और मुबारक हो, मुबारक हो।

**दादियों से:-** अच्छा देखो, सभी दादियां जो भी हैं ना निमित्त वह बहुत प्यारी हैं। (दादी गुल्जार बहुत अच्छी है) आप नहीं होती तो क्या करते। सभी दादियां भी प्यारी हैं, न्यारी हैं। (बाबा की दुआयें बहुत हैं)

**मोहिनी बहन से:-** यह बहादुर है, ठीक हो जायेगी। बापदादा चला रहा है ना। यह भी चल रही है, बापदादा चला रहा है। थोड़ा बहुत हिसाब चुक्त्तू करके चल तो रही है, आ तो गई। बहुत अच्छा।

बापदादा को हर बच्चा ऐसा प्यारा है, चाहे दादियां आगे आती हैं आप नहीं आते हो लेकिन बाप को हर बच्चा प्यारा है। ऐसे नहीं समझो हम तो दूर से देखने वाले हैं, दिल में रहने वाले हैं। अच्छा।

**परदादी से:-** आपका ज़ोन आया है, देखा कितने अच्छे-अच्छे आये हैं। अच्छा।

(तीनों भाईयों ने बापदादा को गुलदस्ता दिया) आपकी त्रिमूर्ति भी अच्छी है।

(रमेश भाई ने गाडली वुड स्टुडियो का फोटो बापदादा को दिखाया और बताया कि 26 जनवरी को उद्घाटन है) बहुत अच्छा, अभी खूब चलाना, सभी जोर देके चलाना। नई-नई बातें करना, होंगी। सेवा माना मेवा खाना। सेवा नहीं कर रहे हो मेवा खा रहे हो। (ऊषा बहन को बहुत उमंग था सेवा का) उसकी भावना काम करेगी। जो भावना सेवा की रही ना, उसके दिल में भावना रही सेवा हो, सेवा हो, वह काम करेगी। सेवा का उमंग था तभी तो परिवार को भी प्यारी, बाप को भी प्यारी। (रमेश भाई से) आपकी तबियत ठीक है? चलाओ।

**भूपाल भाई से:-** अभी आफीसर ठीक हो गया। अभी कुछ न कुछ करता रहता है। उसको योग से ठीक करो और जाकरके थोड़ा सेवा करो। जिससे उसको लगे कि यह कितने शुभचिंतक हैं। यह अनुभव जरूर करें। ठीक हो जायेगा फिर। अच्छा।

**गोलक भाई से:-** (बहुत मेहनत करता है) मेहनत का फल इसको अन्दर मिल रहा है। मेहनत व्यर्थ नहीं जाती। मेहनत का फल यह है जो सबका प्यार है, यह फल है। कोई बात हो जाती है वह बात दूसरी है, लेकिन दिल का प्यार है। अच्छा।

**नारायण दादा और मनोज से:-** दोनों आये हैं बहुत अच्छा। अच्छा है आ गये ना। हर टर्न में आपको आना चाहिए। पहले आते थे, अभी कभी-कभी आते हो। कभी-कभी बाबा को अच्छा नहीं लगता। आना चाहिए क्योंकि बाप चाहते हैं कि हर आत्मा आगे से आगे बढ़े। आयेंगे, जायेंगे, मिलेंगे खुशी होगी। चेहरा खुशानुमा हो जायेगा और विचार खत्म हो जायेंगे। विचार करते हो ना! वह खुशमिजाज हो जायेंगे क्योंकि फिर भी ज्ञान मिला हुआ है ना। यह भी खुश। आप दोनों को तो ऐसा खुश रहना चाहिए जो कोई पूछे कहाँ से मिली खुशी। होना चाहिए। अच्छा है। खुश रहेंगे ना तो प्रॉब्लम सब खत्म हो जायेंगी, गैरन्टी है। सोचते हो ना, खुश रहो। जितना खुश रहेंगे उतनी तबियत भी अच्छी और सभी देख करके भी खुश हो जायेंगे। फिर भी सम्बन्ध है ना, परिवार से, कितने सम्बन्धी हैं। कहाँ भी रहो लेकिन सेवा करो चेहरे से। जो भी देखे कौन हैं यह, कहाँ से आये हैं। पालना तो ली है ना।

## “अब स्मृति स्वरूप अनुभव की अथॉरिटी बनो, ज्वालामुखी योग द्वारा सबको लाइट माइट की किरणों का सहयोग दो”

आज बापदादा अपने सामने या चारों तरफ के अपने छोटे से संसार को देख हर्षित हो रहे हैं क्योंकि यह संसार है छोटा लेकिन अति प्यारा है क्योंकि यह संसार की एक-एक आत्मा श्रेष्ठ आत्मा हैं। कोटों में कोई आत्मायें हैं। बाप के वर्से के अधिकारी आत्मायें हैं। बापदादा हर बच्चे को देख खुश होते हैं कि यह एक-एक बच्चा राजा बच्चा है। बापदादा ने हर एक बच्चे को स्वराज्य अधिकारी और विश्व राज्य अधिकारी बनाया है। इस समय सभी स्वराज्य अधिकारी हैं अर्थात् मन-बुद्धि, संस्कार, कर्मेन्द्रियों के राजा हैं। कर्मेन्द्रियों के वश नहीं हैं। मन के भी मालिक हैं। तो ऐसे ही आप हर एक बच्चा अपने को मन के मालिक, संस्कारों के भी मालिक समझते हो? ऐसे तो नहीं कभी आप मन के मालिक होते वा कभी मन आपका मालिक होता! क्योंकि कहते ही हो मेरा मन, मैं मन नहीं कहते हो। तो मेरे के आप मालिक हो। चेक करो कभी मन तो मालिक नहीं बन जाता? क्योंकि इस समय बापदादा ने हर एक को स्वराज्य अधिकारी के सीट पर बिठाया है। अब के स्वराज्यधारी हो और भविष्य का राज्य तो आपका है ही। डबल राज्य अधिकारी हो। बापदादा देखते हैं हर बच्चा स्वराज्य अधिकारी के साथ स्वमानधारी भी है। तो मैं स्वमानधारी आत्मा हूँ, इस स्मृति में बैठो तो देखो कितने स्वमानों की लिस्ट आपके सामने आती है। अनेक स्वमान की माला सामने आ जाती है ना!

बापदादा ने बच्चों के स्वमानों की माला हर बच्चे को डाली है। स्वमान सुनते ही आपके सामने भी अपने स्वमान स्मृति में आ गये! याद करो, अनादि स्वरूप में आपका स्वमान कितना बड़ा है! चले गये अनादि स्वरूप में? हर एक का स्वमान है एक तो बाप के साथ-साथ है चमकती हुई आत्मा, बाप के साथ के कारण विशेष चमकती हुई दिखाई दे रही है। देख रहे हो? जैसे आकाश में भी यहाँ कोई-कोई सितारा विशेष चमकता है, ऐसे बाप के साथ-साथ होने कारण चमकती हुई आत्मा हो। याद आया अपना अनादि स्वरूप? सेकण्ड में अपने अनादि स्वरूप में स्थित हो सकते हो? अभी एक सेकण्ड में उस अनादि स्वरूप में एक सेकण्ड के लिए स्थित हो जाओ। कितना नशा चढ़ता है! आगे बढ़ो, इस सृष्टि चक्र के आदि में आ गये! यह ड्रिल करो सतयुग आदि में अपना स्वरूप देखो, कितना श्रेष्ठ सुख स्वरूप है। कितना सर्व प्राप्ति स्वरूप है। दुःख का नामनिशान नहीं है। प्रकृति कितनी सुन्दर सतोगुणी है। अनुभव करो अपने देवता स्वरूप का। देख रहे हो अपना स्वरूप? कोई भी राजा हो, महात्मा हो, नेता हो ऐसा सर्व प्राप्ति स्वरूप कोई देखा! तो एक सेकण्ड के लिए अपने देवता स्वरूप में स्थित हो जाओ। अपने स्वमान में मजा आता है ना! हम सो देवता ... बापदादा यह ड्रिल करा रहा है। फिर नीचे आओ कौन सा युग आ गया? द्वापर में भी आपका स्वमान पूज्य का है। पूज्य स्वरूप है। अपने पूज्य स्वरूप को देख रहे हो? कितने सभी भावना से कायदे प्रमाण पूजा करते हैं। ऐसे कायदे प्रमाण पूजा और किसी की भी नहीं होती। चाहे धर्म पितायें आये, चाहे गुरु बनें, नेतायें बनें, अभिनेतायें बनें लेकिन ऐसी कायदे प्रमाण पूजा किसकी नहीं होती। तो अपना स्वमान देखा, अनुभव किया? अब आओ संगम में, सब चक्र लगा रहे हो? पीछे वाले चक्र लगा रहे हो! हाथ उठाओ। देखो अपना स्वमान क्योंकि स्वराज्य अधिकारी हो ना! तो संगम पर स्वयं भगवान, आपकी जीवन में स्वयं मालिक आप बच्चों में पवित्रता की विशेषता भरता है। जो पवित्रता आपके सर्व अविनाशी सुखों की खान है। और बनाने वाला कौन? स्वयं भगवान। वह तो अभी भी प्रत्यक्ष प्रमाण आपको पवित्रता की जायदाद बाप से प्राप्त हो गई है। अब चेक करो - पवित्रता सर्व प्राप्तियों का आधार है, पवित्रता से आप सभी मास्टर सर्वशक्तिमान बन गये। तो चेक करो सर्वशक्तियां प्राप्त हैं? कोई-कोई बच्चे कहते हैं बाप ने तो सर्व शक्तियां दी लेकिन कोई-कोई समय जिस शक्ति की आवश्यकता होती है वह थोड़ा टाइम के बाद आती है। बात पूरी हो जाती है फिर आती है। इसका कारण क्या? वरदान में बाप ने दी फिर भी समय पर नहीं आती है उसका कारण क्या? अपने मास्टर सर्वशक्तिमान के स्मृति की सीट पर नहीं होते हो, कोई भी किसका आर्डर मानते हैं तो सीट वाले का आर्डर मानते हैं। तो जब भी आप कोई भी शक्ति का

आर्डर करते हो, पहले यह देखो स्मृति की सीट पर हैं? स्वमान के सीट पर हैं? स्मृति की सीट पर स्थित हो जाओ तो सर्व शक्तियां आपके पास समय पर बंधी हुई हैं आने के लिए क्योंकि सर्वशक्तिमान बाप ने आपको मास्टर सर्वशक्तिमान बनाया है। तो इतने पावरफुल स्वमानधारी बन चल रहे हो ना? अपने स्वमान देखे? संगम के बाद कहाँ जायेंगे? रिटर्न जरनी करेंगे ना! इसलिए बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक सारे दिन में यह एक्सरसाइज़ करते रहें। समय निकालो बार-बार यह स्वमान की माला पहनाने से, अनुभव करने से जो बापदादा ने स्वराज्य अधिकारी बनाया है, वह हो नहीं सकता कि स्वमान आपके आर्डर पर नहीं चले। सिर्फ सीट पर सेट रहो।

बापदादा ने देखा सभी अटेंशन रखते हैं लेकिन नियमित रूप से अपनी दिनचर्या सेट करो। बीच-बीच में यह अपने स्वमान के स्मृति स्वरूप में स्थित रहो। जैसे ट्रैफिक कंट्रोल करते हो ऐसे यह स्वमान की स्मृति आदिकाल से रिटर्न जरनी तक की, बीच-बीच में टाइम फिक्स करो। यह चलते फिरते भी कर सकते हो क्योंकि मन को सीट पर बिठाना है। बापदादा ने देखा, पहले भी कहा है योग सब लगाते हो लेकिन अब आवश्यकता किसकी है? समय की हालातों को देख पहले भी सुनाया अब ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है, जिससे डबल काम होगा। एक तो अपने पुराने संस्कार का संस्कार हो जायेगा, अभी संस्कारों को मारते हो लेकिन जलाते नहीं हो। मारने के बाद फिर भी कभी-कभी वह जाग जाते हैं। जैसे रावण को सिर्फ मारा नहीं, जलाया। ऐसे आप भी अपने पुराने संस्कारों को जो बीच-बीच में तीव्र पुरुषार्थ में कमी कर देते हैं, उसके लिए ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है। एक स्वयं के लिए और दूसरा ज्वालामुखी योग द्वारा औरों को भी लाइट रूप होने के कारण, माइट रूप होने के कारण उन्हीं को भी अपनी किरणों द्वारा सहयोग दे सकते हो। तो अभी सभी ने योग को ज्वालामुखी योग में परिवर्तन किया? समय अनुसार अभी आत्माओं को आपके सहयोग की आवश्यकता है। बाकी बापदादा तो अमृतवेले हर बच्चे को स्नेह देते हैं।

बापदादा देखते हैं लक्ष्य बहुत अच्छा रखते हैं, हिम्मत भी रखते हैं लेकिन सारा दिन उसी अटेंशन में रहें, जैसे अमृतवेले रहता है, वह कम हो जाता है। कारण क्या होता है? यह जो कर्म में लगते हो, कर्मयोगी बन कर्म करना, इसमें अन्तर पड़ जाता है। आप सिर्फ योग लगाने वाले नहीं हो, योगी जीवन वाले हो। तो जीवन सदा रहती है, कभी-कभी नहीं। तो बापदादा अभी क्या चाहते हैं? प्यार में तो बहुत करके पास हैं, प्यार की सबजेक्ट में बाप ने देखा मैजारिटी बाप के साथ मेरा बाबा, मेरा बाबा कह प्यार का अनुभव करते हैं। प्यार में तो मैजारिटी पास हैं, अब किसमें पास होना है? बाप समान बनने में। सभी क्या चाहते हैं? बाप समान बनना है कि बाप बाप रहेगा आप बच्चे हैं, तो बाप समान तो बनना पड़ेगा। प्यार माना क्या? प्यार वाला जो कहे वह करना ही है। तो सभी बाप के प्यारे हो, बाप का प्यार आपसे है, इसमें हाथ उठाओ। प्यार है अच्छा, प्यार है? तो अभी बापदादा यही चाहते हैं कि जैसे प्यार है, ऐसे यह लक्ष्य रखो कि हमें बाप समान बनना ही है, इसमें हाथ उठाओ। तो निश्चय रखते हैं, हाथ तो बहुत अच्छा उठाते हैं। बापदादा देख रहे हैं।

बापदादा चाहता है एक-एक बच्चा ऐसा खुशनुमा, खुशनसीब दिखाई दे, चेहरे से चलन से क्योंकि समय प्रमाण अभी आपका चेहरा बहुत सेवा करेगा। आवश्यकता पड़ेगी। इसके लिए बापदादा चाहता है कि अभी से लक्ष्य रखो जैसे अभी यह 75 वर्ष के कारण सबको उमंग है सेवा करने का। ऐसे उमंग हो चेहरे से सेवा करने का क्योंकि दिनप्रतिदिन समय नाजुक आना ही है। तो ऐसे समय पर आपका चेहरा आत्माओं को चियरफुल बना दे।

बापदादा ने आज अमृतवेले चक्र लगाया, तो क्या देखा? बैठते सभी अपने रूचि से भी हैं लेकिन सबसे बड़ी अर्थॉरिटी है अनुभव की। तो देखा बैठते हैं लेकिन अनुभव की अर्थॉरिटी, स्मृति में बैठते हैं लेकिन स्मृति स्वरूप अनुभव हो। अनुभव की अर्थॉरिटी का आनंद वह थोड़ा समय होता है। सोचते हैं मैं बापदादा के तख्तनशीन हूँ लेकिन स्वरूप के स्मृति स्वरूप अनुभवी मूर्त, अनुभव में खो जाये उसका अभी और भी आगे बढ़ाना होगा क्योंकि अनुभव की अर्थॉरिटी सबसे बड़े ते बड़ी है। स्मृति स्वरूप रहना इसको कहा जाता है अनुभव। तो अनुभव में खो जाना जो स्वरूप की स्मृति रखते हैं उस स्वरूप की अनुभूति में रहना इसकी और आवश्यकता है क्योंकि अनुभव कभी भी भूलता नहीं है। किसी को भी आप किसी के अनुभव द्वारा सुनाने की कोशिश करते हो क्योंकि अनुभव

का प्रभाव पड़ता है। तो स्वयं को जो स्वरूप स्मृति में रखते हो उसके स्वरूप की अनुभूति में खो जाये, अनुभव अपने पुरुषार्थ में भी बहुत मदद करता है। तो बापदादा ने देखा अनुभव की अथॉरिटी में नम्बरवार हैं। तो अभी इस अनुभव की अथॉरिटी के अभ्यास के ऊपर और अटेन्शन दो। अनुभव स्वरूप की स्थिति सदा समाई हुई रहती है, उसकी शकल, चलन सेवा करती है।

तो आज बापदादा बच्चों का रिकार्ड देख रहे थे। तो एक तो ज्वालामुखी योग के ऊपर और अटेन्शन दो जिससे स्वभाव संस्कार परिवर्तन में सहयोग मिलेगा। संस्कार अभी भी जिसको आप नेचर कहते हो वह अभी भी अपना कार्य बीच-बीच में कर लेती है। बाकी बापदादा खुश है, किस बात पर? जानते हो, किस बात पर बापदादा खुश है? जानते हो? आजकल की मुरलियां सुनते हुए बापदादा ने देखा अपने दिनचर्या में अटेन्शन ज्यादा गया है। अटेन्शन बढ़ा है तो टेन्शन संस्कारों का कम होता जायेगा। बापदादा ने पहले भी कहा जब भी टेन्शन आवे ना, ए लगा दो, एड कर दो ए अटेन्शन। चलना तो सबको है ही। यह तो वायदा है ही पक्का। साथ चलेगे, साथ राज्य करेंगे। तो सभी खुश है? कि कभी-कभी खुश है? जो समझते हैं हम सदा खुश हैं, कभी-कभी नहीं, सदा खुश हैं, देखो सोचके हाथ उठाओ। अच्छा। हाथ भी सोचके उठा रहे हैं। खुशी अपनी चीज़ है। अपनी चीज़ क्यों जाये? तो अभी क्या करेंगे? आगे चलना तो है ही। तो अभी आगे क्या करेंगे?

हर सेन्टर निर्विघ्न, व्यर्थ संकल्प रहित हो सकता है? हो सकता है? कि इसके लिए समय चाहिए? अभी तक बापदादा के पास कोई सेन्टर ने यह रिपोर्ट नहीं दी है कि हमारा सेन्टर सदा निर्विघ्न है। साथी भी। सिर्फ स्वयं नहीं, साथी भी निर्विघ्न। वह भी टाइम आना है। हो जायेगा क्योंकि बनना तो बच्चों को ही है और कोई एकजैम्पुल में आयेगे जो पीछे तीव्र पुरुषार्थी बन आगे जायेगे लेकिन मैजारिटी तो आपको ही आगे जाना है। बापदादा ने देखा मुरली से प्यार मैजारिटी का है लेकिन जैसे जगत अम्बा ने प्रत्यक्ष जीवन में दिखाया कि जो बाप ने कहा वह करना ही है, लक्ष्य रखा और पुरुषार्थ के तरफ अटेन्शन भी दिया। आपकी दीदी दादियां जो एडवांस पार्टी में भी गई हैं उन्होंने भी अटेन्शन दिया, अभी आप लोगों का इन्तजार कर रहे हैं। पूछती हैं वह कि समाप्ति का गेट कब खोलेंगे? एक दो तो नहीं खोलेगा ना! तो अभी पुरुषार्थ करो कि समय को, गेट खुलने के समय को समीप लाओ। सम्पन्न बनना अर्थात् समीप लाना।

अच्छा। सभी चारों ओर के बच्चों को बापदादा दिल का स्नेह दे रहे हैं। साथ-साथ जो बापदादा ने दो मास का कार्य दिया है, उसकी भी स्मृति दिला रहे हैं क्यों? बहुत करके यह व्यर्थ संकल्प पुरुषार्थ को तीव्र के बजाए साधारण कर देते हैं इसलिए चारों ओर के बच्चों को बापदादा यादप्यार के साथ यह भी स्मृति दिला रहे हैं कि अब संगम का समय कितना श्रेष्ठ सुहावना है, इस संगम के समय ही सर्व खजाने बाप द्वारा प्राप्त होते हैं, संगम का एक-एक सेकण्ड महान है इसलिए संगम के समय का मूल्य सदा अपने बुद्धि में रखो। संगम का एक सेकण्ड प्राप्ति कितना कराता है। आपसे कोई पूछे आपको क्या मिला है, तो क्या जवाब देंगे? अप्राप्त नहीं कोई वस्तु हम ब्राह्मणों के दिल में। पाना था वो पा लिया। अब उसको कार्य में लगाते हुए तीव्र पुरुषार्थी बन समय को समीप लाओ। अच्छा। बापदादा देखते हैं सभी को उमंग भी आता है और यह उमंग सदा आगे बढ़ाते रहो। अच्छा।

**सेवा का टर्न पंजाब ज़ोन का है:-** आधा हाल तो पंजाब है। अच्छा है। पंजाब वालों ने पंजाब में सेवा का चांस लेकरके सेवास्थान और स्टूडेंट अच्छे बनाये हैं। पंजाब में एक विशेषता यह है कि सभी को सन्देश पहुंचाने में अच्छा पुरुषार्थ किया है और पंजाब के जो वी.आई.पीज हैं उन्होंने को भी सम्बन्ध-सम्पर्क में लाया है इसलिए बापदादा पंजाब की सेवा में सेवाधारी बच्चों के ऊपर खुश है। हिम्मत, टीचर्स भी हिम्मत वाली हैं। संख्या भी टीचर्स की बहुत है। अभी पंजाब वारिस क्वालिटी लायेगा। ठीक है ना! एकजैम्पुल आप लाना। पहला नम्बर आप ले लो। कोई सहयोगी को, जिनका आवाज अनेकों को उमंग दिलाये, ऐसे वारिस क्वालिटी तैयार करके बाप के सामने लाना। ला सकते हैं। ऐसी कोई बात नहीं है मुश्किल, सहज है। तो अब क्या करेंगे? वारिस लायेंगे ना! लायेंगे? निमित्त टीचर्स अच्छी हैं, कर सकती हैं। अभी नम्बर ले लेना। पहले पंजाब वारिस लाये, सब देखेंगे। अभी और भी सीजन है आगे तो इस वर्ष की सीज़न में कोई ऐसा लाओ जो पंजाब नम्बरवन हो जाए। कोई बड़ी बात नहीं, सिर्फ



संकल्प करने की बात है। तो अच्छे हैं, स्टूडेंट भी अच्छे हैं। बापदादा ने देखा कि स्टूडेंट भी उमंग-उत्साह वाले हैं। जहाँ उमंग-उत्साह है वहाँ सफलता है ही है। तो बापदादा पंजाब के शेर कहते हैं ना। तो पंजाब के शेर बच्चों पर खुश है। अभी जाके प्लैन बनाना कि नम्बरवन पंजाब वारिस लावे, यह अभी मार्जिन है। अच्छा है। यह चांस जो मिलता है इसमें भी शक्ति भर जाती है। बापदादा को खुशी होती है एक ही ज़ोन आलराउण्ड सेवा के निमित्त बनता है। चांस भी मिलता है और भाग्य भी बनता है। अभी तक जो भी ज़ोन सेवा करते हैं, बापदादा ने देखा बहुत करके सन्तुष्ट करके ही जाते हैं। ठीक है? रिपोर्ट ठीक है ना! अच्छा है। बापदादा खुश है। अच्छा।

**चार विंग्स की मीटिंग है-: (स्पार्क, मीडिया, स्पोर्ट, रिलीजस):-** अच्छा यह चार ही विंग सर्विस के लिए बहुत मददगार हैं भी और आगे भी बन सकते हैं क्योंकि चार ही विंग्स अनेकों को कनेक्शन में ला सकते हैं। चाहे मीडिया है तो मीडिया अभी तो घर-घर में सन्देश पहुंचाने का प्लैन अच्छा बना रहे हैं। बापदादा खुश है कि एक दो सहयोगी बन कर रहे हैं, आगे बढ़ गये हैं, बढ़ भी रहे हैं। तो बापदादा अभी मीडिया द्वारा यही चाहते हैं कि सन्देश यह मिले कि अब समय प्रमाण हर एक आत्मा को अपने बाप से वर्सा लेने की प्रेरणा आवे। सुनते तो हैं लेकिन कितने वारिस निकले, मीडिया द्वारा कितने वारिस अभी तक भी निकले हैं, वह लिस्ट आनी चाहिए। बापदादा ने सुना है प्रभाव अच्छा है और स्टूडेंट बढ़ते भी हैं लेकिन लिस्ट निकालो, हर एक सेक्टर पर, हर एक ज़ोन में कितने मीडिया सेवा से निकले हैं। ऐसे ही जो भी वर्ग हैं वह अभी लिस्ट निकालो, कईयों ने आज लिस्ट दी भी है कनेक्शन में आने वालों की, वी.आई.पी. हैं वह लिस्ट दी भी है लेकिन उन्हीं का संगठन करके उन्हीं को उमंग उत्साह देके आगे बढ़ाओ। कनेक्शन में तो आते हैं लेकिन आगे के लिए ऐसा प्रोग्राम बनाओ जो वह भी समझे तो हमको आगे क्या करना है। सुना, लेकिन आगे बढ़ना है उसका स्पष्टीकरण थोड़ा सुनाओ। और लिस्ट निकालो कितने इस वर्ग के तरफ से एड होते हैं। होते हैं लेकिन पता नहीं पड़ता है। बाकी बापदादा सभी विंग्स को मुबारक दे रहे हैं क्योंकि हर एक विंग यह कोशिश करती है कि सेवा की वृद्धि हो और वृद्धि के प्लैन भी अच्छे बनाती है। चार ही वर्ग अपनी-अपनी सेवा अच्छी कर रहे हैं क्योंकि विंग्स अभी समझते हैं हम जिम्मेवार हैं। कोशिश भी अच्छी करते हैं विंग्स इसीलिए बापदादा खुश है और इसी रीति से जैसे अटेन्शन देकरके विंग्स के कार्य में लगे हुए हो ऐसे और भी आगे बढ़ते रहो, मुबारक बापदादा देते हैं। बढ़ रहे हैं बढ़ते रहो। चार ही विंग्स के लिए बापदादा कह रहे हैं। कोई भी विंग कमजोर नहीं है अपने हिसाब से आगे ही बढ़ रही है। बाकी बापदादा ने जो काम दिया है वह तो ध्यान पर होगा ही। कोई ऐसे समझदार वी.आई.पी. हर विंग से आते हैं उन्हें तैयार करो। ऐसे समझदार हिम्मत वाले का एक ग्रुप बनाओ जो वह भिन्न-भिन्न वर्ग वाले ग्रुप मिल करके एक-एक बात को स्पष्ट करे। यह काम जरूर करो। यह काम आगे वाले कर सकते हैं, हिम्मत दिला सकते हैं। अभी प्रैक्टिकल में आवाज निकले कि ब्रह्माकुमारियां क्या चाहती हैं। इस 75 वर्ष की सर्विस ने सभी को ब्रह्माकुमारीज़ का महत्व स्पष्ट किया है। आवश्यक है, कर सकती हैं, यहाँ तक आये हैं, सब वर्ग का सहयोग है। लेकिन परमात्मा आया है, ब्रह्माकुमारियों तक पहुंचे हैं। परमात्मा आ गया अभी यह समझ में आता भी है जिस समय सुनते हैं उस समय नशा चढ़ता है लेकिन मैदान में आवे वह हिम्मत अभी आ रही है। आयेगी। आनी तो है ही। अभी आने की हिम्मत आई है, कोई भी प्रोग्राम आप देखेंगे डल नहीं जाता है, सक्सेस जाता है, पहले नाम सुनके ही भागते थे ना। अभी समझते हैं कि ब्रह्माकुमारियां कार्य अच्छा कर रही हैं और विधिपूर्वक करते हैं। इतना अटेन्शन गया है। बापदादा चार ही विंग के नाम भी देखे, जिन्होंने दिये हैं, कनेक्शन में तो अच्छे हैं लेकिन उन्हीं को थोड़ा सामने लाओ। उन्हीं का प्रोग्राम करो। प्लैन दो उन्हीं को क्या कर सकते हैं हम। धरनी तैयार हुई है अभी फल निकलना है इसलिए बापदादा खुश हैं। मेहनत करते हो उस पर खुश हैं। तो चार ही विंग्स को मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा पुरुषार्थ कर रहे हो। अच्छा।

**डबल विदेशी सभी मुख्य भाई बहिनें आये हैं:-** डबल विदेशियों को टाइटल दिया है मधुबन का श्रृंगार हैं। मधुबन में रौनक कर देते हैं और फर्क भी अच्छा लाया है। बापदादा पुरुषार्थ और परिवर्तन दोनों ही देख करके

खुश है। पहले व्हाई व्हाई करते थे, अभी वाह! वाह! करते हैं। चेंज अच्छी लाई है। अभी कोई बात में मुश्किल नहीं लगता। कोई भी बात, नियम, बापदादा का जो मुरली में डायरेक्शन जाता है वह करने में एवररेडी हैं और सहयोग भी अच्छा है। स्नेही है लेकिन सहयोगी भी अच्छे हैं। बापदादा रिकार्ड देखते हैं तो गुप्त सहयोगी भी अच्छे-अच्छे निकले हैं। तो दिल के भी बड़े हैं। छोटी दिल वाले नहीं हैं। तो बापदादा खुश है, सेवा भी चारों ओर की अच्छी चल रही है। बापदादा को दो चीज़ चाहिए, एक सेवा की वृद्धि हो और दूसरा निर्विघ्न हो। तो देखा इन दोनों बातों में अभी काफी फर्क आ गया है। और यह तो बापदादा को बहुत अच्छा लगता है कि मधुबन में सब निमित्त बने हुए इकट्ठे हो जाते हैं। एक तो मधुबन का श्रृंगार बन जाते हैं दूसरा जो परिवर्तन किया है वह कहाँ न कहाँ से आते हैं तो पता भी पड़ता है, अनुभव सुनते भी हैं उससे भी प्रभाव पड़ता है कि जब विदेशी कर सकते हैं तो हम क्यों नहीं कर सकते हैं। उमंग आता है। अभी जो बापदादा चाहते हैं ज्वालामुखी योग हो, इसमें विदेशी नम्बरवन लो क्योंकि विदेशियों के संस्कार हैं जो लक्ष्य रखते हैं ना वह पूरा करते हैं। दो बातों में नम्बर लो - एक व्यर्थ समाप्ति और दूसरा सर्विस में निर्विघ्न। प्यार तो सारे परिवार का भी है। सिर्फ बापदादा का नहीं है लेकिन सारे परिवार का भी डबल विदेशियों से प्यार है। अभी दोनों बातों में विदेश नम्बरवन जाके दिखाये जायेंगे। कोई बड़ी बात नहीं है। बापदादा चक्र भी लगाते हैं विदेश में। अमृतवेले भी चक्र लगाते हैं। इसमें अभी अनुभव स्वरूप बनके बैठना, इसमें और अटेन्शन क्योंकि अनुभव की अथॉरिटी बहुत बड़ी है। लक्ष्य अच्छा रखके बैठते हैं लेकिन उसका प्रभाव सुबह की ताकत का कर्मयोग में भी पड़े, सेन्टर के वायुमण्डल में भी पड़े, यह थोड़ा एडीशन चाहिए। बाकी बापदादा खुश है। हिम्मत नहीं छोड़ते हैं, हिम्मत रखते हैं और एक दो को भी हिम्मत देके चला रहे हैं और बाप भी मदद करते हैं। तो विदेश वाले नहीं लेकिन अपना जो देश है परमधाम, उसके अच्छे अनुभव करके बस समय को समीप करना है, इसमें पान का बीड़ा उठाओ। पहले हम करके दिखायेंगे। निमित्त बनके दिखायेंगे। अच्छा है। बापदादा खुश तो है, तो नहीं खुश है।

टीचर्स को देख करके खुश हो रहे हैं। हिम्मत रखके, हिम्मत रखाके आगे बढ़ाते हैं। और जो सभी विशेष टीचर्स इकट्ठी होती हैं यह दृश्य बापदादा को बहुत अच्छा लगता है। सभी बातें स्पष्ट हो जाती हैं। उमंग-उत्साह भरके भी जाते हो और आपको देख करके यहाँ उमंग उत्साह आता है वह भी करते हैं। अच्छा है, एक-एक रत्न को बापदादा विशेष दिल का प्यार और साथ में प्यार के साथ में मन के उमंग-उत्साह की लहर भी दे रहे हैं। अच्छा।

सभी ने अपने लिए यादप्यार लिया कि सिर्फ वर्ग वाले या डबल विदेशियों ने लिया। सबको बापदादा देखता है, नज़र दौड़ाता है तो नज़र से यादप्यार देते हैं। अच्छा।

आज पहली बार आने वाले उठो। पहले बारी आये हो तो कमाल करो। क्या कमाल करो? पहले नम्बर का पुरुषार्थ करो। लास्ट से फास्ट और फर्स्ट होके दिखाओ। हो सकता है, कोई रत्न ऐसे भी निकलने हैं तो आप ही दिखाओ। बापदादा की मदद सभी को है। तीव्र पुरुषार्थ, आने से ही साधारण पुरुषार्थ नहीं, तीव्र पुरुषार्थ करो। करना ही है, बनना ही है। आगे जाना ही है। यह दृढ़ संकल्प रखो और ऐसे कोई एकजैम्पुल निकलने भी हैं। बापदादा को खुशी है कि समय से पहले तो आ गये। वर्से के अधिकारी तो बन गये। अच्छा। बापदादा खुश है, आये, भले आये, आपका सीज़न था लेकिन अभी आगे से आगे जाके दिखाओ। हम पीछे आये हैं यह नहीं सोचो, आगे जा सकते हो। बापदादा की, ड्रामा की मदद मिलेगी। अच्छा है। देखो, कितने आते हैं। आधा क्लास तो पहले बारी का आता है। बापदादा को खुशी है कि बाप को पहचान तो लिया। वर्से के अधिकारी बन तो गये। अच्छा। सभी को बापदादा और सारे परिवार की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

**मोहिनी बहन से:-** संगठन है ना उसमें थोड़ा उमंग आ जाता है। उमंग आने से थोड़ा जबरदस्ती भी कर लेती हो, वह थोड़ा नहीं करो। सम्भालो अपने को। बाकी मदद है, ऐसी कोई बात नहीं है। ठीक हो जायेंगी। अपनी तबियत को देख करके कदम उठाओ। निश्चित रहो।

**दादी जानकी से:-** बहुत अच्छा सभी को रिफ्रेश कर रही हो। करना ही है। (कराने वाला करा रहा है) वह तो है ही लेकिन आप कर रही हो, यह करना ही है। ठीक है। अच्छा पार्ट बजा रही है। (हंसा बहन से) यह भी अच्छा पार्ट बजा रही है, सभी खुश हैं।

**परदादी से:-** आप भी एक एकजैम्पुल हो। आपको देख करके सबको ब्रह्मा बाप याद आ जाता है। ठीक है। तकलीफ तो नहीं है। ऐसे ही चलते चलो। ठीक है, ठीक रहेंगी।

**रमेश भाई से:-** अच्छा है लेकिन साथ में तबियत का भी ठीक रखो। टू मच में नहीं जाओ क्योंकि आगे बहुत काम करना है। सिर्फ स्टूडियो का काम नहीं है, और भी बहुत काम करने हैं इसीलिए तबियत का भी ध्यान रखो। (सोलार का काम चल रहा है) सोलार के लिए जैसे आप अखबार के लिए लेते हो, ऐसे इसके लिए नहीं ले सकते? जो बड़ी-बड़ी फर्म है, जैसे वह एडवरटाइज़ का लेते हो वैसे यह भी कई ऐसे कनेक्शन वाले हैं जिन्हें को पता ही नहीं है, उन्हीं के पास जाके ले सकते हो क्योंकि यह सेवा है कोई खाने-पीने का तो काम नहीं है। कोई अपने खाने के लिए अपने रहने के लिए नहीं लेते, यह सेवा भाव है। तो यह करके देखो, जो परिचित हों।

**निर्वैर भाई ने सुनाया कि किचन भी तैयार हो रहा है-** हो जायेगा।

**तीनों भाईयों से:-** जिम्मेवारी समझके आपस में राय करके अगर कोई भी राय पर थोड़ा सा फर्क भी होता है तो एक-दो को स्पष्ट करके, मिलके एक राय करके इन्हीं के (दादियों के) आगे रखो। यह जिम्मेवारी समझो।

**मीटिंग में सेवा के लिए क्या लक्ष्य रखें:-** सेवा के लिए अभी फर्क यह करो कि दूसरे आपको निमन्त्रण दें। ऐसे कई लोग हैं जिनकी आप लोगों ने सेवा की है और वह कर सकते हैं। अभी यह समझो कि वह स्टेज देवे और आप जाके सेवा करो। अपनी स्टेज पर तो बहुत किया और रिजल्ट भी अच्छी है। अभी थोड़ा चेंज करके देखो।

(क्या घर घर में सन्देश पहुंचाने का साधन मीडिया ही है) वह तो मीडिया ही है। थोड़ा कायदेमुजीब हो, इतना जो टी. वी. का लिया है, उसमें इतना कर रहे हैं, उसका रिजल्ट क्या! (आधे नये भाई बहिनें टी.वी से ही आते हैं) अच्छा है वह सबको मालूम होना चाहिए। नहीं तो समझते हैं पता नहीं क्या हो रहा है। उसका समाचार थोड़ा होना चाहिए। वह रिजल्ट सबको पता पड़े। तो उमंग आयेगा ना। पता नहीं पड़ता है, चल रहे हैं, चल रहे हैं। (बृजमोहन भाई ने पूछा गीता के भगवान के लिए)– वह तो आपको काम दिया ना। पहले चार पांच जो विशेष हों, जिनका थोड़ा सा नाम हो, चार पांच को पहले इकट्ठा करो, चार पांच निकल सकते हैं, उन्हीं को तैयार करके उन्हीं से मीटिंग करो कि आप क्या समझते हैं। हम जो चाहते हैं वह कैसे हो सकता है, उनको ही निमित्त बनाओ। चार पांच तो हैं अभी भी। तबियत का ध्यान रखो।

**विदेश की बड़ी बहिनों से:-** अच्छा है एक दो से उत्साह मिलता है, थोड़ा सा उन्हीं के प्रति ध्यान देते हैं तो ठीक हो जाता है। चक्र लगाओ या लगवाओ। चक्र लगवाते रहो तो उन्हीं को उमंग आयेगा और और आगे बढ़ेंगे। बाकी निर्विघ्न हैं यह समाचार अच्छा है। अभी इकट्ठे भी होंगे, इकट्ठे होंगे तो ऐसी-ऐसी जो खुशखबरी है ना वह सभी को सुनाओ। तो उन्हीं को यह सुनाओ जैसे कहाँ के 8 सेन्टर हैं, वह सब अच्छे चल रहे हैं तो यह भी अच्छा है ना। हिम्मत है ना। यह समाचार सबको सुनाओ।

**गायत्री ने फूल भेजे हैं, सारे परिवार ने याद भेजी है:-** दो चार परिवार बहुत लकी हैं। जैसे वह (वजीहा बहन) बीमार है, लेकिन लास्ट आई है फास्ट जा रही है। ऐसे अच्छे निकले हैं। अच्छा है, आप सभी देखो इन्डियन ही हैं। सब इन्डिया के हैं। हेड तो आप ही हो ना।

## “घर का गेट खोलने के लिए बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा देह-अभिमान के मैं का त्याग करो, बर्थ डे पर दृढ़ता द्वारा कहना और करना एक कर सफलतामूर्त बनो”

आज बापदादा चारों ओर के बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। चारों ओर से यही दिल का आवाज आ रहा है वाह बाबा वाह! और बाप की दिल से यही आवाज है वाह बच्चे वाह! आज सभी उमंग-उत्साह से दिव्य जन्म की खुशी मना रहे हैं। आज खुशी मना भी रहे हैं और साथ में बाप भी बच्चों की खुशी मना रहे हैं। आज का ही यह विचित्र जयन्ती का दिन है जो बाप और बच्चों का इकट्ठा दिव्य जन्म का दिन है। तो आप सभी भी मुबारक दे भी रहे हो और ले भी रहे हो क्योंकि बाप ने जन्म लिया ही है यज्ञ रचने के लिए। तो यज्ञ में ब्राह्मण बच्चे ही चाहिए। तो यह एक ही जयन्ती है जो बाप और बच्चों की इकट्ठी जयन्ती है इसीलिए इस शिव जयन्ती को हीरे तुल्य जयन्ती कहा जाता है। तो बाप देख रहे हैं कि एक-एक बच्चा कितने स्नेह से मुबारक देने आये हैं और बाप भी मुबारक देने आये हैं। यह जयन्ती अति स्नेह की जयन्ती है। स्नेही बच्चे, स्नेही बाप और स्नेही जयन्ती है।

बापदादा के पास चारों ओर के देश विदेश सब बच्चों का स्नेह पहुंच रहा है। बाप एक-एक स्नेही बच्चे को पदमगुणा स्नेह भरी मुबारक दे रहे हैं। यह स्नेह हर बच्चे को सहज कर्मयोगी बनाने वाला है। यह स्नेह सदा सहज बनाने वाला है। शक्तिशाली बनाने वाला है। बापदादा का अकेला जन्मदिन नहीं है क्योंकि बाप सदा ही बच्चों के साथ रहने वाले हैं। साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, साथ राज्य करेंगे। आप सबका भी यही वायदा है ना! साथ रहना है, साथ उड़ना है और साथ राज्य करना है!

बापदादा को आज आपके भक्त भी विशेष याद आ रहे हैं क्योंकि आपके भक्तों ने जो आपने किया है वह कॉपी बहुत अच्छी की है क्योंकि द्वापर में परमधाम से पहले-पहले आये हैं तो पहला जन्म सदा सतोप्रधान होता है इसलिए उन्होंने कॉपी बहुत अच्छी की है। तो आज के दिन बच्चों के साथ आपके भक्त भी याद आ रहे हैं। वतन में तो आज अमृतवेले से बहुत बच्चों की रौनक थी। हर बच्चा समझता था कि मैं बापदादा को अपनी मुबारक दूं और बापदादा ने भी हर बच्चे की मुबारक अति स्नेह से स्वीकार की। तो वतन में आज यह मेला लगा हुआ था। एक तरफ आप बच्चे थे, दूसरी तरफ एडवांस में गये हुए आपके साथी साथ में आये हुए थे। बापदादा ने देखा कि आपकी दादियां और अनन्य भाई की लिस्ट बहुत बड़ी थी। एक-एक दादियाँ बापदादा को भी मुबारक दे रहे थे लेकिन साथ में आप सब भाग्यवान बच्चों को भी मुबारक दे रहे थे। तो वतन में आज मुबारकों का मेला था। सभी एडवांस पार्टी के विशेष दादियाँ और भाई आप विशेष निमित्त साथी रहने वाली आत्माओं को याद करते हुए बहुत दिल से मुबारक दे रहे थे। तो आप सबको बापदादा सबकी तरफ से भी मुबारकें दे रहे हैं। स्वीकार किया? सभी का विशेष बहिनें और भाईयों का एक ही आवाज था कि अभी घर का गेट कब खोलेंगे! तो विशेष दीदी दादी कह रही थी कि हमारी सखियों को, भाईयों को हमारे तरफ से यही कहना कि घर चलने के लिए कौन सी तारीख फिक्स की है? सब इकट्ठे चलेंगे ना! अलग-अलग तो नहीं जायेंगे? दरवाजा खोलने के लिए सभी इकट्ठे हाज़िर हो जायेंगे। तो वह डेट मांग रहे थे। बापदादा मुस्कराये क्योंकि बाप भी चाहते हैं कि अभी गेट को खोलने के लिए **सभी बच्चों को बेहद की वैराग्य वृत्ति चाहिए। यही चाबी है गेट खोलने की।** बापदादा तो सदा कहते रहते हैं कि बेहद के वैरागी बन वेस्ट संकल्प और वेस्ट समय दोनों को मिलकर जल्दी से जल्दी त्याग करना अर्थात् बेहद के वैरागी बनना क्योंकि बापदादा ने देखा है कि सबसे बड़ा विघ्न देह अभिमान है। इस देह अभिमान को त्यागना चलते-फिरते

देही अभिमानी बनना, यही बेहद का वैराग्य है।

तो सभी कहते तो हैं मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा। जब दिल से कहते हैं मेरा तो यह देह अभिमान जो 'मैं' के रूप में आता है, बाप सदा कहते हैं कि यह 'मैं' का भान जो आ जाता है, मैं जो करता हूँ, मैं जो कहता हूँ, वही ठीक है। एक मैं है कामन, मैं आत्मा हूँ और यह मेरा शरीर है। दूसरा महीन मैं, जो सुनाया मैंने यह किया, मैं यह कर सकता हूँ, मैं ही ठीक हूँ, यह महीन मैं इसको खत्म करना है। यह देह अभिमान इस रूप में आता है। तो आज बापदादा ने यह महीन मैं जो कभी बाप की विशेषता को भी मेरा मानकर 'मैं' का भान रखते हैं, इसको समाप्त करना। देखो, यादगार जो बनाते हैं उसमें भी जब बलि चढ़ाते हैं तो खुद नहीं बलि चढ़ते हैं लेकिन किसको बलि चढ़ाते हैं? बकरे को। बकरे को क्यों दूँढा? क्योंकि बकरा मे मे ही करता है। भक्तों ने काँपी तो बहुत अच्छी की है। तो आज के दिन यह देह अभिमान का मैं क्या पुरुषार्थ करके समाप्त कर सकते हो? बर्थ डे पर आये हो बाप के, तो कोई सौगात तो देंगे ना! तो बाप को और सौगात नहीं चाहिए, यह महीन मैंपन, यही बाप कहते हैं आज के जन्मदिन पर बाप को सौगात दे दो। दे सकते हो? देना है? है हिम्मत? हिम्मत है? हाथ उठाओ। हाथ उठाके तो खुश कर दिया। तो हाथ उठाया, तो सौगात दे दी ना! दी हुई सौगात कोई वापस लेता है क्या? कई बच्चे कहते हैं बाबा हम चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाती है। कारण क्या? कारण अगर पूछे तो जवाब बहुत अच्छा देते हैं। कहते हैं जानते भी हैं, मानते भी हैं लेकिन क्या करें वापस आ जाता है। सोचो! दी हुई चीज़ अगर आपके पास आ जाए तो क्या दी हुई चीज़ अपने पास रखेंगे? तो अगर आपने दिल से दी, अगर वापस आ भी जाती, तो रखेंगे अपने पास? कारण क्या है? बाप से प्यार है ना तो प्यार के कारण जो बाप कहते हैं वह करने चाहते हैं, यह बाप के पास भी रिजल्ट आती है लेकिन क्या है, दृढ़ता कम है, दृढ़ता को यूज करो। संकल्प करते हो लेकिन एक है संकल्प करना, दूसरा है दृढ़ संकल्प करना। तो बार-बार किये हुए संकल्प में दृढ़ता लाना, यह अटेन्शन कम है। दृढ़ता सफलता की चाबी है। तो आज क्या करेंगे? संकल्प करेंगे या दृढ़ संकल्प करेंगे? अगर आपका दृढ़ संकल्प है तो उसकी निशानी है दृढ़ता सफलता की चाबी है। तो चाबी लगाने में कोई कमी रह जाती है इसीलिए सम्पूर्ण सफलता नहीं मिलती है।

तो आज बापदादा बच्चों का भी बर्थ डे है, बाप का भी बर्थ डे है। तो यह तो विशेष दिन है ना! सारे कल्प में बाप बच्चों का एक समय जन्म यह इसी बर्थ डे की विशेषता है। तो आज के दिन बाप यही चाहते हैं कि हर बच्चा आज अपने दिल में दृढ़ता को लाके यह दृढ़ संकल्प करे कि हमें व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय, क्योंकि अगर सारे दिन को अटेन्शन से चेक करो तो बीच-बीच में समय और संकल्प व्यर्थ जाता है। बापदादा तो सबका रजिस्टर देखते हैं ना! उसको बचाना अर्थात् समाप्ति का समय समीप लाना। तैयार हो? कि अभी भी कहेंगे आ जाते हैं क्या करें? व्यर्थ का काम है आना, आपका काम क्या है, बिठाना? तो बिठा देते हो तभी तो उसने भी घर बना दिया है। वह भी समझ गये हैं कि दृढ़ता नहीं है इसलिए आज के स्नेह के दिन सबके दिल में अभी क्या है? अमृतवेले से लेके आज दिल में बार-बार क्या आ रहा है? मेरा बाबा, मेरा बाबा, मेरा बाबा। बाप के दिल में भी है मेरे बच्चे, मेरे बच्चे, मेरे बच्चे..। तो जैसे मैजारिटी बाप की याद में रहे हैं। दिन का प्रभाव है, बापदादा ने नोट किया। स्नेह के दिन होने के कारण बार-बार सभी को मेरा बाबा, मेरा बाबा काफी समय याद रहा है। ऐसे है? इसमें हाथ उठाओ। आज के दिन की बात है। मेरा बाबा याद रहा? और कुछ याद रहा? नहीं। ऐसे ऐसे हाथ कर रहे हैं, बहुत अच्छा। तो अगर रोज़ बार-बार चेक करो संगम का हर दिन बाप के स्नेह का दिन है। जैसे आज विशेष दिन होने के कारण ज्यादा याद रहा ना! ऐसे सदा अमृतवेले यह स्मृति में रखो कि यह संगम का एक-एक दिन कितना महान है। एक छोटे से जन्म

में 21 जन्म की प्राप्ति गैरन्ती है। तो एक-एक दिन का कितना महत्व हुआ! कहाँ 21 जन्म और कहाँ यह छोटा सा एक जन्म।

तो बापदादा आज आप बच्चों से बर्थ डे की यही सौगात चाहते हैं। देंगे सौगात? देंगे? हाथ उठाओ। दृढ़ निश्चय का हाथ। देखेंगे, करेंगे नहीं। करना ही है। कुछ भी हो जाए त्याग तो त्याग। यह त्याग नहीं लेकिन भाग्य है। तो आज का दिन अगर सही हाथ उठाया तो महत्व का दिन है ना! अभी से आपके चेहरे पर व्यर्थ की समाप्ति और सदा स्मृति स्वरूप की झलक चेहरे और चलन में आनी चाहिए। यह माया के जो शब्द हैं ना! क्या, क्यों, कब, कैसे... यह समाप्त हो जाएं तब चेहरा और चलन सेवा करेंगे। अभी ज्यादा प्रभाव भाषणों का है। बापदादा खुश है भाषण बहुत अच्छे कर रहे हैं लेकिन दिनप्रतिदिन अभी जैसे यह भाषणों द्वारा, वाणी द्वारा सेवा का उमंग अच्छा रखा और सफलता भी पाई। ऐसे ही अभी समय प्रमाण आपकी ज्यादा सेवा चेहरे और चलन से होगी। उसका अभ्यास, जैसे भाषणों का अभ्यास करते-करते होशियार हो गये हो ना! ऐसे अभी चेहरे और चलन से किसी को खुशी का वरदान दो, यह अभ्यास करो क्योंकि समय कम मिलेगा इसलिए समय और संकल्प का महत्व रखते हुए आगे बढ़ते जाओ। होना सब अचानक है इसलिए बर्थ डे तो याद रहता है ना! बर्थ डे आना है, आना है कितना समय याद आया? बापदादा आना है, आना है, मिलना है यह कितने समय से याद रखा? अब यह संकल्प करो, दृढ़ता से व्यर्थ समय और संकल्प को समाप्त करना है। मेरा बाबा, मेरा बाबा दिल में समाते, कहना अलग चीज़ है लेकिन दिल में समाना, दिल की बात कभी भूलती नहीं है। मुख की बात भूल सकती है लेकिन दिल की बात अच्छी या व्यर्थ दोनों नहीं भूलती है। तो आज बापदादा को सौगात तो दी ना बाप को। दो-दो हाथ उठाओ। अरे वाह! यह फोटो निकालो। बापदादा सिर्फ हाथ को नहीं देखते, बापदादा आपके दिल को देख रहे हैं।

तो आज के दिन की सौगात अपने को भी दी और बाप को भी दी। अगर आपका व्यर्थ समय और संकल्प बच गया तो आपका दिन कैसे बीतेगा? सदा खुशानसीब और खुशनुमा बन जायेंगे। तो अभी संकल्प को अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाने के बाद यह रोज़ स्मृति में लाना और सारे दिन में बीच-बीच में चेक करना। बापदादा टाइम फिक्स नहीं करते लेकिन आप अपना टाइम फिक्स करो। बीच-बीच में चेक करना तो जो बापदादा के आगे बर्थ डे पर वायदा किया वह वायदा निभा रहे हैं? यह अपने आपसे चेक करना। चाहते तो सभी हैं। बापदादा आज शकलें देख रहे हैं कि चाहते हैं हाँ करेंगे, करेंगे, करेंगे लेकिन यह वेस्ट आ जाता है ना तो बाप से किया हुआ वायदा भी भुला देता है। तो वेस्ट खत्म। एक मिनट अभी भी एक मिनट पावरफुल आत्मा बन संकल्प करो वेस्ट को खत्म करना ही है। अच्छा।

बापदादा एक भी बच्चे को अपने समान बनाने के बिना रहने नहीं चाहता। प्यार है ना! देखो प्यार की निशानी आज का दिन है। बाप और बच्चे का सारे कल्प में ऐसा दिन नहीं होता जो बाप और बच्चे का जन्म ही एक दिन हो। बाप का एक-एक बच्चे से दिल का प्यार है कि मेरा बच्चा, परमात्मा का बच्चा, जो संकल्प करो वह संकल्प सफल हो। एक-एक संकल्प में शक्ति हो, कहना और करना एक हो। कहा अर्थात् हुआ। शुद्ध संकल्प हो। तो व्यर्थ स्वतः ही खत्म हो जायेगा क्योंकि एडवांस पार्टी डेट चाहती है। तो आपकी बड़ी-बड़ी दादियां हैं, बड़े-बड़े भाई हैं, प्यार तो है ना उन्हीं से। कितना याद करते हैं? दादी को, दीदी को, चन्द्रमणि को। सभी के नाम लेते जाओ। सभी को याद करते हैं। तो वह जो चाहती हैं वह करके बताओ ना। तो आज का संकल्प क्या रहा? कहना और करना एक हो। ठीक है! तो आज चारों ओर के बच्चों को बापदादा बर्थ डे की सौगात यही दे रहे हैं “कहना और करना” एक करो। दृढ़ता की सौगात आज के दिन की बापदादा हर बच्चे को दे रहे हैं। शुभ कार्य दृढ़ता से सफल करो।

बाकी जो भी आज पहले बारी आये हैं, वह उठो। हाथ हिलाओ। बापदादा आने वाले बच्चों को आ गये, जान लिया मेरा बाबा, इसकी बहुत-बहुत मुबारक दे रहे हैं। बापदादा को खुशी है फिर भी हलचल जो होनी है उसके पहले पहुंच गये हो, इसकी मुबारक हो। अभी आने वाला हर बच्चा यह संकल्प करो दृढ़, साधारण संकल्प नहीं, दृढ़ संकल्प करो कि तीव्र पुरुषार्थी बनना ही है। तीव्र, साधारण नहीं। तो आने वाले अपने राज्य में आ जायेंगे इसलिए साधारण संकल्प का समय पूरा हुआ। अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है, चांस है, फिर भी चांस लेने वाले चांसलर तो बन गये। तो बापदादा हर बच्चे को देख खुश है और हर बच्चे को कह रहे हैं कि तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो साथ जायेंगे, साथ रहेंगे। तो मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

**सेवा का टर्न यू.पी. बनारस और पश्चिम नेपाल:-** यू.पी. वाले आदि स्थापना से भाग्यवान हैं क्योंकि ब्रह्मा बाप और जगदम्बा जितना समय बच्चों से मिलने गये हैं, उतना औरों के पास सिवाए बाम्बे और दिल्ली के, नहीं गये हैं। तो लकी हैं जो ब्रह्मा बाप और जगदम्बा का पांव पड़ते बच्चों को स्नेह मिला है। डायरेक्ट ब्रह्मा बाप और जगदम्बा की पालना मिली है इसीलिए यू.पी. भाग्यवान है और बापदादा ने देखा कि सेवा की एक विशेषता है कि सेवाकेन्द्र भी अच्छे खोले हैं। कई कुमारियों को टीचर बनने का भाग्य मिला है इसलिए अनेक टीचर्स सेवा में लगी हुई हैं और साथ में आवाज भी फैलाया है। बाकी बापदादा जो अभी चाहता है वह तो जानते हो कि अभी बापदादा हर ज़ोन को यही कहता है कि अभी वारिस क्वालिटी बाप के सामने लाओ। अभी बापदादा सभी ज़ोन को कहते हैं हर एक ज़ोन में या हर एक सेन्टर में वारिस क्वालिटी कितने हैं वह बापदादा के पास हर ज़ोन, डबल विदेशी भी हर स्थान के वारिस बच्चों की लिस्ट देवे क्योंकि समय समीप आ रहा है इसलिए अभी सेवा की गति फास्ट करो। रेग्युलर स्टूडेंट तो बहुत हैं हर ज़ोन में लेकिन वारिस क्वालिटी अर्थात् तन-मन-धन से, सम्बन्ध-सम्पर्क से हर कार्य में सहयोगी हो। सिर्फ अपने सेन्टर के सहयोगी नहीं, लेकिन यज्ञ स्नेही वारिस हो। वारिस माना सेन्टर की सेवा में बहुत अच्छा है नहीं, वारिस का अर्थ ही है स्नेह सहयोग और सेवाधारी। ऐसे हर एक ज़ोन लिस्ट भेजना। आप लोग मधुबन वाले लिस्ट देखना, मंगाना। फिर बापदादा सुनायेंगे रिजल्ट वारिस किसको कहा जाता और वारिस को क्या-क्या करना होता है! बाकी यू.पी. वाले जो अपना टर्न बजाने आये हैं, तो इस टर्न का फायदा काफी उठाया है। हर ज़ोन उठाता है यू.पी. वालों ने भी अच्छा चांस लिया है। अनेक आत्माओं को चांस दिलाया है इसकी मुबारक हो, मुबारक हो।

बापदादा हर एक बच्चे को, जो भी उठे हो हर बच्चे को बर्थ डे की मुबारक दे रहे हैं और साथ में भविष्य में तीव्र पुरुषार्थी भव का वरदान दे रहे हैं। अच्छा।

**95 देशों से 1300 डबल विदेशी आये हैं:-** बहुत अच्छा मधुबन का श्रंगार मधुबन में पहुंच गया है। डबल विदेशियों का मधुबन से प्यार कितना है और मधुबन वालों का भी डबल फॉरेनर्स से प्यार है। डबल फॉरेनर्स मधुबन का श्रंगार हैं। सभी ने अच्छी रीति से जो भी काम्प्लेक्स प्रोग्राम करना था, वह आराम से किया। जगह थोड़ी कम मिली है, यह भी हो जायेगा आगे। बाकी डबल फॉरेनर्स को बापदादा यही वरदान दे रहे हैं कि जगत अम्बा के दो शब्द बाप का कहना और बच्चे का करना, यह सदा जगत अम्बा की सौगात याद रखना। बापदादा जानता है मुरली से प्यार सबका है, बाकी परिवार से भी प्यार है। बाप से तो है ही, अभी अपने में हर धारणा, हर सेवा में सफलतामूर्त एक-एक में यह दोनों ही विशेषता हो, जो बापदादा सेवा में आप लोगों का दृष्टान्त देकर औरों को भी उमंग में लाये। ऐसा पुरुषार्थ कर एकजैम्पुल बनो। करने में दृढ़ संकल्प से सफलता के अधिकारी हो इसलिए एकजैम्पुल बनो। तीव्र पुरुषार्थी बनने का एकजैम्पुल बनो, साधारण तो सभी हैं लेकिन आप तीव्र पुरुषार्थ का सैम्पुल बनो। उम्मीदवार हैं।

बापदादा ने देखा डबल विदेशियों में निजी संस्कार होता है कि जो सोचा वह करना ही है। तो अभी तीव्र पुरुषार्थी का ऐसे सैम्पुल बनो, जो बापदादा आपका दृष्टान्त देकरके औरों को भी उमंग-उल्हास में लाये। उम्मीदवार हो। जो संकल्प करो वह कर सकते हो इसलिए बापदादा आज के दिन की पदम पदम पदम मुबारक दे रहे हैं।

बापदादा सुनते हैं क्या-क्या करते हो? खुश होते हैं बापदादा और मधुबन के वायुमण्डल में पहुंच जाते हो इसकी भी मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

(देश सम्भालने वाले, सेन्टर सम्भालने वालों की मीटिंग हुई और 150 पुराने 25 साल से समर्पित टीचर्स की सेरीमनी थी) सब डिपार्टमेंट ने जो कुछ फाइनल किया है मिल करके और दादियों के सहयोग से उसके लिए खुश है कि फैसला यथार्थ किया है और आगे बढ़ते चलेंगे। ओम् शान्ति। आपकी दादी ओम् शान्ति बहुत कराती है ना। अच्छा।

बापदादा हर बच्चे को देख चाहे पीछे बैठे हैं चाहे कोने में बैठे हैं, लेकिन एक-एक बच्चे को सदा तीव्र पुरुषार्थी बन औरों को भी तीव्र पुरुषार्थी अपने संग से भी बना सकते हैं। किसी भी आत्मा को कोई सहयोग चाहिए वह दिल से सहयोग दे तीव्र पुरुषार्थी बनाते चलो। हर बच्चा तीव्र पुरुषार्थी हो। नम्बरवार नहीं, तीव्र पुरुषार्थी। कम से कम अपने सम्पर्क में रहने वाले, आने वाले हर स्थान तीव्र पुरुषार्थी स्थान हो। यही संकल्प हर एक रखे और फिर बापदादा इसकी रिजल्ट देखेंगे। जहाँ सेन्टर वाले सब तीव्र पुरुषार्थी स्वरूप में है उनको बापदादा कोई-कोई नहीं, सभी साथी हो उनको एक गिफ्ट देगे। हो सकता है ना! कि मुश्किल है? नहीं। कम से कम अपने स्थान को तो बना सकते हैं। अपने सेवाकेन्द्र को तो बना सकते हैं। ऐसा एकजैम्पुल अभी बापदादा देखने चाहते हैं। जैसे मोहजीत की कहानी है ना, जिसे भी मिले मोहजीत। तो सुनने में अच्छी लगती है ना। ऐसे जिसे भी देखें तीव्र पुरुषार्थी ग्रुप। लक्ष्य रखो, लक्ष्य से लक्षण आ ही जायेगे। हर एक सेन्टर सन्तुष्टमणियों का सेन्टर हो। अच्छा।

बापदादा दिल से चाहते हैं एक बच्चा भी पीछे नहीं रह जाए। साथ में चले। पीछे-पीछे आने वाले अच्छे नहीं लगते हैं। साथ हो, हाथ हो, चलना है ना घर में। रिटर्न जरनी है। उसके लिए जैसे ब्रह्मा बाप फरिश्ता है, ऐसे फालो फादर। साकार में होते फरिश्ता, जिसको भी देखो फरिश्ता ही फरिश्ता, तब गेट खुल जायेगा। अच्छा। सभी बच्चों को सदा खुशानसीब, खुशानुमा स्वरूप की यादप्यार।

**दादियों से:-** (मैं बाबा के साथ रहूंगी, सतयुग में नहीं जाऊंगी) ब्रह्मा बाप साथ में होगा ना। आपको प्रालब्ध जो पुरुषार्थ की है, उसका अनुभव करना है। तो शिव बाप ने ही यह टाइम रखा है।

**आज कुवेत की वजीहा वतन में चली गई:** परमात्मा की प्यारी थी ना तो सर्व की भी प्यारी थी। और सम्बन्धियों का भी लक है जो उन्हों का भी कनेक्शन जोड़ दिया। सफल करने और कराने में नम्बरवन रही है। अच्छा।

आज नीलू बच्ची को भी प्यार कर रहे हैं, क्यों? सम्भाल बहुत अच्छी कर रही है। है रथ की भी कमाल लेकिन साथ में इसकी भी कमाल है इसलिए आपको सबकी दुआयें मिलेंगी।

(गुल्जार दादी जी के लिए) बापदादा ने जिसको निमित्त बनाया है वह सदा निमित्त बनके कार्य कर रहे हैं, सभी आत्माओं को सुख शान्ति और शक्ति का अनुभव करा रहे हैं। इस आत्मा का भी ड्रामा में पार्ट है, विचित्र पार्ट है और दादी जो है हमेशा इस रथ को कहती थी कि रास्ते चलते फंस गई है। हर एक का पार्ट अपना-अपना अमूल्य है। मुबारक हो, मुबारक हो।

(बृजमोहन भाई आज इस टर्न में नहीं आये हैं, याद भेजी है) बाप की भी यादप्यार देना। उसको पदमगुणा मुबारक देना। (रमेश भाई ने कहा स्टूडियो का सामान आ गया है, कल रिकार्डिंग करेंगे) अच्छा हैं, धीरे-धीरे सब ठीक हो जायेगा। आप बेफिक्र होके करते चलो।



**आज नये भण्डारे का महूर्त किया गया:-** हो जायेगा, फिर भी सुख तो मिलेगा ना। (सभी मजदूर मिस्त्रियों ने भी बहुत मेहनत की है) उन्हों को यादप्यार देना। बापदादा देखते हैं, चक्र लगाते हैं, उनको टोली दिलाना। (ब्रह्मा भोजन बनाने वाले बड़ी मेहनत करते हैं) ब्रह्मा भोजन की वैसे ही महिमा है तो जो ब्रह्मा भोजन बनाने के निमित्त हैं वह तो विशेष आत्मायें हैं। कितना भी कोई भी कार्य है तो हाज़िर हो जाते हैं, इसकी बहुत बहुत मुबारक है, मुबारक है, मुबारक है।

(तीनों भाईयों को जन्म दिन की गिफ्ट) मुबारक यह है कि सदा समय पर एक दो को सहयोग दे करके कारोबार को ऐसे इज़ी चलाओ जो कोई भी मेहनत नहीं करनी पड़े और डिसकस कोई बात में नहीं करनी पड़े, सहज होता जाए। हो रहा है और थोड़ा अटेन्शन। सब मिलकर करते चलो। एक दो के विचार को रिगार्ड देते हुए फाइनल करते चलो क्योंकि विचारों में फर्क तो होता है लेकिन विचारों को मिलाना है, मिलाके सन्तुष्ट करना है और सन्तुष्टता फैलानी है।

**हंसा बहन से:-** जीवन दिया सेवा में, तो सेवा का मेवा नहीं मिला! मुबारक तो है तुमको। बापदादा का मिलना माना मुबारक देना। कहने की आवश्यकता ही नहीं है। आपको मुबारक सूक्ष्म में बहुत मिल रही है क्योंकि रथ को सम्भाल रही हो। यह भी (नीलू बहन) सम्भाल रही है, आप भी सम्भाल रही हो। तो वैल्यु है ना। और मुबारक रोज़ मिलती है। अमृतवेले रोज़ बापदादा मुबारक देते हैं। बहुत अच्छा कर रही हो।

**बापदादा ने 76वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती के उपलक्ष्य में अपना झण्डा फहराया और सबको मुबारक दी**

सभी दिल से विश्व सेवा प्रति झण्डा लहराने वाले बच्चों को बापदादा का बहुत-बहुत-बहुत-बहुत पदम पदम गुणा मुबारक हो, मुबारक हो। आपके तो दिल में शिव बाप बैठा है। दिलाराम है, हर एक के दिल का दिलाराम है और यही दिल के दिलाराम से सदा अमृतवेले मुबारक लेते रहना और चारों ओर मुबारक देते रहना। यह तो लोगों को सेवा के अर्थ जहाँ तहाँ झण्डा लहराते हैं तो उनके दिल में स्मृति आवे मेरा बाप कौन! पहचानते नहीं हैं ना! तो उन्हों को पहचान के लिए झण्डा लहराते हैं बाकी आपके तो दिल में स्वयं बाप बैठा है। इसका यादगार यहाँ आबू में ही दिलवाला मन्दिर है। तो सभी को पदम पदम पदम गुणा मुबारक है, मुबारक है, मुबारक है।

**“अब चारों ओर दुःख अशान्ति बढ़ रही है इसलिए अपने विश्व कल्याणी स्वरूप को प्रत्यक्ष करो, मन्सा सेवा बढ़ाओ, बाप के संग के रंग से डबल होली बनो”**

आज बापदादा हर बच्चे के भाग्य की रेखायें देख रहे हैं। मस्तक में चमकते हुए सितारे की रेखा, नयनों में स्नेह और शक्ति की रेखा, होठों में मुस्कान की रेखा, पांव में हर कदम में पदम की रेखा देख रहे हैं। आप सभी भी अपने भाग्य की रेखायें देख हर्षित होते हो ना! दिल में यही गाते वाह मेरा भाग्य! हर एक का मस्तक उस दिव्य सितारे से चमकता हुआ देख बापदादा भी खुश हो रहे हैं और यही दिल में गीत गाते वाह बच्चे वाह! बच्चों के दिल से क्या गीत सुन रहे हैं? वाह बाबा वाह! तो बच्चे भी वाह! बाप भी वाह! तो यह सारी सभा क्या हो गई? वाह! वाह! वाह! तो अपने भाग्य को देख सदा ऐसे ही हर्षित रहो जैसे अभी सब हर्षित हो रहे हैं। यह भाग्य अब संगमयुग में ही मिलता है। संगमयुग के हर घड़ी की बहुत बड़ी वैल्यु है। संगमयुग की एक घड़ी अविनाशी हो जाती है क्योंकि हर घड़ी का 21 जन्मों के साथ सम्बन्ध है। अब की एक घड़ी का सम्बन्ध 21 जन्मों के साथ है। तो चेक करो एक घड़ी अगर व्यर्थ गई तो एक जन्म की बात नहीं 21 जन्म के सम्बन्ध की बात है इसलिए बापदादा बच्चों को समय प्रति समय अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि संगमयुग की एक घड़ी को भी एक संकल्प को भी व्यर्थ नहीं गवाओ क्योंकि एक जन्म व्यर्थ नहीं गंवाया लेकिन 21 जन्म में व्यर्थ गंवाया। संगमयुग का महत्व हर समय याद रखो।

बापदादा ने व्यर्थ समय और व्यर्थ संकल्प का होमवर्क सभी को दिया था। तो सभी ने होमवर्क किया? जो समझते हैं हमारा अटेन्शन रहा और बहुत करके सफलता भी प्राप्त हुई, लक्ष्य का लक्षण तक परिणाम है, वह हाथ उठाना। अच्छा। पाण्डव उठा रहे हैं? बड़ा हाथ उठाओ। अभी सभी ने काम नहीं किया है। संगमयुग के महत्व को अगर सदा बुद्धि में याद रखो कि अविनाशी बाप द्वारा यह कार्य मिला है। हर घड़ी अविनाशी बनने की है क्योंकि अविनाशी बाप ने यह वरदान दिया है। तो सहज ही हो जायेगा।

बाप ने सुनाया कि हर एक ब्राह्मण बच्चे के कदम में पदम की रेखा है। सोचो कदम में पदम की रेखा तो कितने पदमों के लिए संगमयुग पर गोल्डन चांस है। हर एक को यह अपना भाग्य स्मृति में रखना है। कई बच्चे सोचते हैं कि बापदादा क्या चाहते हैं? बापदादा यही चाहते हैं कि एक-एक बच्चा डबल राजा बन जाये। अभी स्वराज्य अधिकारी और भविष्य में विश्व राज्य अधिकारी। कोई भी बच्चा डबल राजा बनने में कम नहीं हो। तो हर एक बच्चा डबल राज्य अधिकारी हो ना! कांध हिलाओ। तो हर बच्चा डबल राज्य अधिकारी है, कांध हिलाओ। तो बाप को कितनी खुशी होती है।

बापदादा हर बच्चे का रिकार्ड रोज़ देखते हैं। तो क्या देखते हैं? हर एक अपने दिल में तो जान गये होंगे। राज्य अधिकारी बने तो हैं लेकिन अभी जो स्वराज्य अधिकारी हो, स्वराज्य अधिकारी अर्थात् मन-बुद्धि संस्कार को अपने कन्ट्रोल में चलाने वाला। जब चाहे जैसे चाहे वैसे अधिकार में रहे। जैसे यह स्थूल कर्मन्द्रियां हाथ हैं, पांव हैं अपने कन्ट्रोल में रहते हैं ऐसे मन बुद्धि संस्कार जब चाहे जैसे चाहे रूलिंग पावर और कन्ट्रोलिंग पावर हो। अभी देखने में नम्बरवार बहुत हैं। हैं यह भी मेरे। मन मैं नहीं है, मेरा है। संस्कार मेरे हैं। बुद्धि मेरी है। तो कन्ट्रोलिंग पावर रूलिंग पावर नम्बरवार है। बापदादा समय की सूचना भी समय प्रति समय देते रहे हैं, उस समय के अनुसार आप लोगों का एक-एक का स्वमान है विश्व कल्याणकारी। अब समय प्रमाण हर एक बच्चे को विश्व कल्याणी स्वरूप को प्रत्यक्ष करने का समय है। चारों ओर दुःख अशान्ति बढ़ रही है। आपके भाई आपकी बहिन, परिवार दुःखी हो रहे हैं तो आपको अपने परिवार पर रहम नहीं आता!

अभी बापदादा यही इशारा दे रहे हैं स्व पुरुषार्थ के साथ विश्व सेवा जैसे वाचा की सेवा वर्तमान समय अच्छी धूमधाम से कर रहे हो। बापदादा खुश है, यह 75 वर्ष की जुबली ने सभी के मन में मैजारिटी सेवा का उमंग लाया है। बापदादा देख करके खुश है लेकिन अभी मन्सा सेवा की भी आवश्यकता है क्योंकि सभी तरफ विश्व कल्याणकारी बनना है उसमें मन्सा वाचा और कर्मणा अर्थात् चलन और चेहरे से तीनों ही सेवा की अभी आवश्यकता है। रोज़ चेक करो तीनों सेवाओं में कितनी परसेन्ट सेवा की? वाचा में तो बापदादा ने भी सर्टीफिकेट दिया लेकिन अभी मन्सा सूक्ष्म वायब्रेशन्स द्वारा आत्माओं के दुःख अशान्ति का सहारा बनना पड़े। क्या आपको तरस नहीं आता? बापदादा को तो बच्चों पर चाहे कैसे भी हैं लेकिन फिर भी बच्चे तो हैं ना, तरस आता है। तो अभी हर बच्चे को सिर्फ सेन्टर कल्याणी नहीं, ज़ोन

कल्याणी नहीं विश्व कल्याणी बनना है। तो बापदादा अभी यही अटेंशन दिला रहे हैं अपने भक्तों का कल्याणकारी बनो क्योंकि यह संगमयुग का बहुत बड़ा महत्व है। अभी संगमयुग में जो चाहे जितना चाहे उतना बाप से सहयोग मिल सकता है। तो सुना क्या करना है अभी? मन्सा सेवा को बढ़ाओ। अपने कार्य के प्रमाण जैसे ट्रैफिक कंट्रोल का टाइम फिक्स किया हुआ है ऐसे ही हर एक को मन्सा सेवा का भी टाइम फिक्स करना चाहिए। जब ज्यादा दुःख होगा उस समय सभी का अटेंशन उस हलचल में होगा लेकिन अभी मन्सा सेवा का समय है इसलिए हर बच्चे को अपने विश्व कल्याणी का स्वरूप इमर्ज करना है। विश्व कल्याण में स्व कल्याण स्वतः और सहज हो जायेगा क्योंकि अगर मन फ्री है तो व्यर्थ आता है लेकिन मन बिजी होगा तो व्यर्थ सहज ही समाप्त हो जायेगा। तो बापदादा जब चक्र लगाके चारों ओर देश विदेश के अज्ञानी बच्चों को देखते हैं तो तरस आता है इसलिए आप सब भी अब दुःख हर्ता सुख कर्ता बनो।

आज तो सभी होली मनाने आये हैं। दुनिया वालों की होली और आपकी होली में कितना अन्तर है। लेकिन बापदादा ने पहले भी कहा कि आपके भक्त आप लोगों के किये हुए कार्य को कॉपी करने में होशियार हैं क्योंकि यह सब विधियां द्वापर में आने वाली आत्माओं ने बनाई हैं। तो पहला पहला जन्म था ना इसलिए उन्हों की बुद्धि भी जैसे नियम है पहले सतोप्रधान फिर रजो तमो में आते हैं, तो उस समय उन्हों की बुद्धि अपने हिसाब से सतो थी इसलिए आपकी एक-एक विशेषता को, आप सदा उत्साह में खुशी में रहते हो उसको उत्सव के रूप में मनाना शुरू किया है। जैसे शिवरात्रि पर भी बताया ना कॉपी करने में कितने होशियार हैं। ऐसे अभी भी आप सदा संगम पर उत्साह में रहते हो तो आपका उत्साह उन्होंने उत्सव के रूप में यादगार बनाया है। तो होली में क्या करते हैं? आपने भी अपने जीवन को रंगा है लेकिन आपका रंग कौन सा है? आप सभी का रंग है बाप के संग का रंग। तो सारा समय बाप के संग के रंग में रहते हो ना! तो उन्होंने भी रंग तो बनाया लेकिन बॉडी कान्सेस है ना! तो स्थूल रंग बना दिया है। लेकिन आप सभी सदा यह कल्याणकारी संगम में इस रंग में, संग के रंग में रहते हो ना! रंग लगाया है ना! संग का रंग लग गया और होली इंगलिश में पवित्रता को कहा जाता है। तो संग के रंग में आप होली अर्थात् पवित्र बनते हो। पवित्र बने हैं ना! पवित्रता का व्रत सभी ने लिया है ना पक्का! नम्बरवार भले हैं लेकिन ब्राह्मण बनना अर्थात् पवित्रता का व्रत लेना क्योंकि बाप सदा पवित्र है। है ही पवित्र स्वरूप। बनना नहीं पड़ता। स्वरूप ही पवित्रता है। तो होली की विशेषता जानते हो क्या है? पवित्र तो आप बनते हो लेकिन आप संग के रंग में डबल पवित्र बनते हो। पवित्र धर्म पितायें, महान आत्मायें बनते हैं लेकिन वह सिर्फ आत्मा को पवित्र बनाते हैं। शरीर और आत्मा दोनों ही पवित्र वह आप भविष्य में बनते हो। शुरू से लेके देखो द्वापर से जो भी आये हैं पवित्र बने हैं लेकिन डबल पवित्र कोई नहीं बना है। शरीर भी पवित्र आत्मा भी पवित्र। आप जब भविष्य में राज्य अधिकारी बनेंगे तो आत्मा और शरीर दोनों पवित्र होंगे। सारा चक्र घूमो। द्वापर से आये हैं, द्वापर से अब तक देखो, कोई डबल पवित्र बना है! तो क्यों आप डबल पवित्र, इतने महान बने हैं? क्योंकि आपको रंग कौनसा लगा है? परमात्मा के संग का रंग लगा है। तो जैसे परम आत्मा पवित्र है तो आप भी 21 जन्म डबल पवित्र रहते हो। चाहे धर्मपिता आये लेकिन वह भी डबल पवित्र नहीं। आपका भाग्य है क्योंकि आप रहते ही परमात्मा के संग में हो। संग का रंग इतना पक्का रहता है जो डबल पवित्र बन जाते हो। और होली का दूसरा अर्थ है हो ली। हो गया, जो बीता सो बीता। हो ली। तो हो ली करना आता है? जो हो चुका वह हो चुका। हो ली शब्द का अर्थ क्या निकलता? बीती सो बीती। इससे आप डबल होली 21 जन्म रहते हो। एक जन्म नहीं क्योंकि संगम के एक एक सेकण्ड का कनेक्शन 21 जन्मों का है। यहाँ आपने अगर एक सेकण्ड या एक मिनट सफल किया तो 21 जन्म आपका सफल रहेगा। गैरन्टी है। तो ऐसी होली मनाई है? होली करना आता है? जो बीता वह बीत गया, हो ली। और तीसरी रूप रेखा क्या करते हैं? पहले जलाते हैं फिर मनाते हैं। तो आपने क्या किया? योग अग्नि से अपने कमजोरियों को, संस्कारों को जो अनेक जन्मों के उल्टे संस्कार हैं उसको योग अग्नि से जलाया है ना! जलाया है कि अभी भी जला रहे हैं? जलाया है? जो समझते हैं हमने योग अग्नि से अपने पहले के संस्कार जलाया है, जल गये वह हाथ उठाओ। जल गये कि अभी भी आते हैं? थोड़ा-थोड़ा तो आते हैं? बापदादा के पास जब अपना चार्ट भेजते हैं ना तो कहते हैं बहुत तो चले गये, चतुर हैं ना कहने में। कहते हैं बहुत तो खत्म हो गये, कभी-कभी थोड़ा इमर्ज हो जाता है। लेकिन जलना माना जलना। जलने के बाद नाम निशान ही नहीं रहता। मारने के बाद शरीर का यादगार तो दिखाई देता है, लेकिन जलने के बाद समाप्त हो जाता है। जैसे रावण को भी देखो सिर्फ मारा नहीं जलाया भी। जो बिल्कुल नाम निशान खत्म। तो आप भी सब अपने को नोट करो संस्कारों को मारा है या जलाया है? भस्म किया है? पुराने संस्कार को अगर जलाया नहीं, तो बीच-बीच में इमर्ज हो जाते हैं। लेकिन भक्तों ने कॉपी सब की है। आप जलाते हो वह भी जलाते हैं फिर मनाते हैं। बिना जलाने के मनाते

नहीं हैं। तो आप तो संस्कारों को जलाते हुए होली बन गये हो। कोई बन रहे हो, कोई बन गये हो। तो आपने होली मनाई? बाप के संग के रंग की। अभी संग में बैठे हो ना तो संग के रंग की होली मना ली ना! मनाई? हाथ उठाओ। मना ली। होली मनाना अर्थात् होली बनना, पवित्र बनना। जैसे बाप वैसे बच्चे हैं। अगर मानों आपका कोई संस्कार जो जला नहीं है, इमर्ज हो जाता है तो अच्छा लगता है? संकल्प आता है ना कि अभी तीव्र पुरुषार्थ से इसको जलाना ही है। मारना नहीं है, क्या है कोई-कोई संस्कार को मारा है, तो मरे हुए में कभी जान फिर से आ जाती है। अगर जला दो तो फिर कभी नहीं आयेगा।

तो आज जलाना है या मारा हुआ ही ठीक है? जलाने की शक्ति है? है शक्ति? संकल्प कर सकते हैं? कई कहते हैं बापदादा से रूहरिहान करते हैं ना। बहुत मीठी मीठी रूहरिहान करते हैं, कहते हैं बाबा हमने तो बहुत कोशिश की, फिर फिर आ जाता है। चाहता नहीं हूँ लेकिन आ जाता है। कारण पता है? जलाते हो, बापदादा देखते हैं, पुरुषार्थ बहुत करते हैं लेकिन पुरुषार्थ के साथ दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। दृढ़ता सफलता की चाबी है। जो दृढ़ संकल्प किया जाता है, दृढ़ का अर्थ ही है फिर वापस नहीं आयेगा। फिर पता है बहुत मीठी मीठी बातें करते हैं। जब फिर आ जाता है ना तो क्या कहते हैं? रूहरिहान तो सभी करते हैं ना! बहुत मीठी रूहरिहान करते हैं कहते हैं चाहते तो नहीं है, आ जाता है। तो शक्ति कम है ना! दृढ़ता कम है ना! दृढ़ संकल्पधारी बनो। करना ही है। और उस दृढ़ संकल्प को रोज़ चेक करो किस कारण से फिर दृढ़ता में कमजोरी आई? और उस सरकमस्टांश के ऊपर विशेष अटेंशन देते रहो कि यह फिर से नहीं आवे। मास्टर सर्वशक्तिवान के सीट पर बैठके उस संकल्प को, संस्कार को समाप्त करो। कई बच्चे कहते हैं कि हम कई बार अनुभव करते हैं कि कभी-कभी जब कोई शक्ति चाहते हैं ना तो उस समय पर वो शक्ति नहीं आती। वैसे शक्ति है लेकिन समय पर कभी शक्ति को इमर्ज करते हैं ना तो भी नहीं आती। है मास्टर सर्वशक्तिमान। टाइटिल क्या है आपका? मास्टर सर्वशक्तिमान और कहते क्या हैं? शक्ति समय पर नहीं आती। कारण? अपने मास्टर सर्वशक्तिमान की सीट पर सेट नहीं होते। अभी दफ्तर में भी जाओ तो जो करने वाले को अथॉरिटी होगी वह आर्डर करेगा तो मानते हैं ना। ऐसा दूसरा कोई कहे तो मानेंगे क्या? तो आपकी सीट है मास्टर सर्वशक्तिमान। उस सीट पर सेट नहीं होते तो आवाहन करते भी शक्ति समय पर नहीं आती। इसके लिए बापदादा ने बार-बार कहा है अपने मन को बिजी रखो। कभी किस शक्ति को सारे दिन में इमर्ज रखो। कभी किसी शक्ति को इमर्ज करके देखो कि उसकी ताकत क्या है? ऐसे अनुभव करते रहेंगे, अपनी सीट पर सेट रहेंगे तो शक्ति आपके आगे सदा जी हाजिर होगी। आपकी शक्ति है ना! तो होली मनाई? आप तो सदा होली मनाते रहते। सदा बाप के संग का रंग लगाते ही रहते। रंग में रंगे हुए हैं ना? अच्छा।

बापदादा का जो कार्य मिला है, उस कार्य को अगर कोई ने अभी तक नहीं भी किया है तो बापदादा विशेष एक सप्ताह देते हैं एकस्ट्रा। जो डेट है वह तो है लेकिन एक सप्ताह एकस्ट्रा देते हैं कि इस होमवर्क को पूरा करना ही है। हो सकता है? हो सकता है? हाथ उठाओ। करना पड़ेगा हाथ उठाया। हाथ ऐसा अच्छा उठाते हो जो बापदादा खुश हो जाता है लेकिन करना ही है क्योंकि अभी समय की गति को देख रहे हो। और बापदादा तो बहुत समय से अचानक की वारनिंग दे रहे हैं इसलिए अभी बापदादा हर बच्चे को एक स्वमान देते हैं - हर बच्चा दृढ़ संकल्पधारी विशेष आत्मा बनो। संकल्प किया और हुआ, इसको कहा जाता है दृढ़ संकल्प। कहते हैं दृढ़ संकल्प किया लेकिन दृढ़ता माना ही सफलता। अगर सफलता नहीं है तो दृढ़ता नहीं कहेंगे। तो अभी दृढ़ता भव! यह अपना विशेष स्वमान रोज़ अमृतवेले स्मृति में लाना और उस विधि पूर्वक आगे बढ़ना। अभी दो टर्न हैं, इन दो टर्न में क्या करेंगे? क्या करेंगे? बोलो। पहली लाइन बोलो क्या करेंगे? करना ही है। करेंगे नहीं, करना ही है। बहुतकाल का बाप समान बनना, बहुत समय की प्राप्ति है। संगमयुग का समय बहुत प्यारा है, एक सेकण्ड नहीं है एक सेकण्ड एक वर्ष की प्राप्ति समान है इसलिए बापदादा कहते ही रहते हैं एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं जाये। एक संकल्प भी व्यर्थ नहीं जाये। समर्थ बनो और समर्थ बनाओ। ठीक है ना! ठीक है टीचर्स। टीचर्स कांध हिला रही हैं।

बापदादा का टीचर्स के ऊपर बहुत प्यार है। है तो सभी बच्चों के ऊपर फिर भी टीचर्स जिम्मेवार हैं ना! बापदादा की दिल को पूर्ण करने वाली कौन? कौन? कहो हम टीचर्स। हाथ उठाओ। हाँ देखो कितनी टीचर्स हैं? अरे वाह! अच्छा। होली भी मनाई अभी क्या करना है?

**सेवा का टर्न राजस्थान का है:-** छोटा नहीं है, बड़ा है राजस्थान। आप कहो राजस्थान तो आबू का कमरा है। तो आबू बड़ा है ना उसका कमरा है तो बड़ा ही होगा ना। बापदादा राजस्थान पर खुश है क्योंकि राजस्थान में बचपन से जो वहाँ निकली वह अभी तक अमर हैं। सेवा में अमर हैं। शरीर में नहीं, सेवा में। और राजस्थान ने पहले-पहले

आदि में वारिस क्वालिटी निकाली। जो बापदादा को उन वारिस क्वालिटी का दृष्टान्त देने में सहज था और जैसे गुजरात नजदीक है, ऐसे राजस्थान तो आबू का बड़ा कमरा है। जब भी बुलायें तो क्या कहेंगे? हाज़िर। जी हाँ हाज़िर। बापदादा हर ज़ोन की विशेषता देख रहे हैं और यह जो सिस्टम बनाई है वह बहुत अच्छी बनाई है। किसने बनाई? मुन्नी ने। (दादी जी ने बनाई) दादी तो थी ही दादी। लेकिन जो भी महारथी गये हैं उनकी विशेषता यह है अमृतवेले हाज़िर हो जाते हैं। अमृतवेले का मिलन छोड़ा नहीं है। जैसे यहाँ भी नियम में चलके चलाया। कहने से नहीं, चलके चलाया, ऐसे ही सभी को उमंग उत्साह में लाया। तो यह सिस्टम भी बहुत अच्छी है। आप सबको पसन्द है ना। चांस है। अभी देखो पहले बारी जो आये हैं राजस्थान से, वह हाथ उठाओ। जो पहले बारी मधुबन में आये हैं राजस्थान के, वह हाथ उठाओ। अच्छा चांस है। इतनी संख्या राजस्थान की, वैसे तो आपको लिस्ट अनुसार आना होता है लेकिन अभी फ्रीडम है, सेवाधारियों को चांस मिलता है इसलिए बापदादा दादी को मुबारक दे, या आप सबको मुबारक दे। दादी ने बनाया आप लोग प्रैक्टिकल में आ रहे हैं इसके लिए आपको भी मुबारक। अच्छा।

अभी राजस्थान एक कमाल करना। नम्बर पहले वारिस क्वालिटी बाबा के सामने लाना। बापदादा ने देखा कि सभी वर्गों ने अपने-अपने सम्पर्क वालों की मैजारिटी लिस्ट दी है। लेकिन सहयोगी तो हैं अब आगे क्या करेंगे? सहयोगियों को यज्ञ स्नेही बनाओ। जब यज्ञ स्नेही बनेंगे तो हर कार्य में सभी सहयोगी बनेंगे। लिस्ट बड़ी अच्छी-अच्छी लिखी है। मैजारिटी समय प्रति समय लिस्ट देते रहे हैं। मैजारिटी लिस्ट अच्छी है अभी भी दो चार वर्ग की लिस्ट आई है आज भी। लेकिन अब स्नेही बनाओ अर्थात् हम यज्ञ के ही हैं ऐसे पक्के निश्चयबुद्धि बनाओ। सहयोगी हैं उसमें तो कहेंगे हम हैं ही सहयोगी, लेकिन स्नेही जो भी यज्ञ के नियम कार्य हैं उसमें स्नेही बनेंगे। वर्ग वालों ने कार्य अच्छा किया है। बापदादा ने वर्ग वालों को भी मुबारक दी है। राजस्थान माना राजा बनके राजा बनाने वाले। प्रजा नहीं राजा बनाने वाले। राजस्थान है ना, तो कमाल करेगा ना राजस्थान।

**दो विंग्स आई हैं - मेडिकल विंग और ट्रांसपोर्ट विंग:-** मुबारक हो। बापदादा ने देखा जो भी वर्ग बनी हैं वह अपने अपने क्षेत्र में कार्य अच्छा कर रही हैं। अभी दोनों विंग ने भी अपनी लिस्ट भेजी है। बापदादा ने देखी और मुबारक दे रहे हैं कि अच्छे-अच्छे सम्बन्ध-सम्पर्क में आये हैं। लेकिन बापदादा ने समय के प्रमाण आज यह भी कहा कि सहयोगी है लेकिन अब यज्ञ स्नेही बनाओ। वारिस क्वालिटी बनाओ। जो भी सहयोगी हैं उन्हों को अपने ज़ोन में, बापदादा ने पहले भी कहा है लिस्ट तो आई है अच्छा है लेकिन हर एक ज़ोन एक-एक वर्ग को अपने भिन्न-भिन्न स्थान के सहयोगी या स्नेही आत्माओं को इकट्ठा करो। तीन दिन का उनको सम्पर्क में लाओ, रहें, मीटिंग करें और आगे के प्रोग्राम बनायें। तो हर ज़ोन जहाँ भी उनके हैं, सभी ज़ोन से कोई बड़े स्थान पर जहाँ भी ज़ोन में हो, सहयोगियों को इकट्ठा करके उनकी मीटिंग करो और उन्हों को विशेष एक बल भरो और आगे बढ़ने का। जो अब तक किया उसकी मुबारक दो और आगे बढ़ने का प्लैन बनाके दो क्योंकि उन्हों को भी आगे बढ़ने की विधि सुनानी पड़ेगी। तो सभी ज़ोन मिलके एक-एक वर्ग का जहाँ विशेष स्थान है वहाँ इकट्ठा करो। फिर देखेंगे उस संगठन में कितने आते हैं, क्या आगे चाहते हैं? ऐसे सम्पर्क में लायेंगे तो वारिस बन जायेंगे। बाकी इन दोनों वर्ग जो खड़े हुए हैं उनकी भी बापदादा ने भी रिजल्ट देखी, अच्छी है इसलिए बापदादा दोनों ही वर्गों को मुबारक दे रहे हैं।

बापदादा ने पहले भी कहा है अब समय नाजुक आया कि आया इसलिए अभी कम से कम सम्पर्क वालों को यज्ञ स्नेही तो बनाओ। डाक्टर्स का भी समाचार सुना। अच्छा कर रहे हैं। लेकिन अभी डाक्टर्स और भी अपने डाक्टर्स की संख्या को स्नेही सहयोगी बनाते जाओ। प्लैन अच्छा बनाया है, बापदादा ने सुना है। उससे वृद्धि हो सकती है। नाम फैल सकता है और दूसरी विंग वाले भी अच्छा चारों ओर जो वी.आई.पी. निकाले हैं उससे सिद्ध होता है कि कनेक्शन अच्छे रखे हैं। अब कनेक्शन वालों को सम्बन्ध में लाओ। रह नहीं जावे। समय समाप्ति का आवे और सहयोगी के सहयोगी रह जाये, इसलिए अब सम्बन्ध में लाओ। समीप सम्बन्ध में लाओ। बापदादा ने देखा कि जब से वर्ग बने हैं, तब से सेवा चारों ओर फैली अच्छी है। साधन अच्छा बनाते हैं लेकिन बापदादा सभी ज़ोन को भी कहते हैं अभी वारिस बनाने की विधि को थोड़ा और तीव्र करो। नहीं तो उल्हना मिलेगा। हम सहयोगी रह गये। आप प्लैन जरूर बनाओ फिर जिसका जो भाग्य होगा। और निकल सकते हैं बापदादा ने लिस्ट देखी सभी अपने-अपने समय पर लिस्ट देते हैं तो लिस्ट अनुसार समीप हैं, इनमें से निकल सकते हैं। अभी यह कोशिश करो। अच्छा।

(मेडिकल विंग सिल्वर जुबिली मना रही है, उसमें 8 ग्रुप सेवा के बनाये हैं) अच्छा है बनाया है। आगे बढ़ते चलो। अच्छा।

**डबल विदेशी 1000 आये हैं, 65 देशों से:-** सभी देखो, आपको देख करके सब कितने खुश हो रहे हैं। बाप ने कहाँ-कहाँ से 65 देशों से ढूँढकर निकाला है। आप सबको भी खुशी और नशा है ना तो हमको बाप ने ढूँढ लिया। और बापदादा ने देखा इस बारी सभी ने मिलके जो निमित्त बने हैं, उन सबने बहुत बहुत बहुत अच्छी निमित्त बनने की सेवा की है। बापदादा एक-एक का नाम नहीं लेते लेकिन जो भी निमित्त बनें उन्होंने सेवा में सफलता सबके दिलों में ऐसा उमंग दिलाया है जो अपने स्थान में जाके अपने स्थान को भी ऐसे ही रिफ्रेश करेंगे। तो जो सेवा के निमित्त बनें उनको बापदादा बहुत बहुत मुबारक दे रहे हैं। सिस्टम भी अच्छी बनाई है और जनक बच्ची ने तो सभी को दिल में उमंग और उत्साह एकस्ट्रा भर लिया। हर एक का चेहरा दिखाई दे रहा है कि जो शक्ति इकट्टी की वह चेहरे पर आ रही है। सबके चेहरे खुशनुमा दिखाई दे रहे हैं और अभी जो भारत और विदेश मिलके सेवा की है, उसकी रिजल्ट भी अच्छी है। भारत वाले विदेशियों को प्रेरणा देंगे और विदेश वाले भारत को प्रेरणा देंगे। मिलके करने से अपने में भी उमंग आता है और सुनने वालों में भी उमंग आता है कि विदेश वाले इतना कर रहे हैं, हम भारत में होते भी नहीं कर रहे हैं। फील करते हैं और भारत वाले विदेश में जाते तो वह भी फील करते हैं कि हम यहाँ रहते अपना नहीं बनाया, उमंग में आकरके आगे बढ़ते, बापदादा को यह जो प्लैन बनाया है, तीन चार प्रोग्राम मिलके बनाये हैं, बड़े-बड़े प्रोग्राम उसमें बापदादा ने देखा वायुमण्डल में फर्क पड़ता है क्योंकि सब प्रकार की आते हैं ना। क्रिश्चियन भी मुस्लिम भी, जो भी भिन्न भिन्न धर्म के हैं वह सब प्रकार के इकट्टे देखते हैं तो समझते हैं कि सचमुच विश्व एक हो सकता है इसलिए आपकी ट्रेनिंग बापदादा को अच्छी लगी। मेहनत वालों को बापदादा खास मुबारक दे रहा है। अभी विदेश वाले भी वारिस क्वालिटी लाना क्योंकि समय अचानक का है। तो जितने भी आत्माओं का कल्याण कर सको, जितना कर सको उतना करते जाओ फिर समय नहीं मिलेगा। अभी समय है, कम से कम बाप का घर तो देख लें। बाप का परिचय तो ले लें। तरस आता है ना! तो बहुत अच्छा कर भी रहे हैं लेकिन बापदादा को अभी एक बात याद आ रही है कि शुरू-शुरू में भारत के अन्दर कोई वी.आई.पी लाते थे तो अखबारों में नाम पड़ता था और अखबार वाले इन्ट्रेस्ट से आते थे। गवर्मेन्ट को देखना पड़ता है वी.आई.पी को, तो गवर्मेन्ट भी प्रभावित होती है, अभी वह नहीं किया है। आप आये हो उसकी तो मुबारक। प्रोग्राम में साथी बनते हैं, यह बापदादा अच्छा मानते हैं। अब उन्हीं को भी लाओ तो गवर्मेन्ट के थोड़े कान खुलें। जैसे अभी देखते हैं कि यह जो 75 वर्ष की जुबली है, इस जुबली ने भारत वालों को अच्छा जगाया है। पहले जो समझते थे ब्रह्माकुमारियां पता नहीं क्या करती हैं, अभी उन्हीं के मुख से निकला है कि कमाल है ब्रह्माकुमारियों के 75 वर्ष। और दूसरी कमाल है कि यहाँ बहिनें ही निमित्त बनी हैं और बहनों ने इतना कार्य किया है, तो उन्हीं को यह आश्चर्य लगता है और अभी नजदीक आने की दिल होती है। मिलें, सुनें और आपके मुख्य जो सबजेक्ट हैं, आप आत्मा हो, वह इस जुबिली के कारण सब तरफ समझते हैं कि आत्मा समझने से यह एकमत हो सकते हैं। तो जैसे इस जुबिली ने कमाल की है ना, ऐसे और करते जाओ और सभी को सन्देश पहुंचाने के लिए भी जो टी.वी. और रेडियो ने सहयोग किया है, उसको भी बापदादा मुबारक दे रहे हैं। जो घर बैठे सब देखते हैं, वैसे तो कई बहाना देते थे, चाहते हैं लेकिन टाइम नहीं है, अभी घर बैठे भी देखने से धीरे-धीरे जागते जाते हैं। तो जो भी कर रहे हो वह अच्छा हो रहा है और होता रहेगा। उसकी मुबारक हो।

बापदादा ने देखा है कि अभी सेवा का उमंग भी सभी में जाग रहा है, हम भी करें, हम भी करें। यह उमंग आया है। जब उमंग आ गया ना तो जहाँ उमंग है, उत्साह है वहाँ सफलता है ही है इसलिए जो आप सम्मुख हो उन्हीं को और जो दूर बैठे देख रहे हैं, सुन रहे हैं, उन सभी चारों ओर के बच्चों को बापदादा बहुत-बहुत दिल का प्यार और साथ में दिल में सदा रहने की मुबारक दे रहे हैं।

अभी दिल लग गई है, यहाँ आबू में रहने की दिल लग गई है! अच्छा है। विदेशियों को देखके तो परिवार भी खुश होता है। और 65 देशों से देखो किसमें आये हो? प्यार के विमान में आये हो ना।

**पहली बार बहुत आये हैं:-** पहली बार आने वालों को डबल मुबारक दे रहे हैं, क्यों? क्यों डबल मुबारक दे रहे हैं? क्योंकि समय के हाहाकार के पहले अपना भाग्य बना दिया। अहो प्रभु, अहो प्रभु कहने के बजाए मेरा बाबा तो कहा इसलिए बापदादा आने वालों को देख खुश है। बच्चे आ गये, आ गये, आ गये। देखो आधा क्लास तो पहले बारी का है। अभी तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा। पुरुषार्थी नहीं बनना तीव्र पुरुषार्थी बनना। अभी भी अगर तीव्र पुरुषार्थ किया तो तीव्र पुरुषार्थ से आगे बढ़ सकते हो। मार्जिन तीव्र पुरुषार्थ की है। साधारण पुरुषार्थ का टाइम गया और बापदादा हर एक आने वाले बच्चों को चक्र लगाते देखते हैं, कि बच्चे आगे बढ़ रहे हैं या ढीले आगे बढ़ रहे हैं। बापदादा चक्र चारों ओर लगाते हैं। आप तो चारों ओर नहीं जा सकते लेकिन बापदादा तो रोज चक्र लगाते हैं। बाबा के साथ जो आपके एडवांस

पार्टी के विशेष गये हैं ना वह भी बापदादा के साथ चक्र पर निकलते हैं। आप लोगों को देख करके खुश होते हैं हमारे भाई, हमारी बहन आ गये, आ गये इसलिए आगे बढ़ते चलो, सारे परिवार की आपको मुबारक है। अच्छा।

आज मधुबन वालों को विशेष बापदादा एक बात की मुबारक दे रहे हैं। कौन सी बात? सभी ने अभी तक सेवा बहुत अच्छी प्यार से की है। कितना भी बड़ा परिवार आया लेकिन सेवा में निमित्त तो मधुबन वाले बनते हैं। चाहे हर ज़ोन सहयोगी बनते हैं लेकिन फिर भी जो परमानेंट रहते हैं उनके सहयोग के बिना तो नहीं कर सकते। इसलिए एक-एक मधुबन वासी सिर्फ नीचे वाले नहीं, ऊपर वाले भी, हॉस्पिटल भी, जिन्होंने भी सहयोग दिया है, और अथक बनके सहयोग दे रहे हैं, इसीलिए एक-एक बच्चा अपने नाम से बापदादा का यादप्यार स्वीकार करना। अच्छा। जो मधुबन वाले हैं वह उठो, जो भी बैठे हैं यहाँ। तो खास मुबारक हो। अच्छा।

चारों ओर के होलीएस्ट बच्चों को जो हर कदम में मेरा बाबा मेरा बाबा कहते हुए उड़ रहे हैं, और सदा अपने तीव्र पुरुषार्थ द्वारा आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ाते रहते हैं ऐसे बापदादा के दिल के नूरे रत्न को बापदादा बहुत बहुत बहुत बहुत दिल का प्यार दे रहे हैं। साथ में होली की मुबारक भी दे रहे हैं क्योंकि वास्तव में आप ही होली हो और कोई डबल होली तो बनते नहीं। आप ही डबल होली बनते हो इसीलिए पदमगुणा मुबारक हो, मुबारक हो।

**दादी जानकी से:-** परिवार से दिल का प्यार अच्छा है। सभी खुश होते हैं। जो दिल से करते हैं ना तो खुशी होती है। अथक बनके कर रही हो, ऐसे ही चलते चलो। बापदादा तो हर बच्चे को सकाश देता है। हर बच्चे को चला रहा है और बच्चे जो बापदादा चला रहे हैं, उनका रेस्पान्स भी देते हैं। अच्छा देते हैं।

**मोहिनी बहन:-** ठीक है, चलाने तो आ गया है। तबियत में अभी ताकत नहीं है तो थोड़ा-थोड़ा जैसे आप चला रही हो वह अच्छा चला रही हो, ऐसे चल जायेगा। ऐसे नहीं समझो नहीं चलेगा, चलेगा। लेकिन आपको तरीका आ गया है, इस पर बापदादा खुश है। (सेवा का प्रोग्राम बना, मैं जा नहीं सकी) क्योंकि पहले भी आना जाना किया। कोई भी प्रोग्राम बनाओ भले लेकिन थोड़ा समय रेस्ट करके फिर बनाओ। अभी समझ गई हो ना। सेवा करेंगी, ऐसी कोई बात नहीं है, जब जाना हो तो उसके 15 दिन पहले रेस्ट करो। जाना है, लेकिन अपने को तैयार करो, एकस्ट्रा कुछ नहीं करो। जैसे डायरेक्शन है उसी अनुसार चलो। ठीक करेंगी, निकलेंगी।

**नीलू बहन भी हॉस्पिटल की यात्रा करेंगी:-** हिम्मत रखी है और शक्ति भी है। है ना शक्ति। बापदादा ने दी है और आपने जमा की है। उस शक्ति से कोई बड़ी बात नहीं है। ऐसे ही लगेगा कुछ हुआ नहीं, कोई तकलीफ नहीं। सेवा का मेवा तो मिलेगा ना। अच्छा है।

**परदादी से:-** यह तो वाह! वाह! है ना। देखो अभी इसका फोटो निकालो, बीमार लगती है? बर्थ डे की मुबारक हो। यह कमाल है कि इनका चेहरा सदा ऐसे लगता है जैसे कुछ है नहीं। शक्ल सुहानी है। कहती है ना डबल बाप है, तो डबल वरदान है।

**निर्वैर भाई और तीनों भाईयों से:-** (कटक वालों की याद दी) सबको यादप्यार देना। सबको उमंग है, अच्छा है। आवाज तो फैलता है ना। (पुरी के महाराजा भी मधुबन आना चाहते हैं) अभी आयेंगे, बहुत आयेंगे।

आप तीनों मिलके राय करते हो? राय करना फिर दादियों को सुनाओ, पहले आपस में राय करो। यह अच्छा करते हो, जैसे आज किया है ना। ऐसे राय निकालके फिर इन्हें को साथ में सुनाओ। अच्छा करते हो।

**रमेश भाई से:-** तबियत ठीक है ना। तबियत की सम्भाल करना। हल्का नहीं छोड़ो। और सदा ऐसे समझो कि बाबा के साथ चल रहा हूँ। बाबा के साथ काम कर रहा हूँ, अकेला नहीं। (अनिला बहन की याद दी, वह हॉस्पिटल में है) उसकी तबियत थोड़ी है।

(सोनीपत की जमीन पर काम बढ़ाना है) अच्छा है, उस तरफ सेवा तो शुरू हो। बनाना प्रोग्राम अच्छा है सेवा का विस्तार हो रहा है।

**भूपाल भाई से:-** साक्षी होके सब यज्ञ का कार्य निमित्त बनके करते चलो। बाबा का साथ तो है ही। अकेला तो कोई कर नहीं सकता। बाप साथ है ही। अच्छा है।

मोहिनी बहन की सेवा पर जो बहने हैं, उनके प्रति बापदादा ने कहा कि, बाबा जानते हैं, देखो कोई भी सेवा करते हैं बाबा की दी हुई सेवा है। बाप ने दी है। तो पहले बाप फिर सेवा। अच्छा है।

## “सन्तुष्टता की शक्ति चेहरे और चलन में धारण कर ब्रह्मा बाप समान बनी, सदा खुश रही और खुशी बांटें”

आज चाहे सम्मुख चाहे दूर के सन्तुष्टमणि बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा अपने सन्तुष्टता की शक्ति से चमकते हुए मुस्कराते मिलन मना रहे हैं। यह सन्तुष्टता की शक्ति सबसे महान है इसलिए इसमें सर्व प्राप्ति हैं। सन्तुष्टता की शक्ति धारण करने वाली सन्तुष्टमणियां स्वयं को भी प्रिय, बाप को भी प्रिय, परिवार को भी प्रिय हैं क्योंकि सन्तुष्टता जहाँ है वहाँ सर्वशक्तियां सन्तुष्टता में समाई हुई हैं। सन्तुष्टता की शक्ति का वायुमण्डल चारों ओर फैलता है। सन्तुष्टमणि वाली आत्मायें कभी भी माया से हार नहीं खा सकती, माया हार खाती है। सन्तुष्टमणि आत्मायें सर्व की दिल को अपना बना सकती हैं। सन्तुष्टमणि आत्मा चाहे माया, चाहे प्रकृति के भिन्न-भिन्न हलचल को ऐसे अनुभव करती जैसे एक कार्टून को देख रहे हैं। ऐसे हर एक बच्चा अपने को सन्तुष्टता की शक्ति में सम्पन्न समझते हैं? अपने से पूछो कि मैं सन्तुष्टमणि हूँ? कई बच्चे कहते हैं कभी-कभी रहते हैं, सदा नहीं लेकिन कभी-कभी, तो बापदादा को कभी-कभी शब्द अच्छा नहीं लगता है। बापदादा सदा हर एक बच्चे को यादप्यार देते हैं, खुशी देते हैं। तो बापदादा को यह कभी कभी शब्द अच्छा नहीं लगता, सदा खुशनुमा। तो बापदादा यही चाहते हैं कि इस कभी-कभी शब्द को क्या परिवर्तन कर सकते हो! कभी-कभी शब्द ब्राह्मणों की डिक्शनरी में ही नहीं है, सदा। तो क्या आज सभी बच्चे जो बाप के प्यारे, माया के प्रभाव से न्यारे बने हैं, तो क्या आज इस कभी कभी शब्द को समाप्त कर सकते हैं? कर सकते हैं? क्योंकि बापदादा बहुत समय से कह रहे हैं कोई भी हलचल अचानक आनी है। उसकी तैयारी के लिए अगर अभी से कभी कभी के संस्कार होंगे तो क्या सदाकाल के राज्यभाग्य के अधिकारी बन सकेंगे? ब्रह्मा बाप से सबका दिल का प्यार है। ब्रह्मा बाबा से वायदा साथ हैं, साथ चलेंगे, साथ राज्य करेंगे। यह वायदा पक्का है ना! कांध हिलाओ। पक्का है? कितना पक्का! ब्रह्मा बाप ने कभी-कभी शब्द बोला! आप सबको भी सदा अमृतवेले यादप्यार दिया और सदा बाप के साथ मिलकर ज्ञान की बातें, स्नेह की बातें, उमंग-उल्हास की बातें सुनाई। तो सभी से हाथ उठवायें कि बापदादा से प्यार है तो सभी दो दो हाथ उठायेंगे। है ना! पक्का? जब प्यार है तो प्यार वाले के एक-एक शब्द से भी प्यार होता है। ब्रह्मा बाप ने कभी शिव पिता से यह नहीं कहा कि कभी-कभी होता है। सदा फॉलो फादर किया और साथ में आपको भी कराया क्योंकि ब्रह्मा बाप का बच्चों से जिगरी प्यार है इसीलिए आपका नाम भी क्या है? ब्रह्माकुमारी, शिवकुमारी नाम नहीं है। तो ब्रह्मा बाप से प्यार अर्थात् ब्रह्मा बाप का कहना और ब्रह्माकुमार कुमारी का मानना। प्यार अर्थात् न्योछावर। तो किस पर न्योछावर होंगे? उनकी आज्ञा पर। जो बोला वह किया क्योंकि ब्रह्मा बाप के साथ शिव बाप है। अकेला नहीं। बापदादा, बापदादा कहते हो ना!

तो आज बापदादा कभी-कभी शब्द को हर बच्चे के मुख से समाप्त करने चाहते हैं। तो आप सभी बच्चे बाप के साथी हो। प्यार है ना! प्यार में तो अपने आपको न्योछावर भी कर देते हैं यह तो सिर्फ शब्द को न्योछावर करना है क्योंकि बापदादा हर बच्चे को माला का विजयी रत्न बनाने चाहते हैं। तो अपने को माला का मणका समझते हो? विजयी समझते हो? कई बच्चे कहते हैं ब्राह्मणों की संख्या तो बहुत है और माला 108 की है तो 108 ही आयेंगे ना! लेकिन बापदादा अगर आप सम्पन्न बनें, विजयी बनें तो 108 की माला है यह नहीं सोचो, बापदादा बीच में लड़िया भी लगा देगा। लेकिन आप विजयी बनो। कई बच्चे सोचते हैं पता नहीं, नम्बर मिलेगा या नहीं मिलेगा। आप अगर सम्पन्न बनें तो बाप नम्बर दे ही देगा क्योंकि बाप का हर बच्चे से प्यार है। सुनाया भी था भले कोई लास्ट बच्चा है, उनसे भी बाप का प्यार है क्योंकि उस बच्चे ने चाहे स्वभाव के वश है लेकिन बाप को जानके मेरा बाबा तो कहा। दुनिया में कितने बड़े-बड़े मर्तबे वाले उन्होंने बाप को नहीं पहचाना लेकिन उसने तो पहचाना, चाहे कोई कमजोरी वश है लेकिन बाप को तो पहचाना। मेरा बाबा तो प्यार से कहते हैं इसलिए बाप ने पहले भी सुनाया था कि लास्ट बच्चे के ऊपर बाप का प्यार तो है ही लेकिन उसके ऊपर खास कल्याण की दृष्टि, कल्याण की वृत्ति भी है कि यह बच्चा कुछ न कुछ आगे बढ़ता रहे। तो बापदादा आज स्पष्ट सुना रहे हैं, कि आप और बातें नहीं सोचो यह कैसे होगा, यह क्या होगा, आप अपने को योग्य आत्मा बनाओ। कर्मयोगी आत्मा बनाओ। बाकी बाप हर बच्चे को ऐसा योग्य बच्चा जो बनेगा उसको सर्व प्राप्ति का वरदान भी देके आगे बढ़ायेगा, पीछे नहीं रखेगा।



तो बापदादा आज अमृतवेले चारों तरफ के चाहे देश चाहे विदेश में चक्र लगाने गये। वैसे तो बापदादा मैजारिटी चक्र लगाते ही हैं लेकिन आज जब चक्र लगाया, सुनाया था तो बापदादा चक्र लगाने जाता है तो विशेष आपके पूर्वज दादियां भी साथ में चक्र लगाने चलती हैं। तो चक्र लगाते क्या देखा? जानते तो हो आप भी। अच्छे-अच्छे संकल्प करते हैं, करके ही दिखायेंगे, बनके ही दिखायेंगे, हाथ में हाथ लेके ही चलेंगे। तो हाथ क्या है? शिव बाप को तो फरिश्ता रूप भी नहीं है तो हाथ कौन सा है? श्रीमत हाथ है। फॉरेन में फैशन है हाथ में हाथ देके चलने का। तो यहाँ हाथ है श्रीमत तो सभी हाथ में हाथ मिलाके चलने वाले हो ना! है ताकत? ब्रह्मा बाप ने देखो कदम-कदम श्रीमत पर चलके आप सभी को करके दिखाया। क्या करना है, कैसे करना है, एकजैम्मुल है। साकार में एकजैम्मुल है। निराकार की बात तो छोड़ो लेकिन ब्रह्मा बाप साकार में आपके साथी थे। तो जैसे ब्रह्मा बाप श्रीमत का हाथ में हाथ मिलाके फरिश्ता बन गया। ऐसे ही फॉलो फादर है ना! फॉलो फादर याद है ना! तो फॉलो क्या करना है? सारी बातें स्पष्ट करके दिखाई, ब्रह्मा बाप के चेहरे और चलन को सभी जानते हैं ना! अपनी बुद्धि द्वारा तो ब्रह्मा बाप को इमर्ज कर सकते हैं ना! जो दिनचर्या जैसे दिनचर्या ब्रह्मा बाप ने की, साकार तन में होते, साकार में भी सब अनुभव किया। ब्रह्मा बाप के चरित्र तो सब जानते ही हैं। तो फॉलो फादर। आपको पक्का करने के लिए ब्रह्मा बाप के हर कदम रिवाइज भी किये हैं। 8 कदम पढ़ते हो ना, क्याक्या किया! बस उसको फॉलो करना है। फॉलो करना अर्थात् ब्रह्मा बाप समान बनना। तो सोचो बाप से प्यार है, दोनों बाप से प्यार है। प्यार माना पहले भी सुनाया तो प्यार का प्रैक्टिकल रूप है ब्रह्मा बाप का करना और कहना और बच्चों को बाप समान करना, यह है सच्चा दिल का प्यार। कई बच्चे क्या करते हैं? ब्रह्मा बाप समान करना है, यह सोचते हैं लेकिन पहले करके पीछे सोचते हैं, ब्रह्मा बाप समान तो किया नहीं। लेकिन कर तो लिया। लेकिन फॉलो करना है तो पहले सोचो, संकल्प करने के पहले सोचो क्या यह संकल्प ब्रह्मा बाप का है! अगर है तो प्रैक्टिकल करो। करके पीछे नहीं सोचो। लेकिन पहले सोचके फिर फॉलो करो। ब्रह्मा बाप को फॉलो करना अर्थात् ब्रह्मा बाप समान बनना। हिम्मत है? फॉलो करने की हिम्मत है? जो समझते हैं करना ही है, वह हाथ उठाओ। पहले सोचना फिर करना। करके नहीं सोचना।

तो आज बापदादा विशेष सन्तुष्टता की शक्ति हर एक बच्चे में ब्रह्मा बाप समान देखने चाहते हैं। इस एक सन्तुष्टता की शक्ति में सब शक्तियां आ जायेंगी। तो आज बापदादा का विशेष वरदान है सन्तुष्टता के शक्ति भव! कुछ भी हो अपनी सन्तुष्टता को कभी नहीं छोड़ना। कई बच्चे कहते हैं, रूहरिहान करते हैं ना! तो कहते हैं सन्तुष्ट बनना सहज है, लेकिन सन्तुष्ट बनाना बहुत मुश्किल है। आप स्वयं कोई कुछ भी करता है, करता है तो आप समझते भी हो यह ठीक नहीं है फिर दिल में क्या रखते हो? यह ऐसा करता, यह ऐसा करता है, इसका स्वभाव ऐसा है, इसका ऐसा है। दिल में नहीं रखो क्योंकि आपने दिल में बाप को बिठाया है। बिठाया है ना? कांध हिलाओ। बिठाया है पक्का? कि निकालते भी हो बिठाते भी हो? अगर बिठाया है तो दिल में बात रखेंगे, तो बाप के साथ दिल में बात भी रखेंगे। तो दिल में नहीं रखो। बापदादा ने यह युक्ति भी पहले ही सुनाई है कि सदा ऐसी आत्मा के प्रति शुभ भावना शुभ कामना रखकर अपनी शुभ कामना को कार्य में लगाओ और वैसे भी देखो आप समझते हो यह अच्छा नहीं करती, तो खराब चीज है। तो अगर कोई आपको खराब चीज़ देवे तो आप लेंगे? तो जब खराब समझते हो तो बुद्धि में रखना, दिल में रखना तो खराब चीज़ लिया क्यों? ऐसे अपनी दिल में सदा बाप को रखते हुए बाप समान बन जायेंगे। यह तो वायदा है ना, बाप समान बनना है ना! बनना है पक्का? कि पता नहीं बनेंगे या नहीं बनेंगे? यह तो नहीं सोचते? प्यार माना फॉलो फादर। तो बापदादा अभी एक-एक बच्चे को शुभ कामना, शुभ भावना सम्पन्न आत्मा देखने चाहते हैं।

टीचर्स बनेंगी? टीचर्स से बापदादा का विशेष प्यार है। क्यों प्यार है? क्योंकि बाप की गद्दी पर बैठने की हिम्मत रखी है। तो टीचर्स में हिम्मत है ना! हर एक टीचर से बाप यह चाहता है कि हर एक के फीचर से फ्युचर दिखाई दे। निमित्त टीचर्स को बापदादा कह रहे हैं लेकिन आप भी साथी हो ना! बापदादा ने 75 वर्ष पहले छोटे-छोटे बच्चों को बोर्डिंग में यही शिक्षा दी, खुशनुमा और खुशकिस्मत, हर एक का चेहरा ऐसे हो। तो अभी भी बापदादा यही चाहता है हर एक बच्चा शक्ति से दिखाई दे कि यह खुशनुमा और खुशकिस्मत वाली आत्मा है। वाणी द्वारा सेवा बहुत की और अच्छी की उसका सर्टीफिकेट तो है लेकिन अभी अपने चेहरे और चलन से सेवा में आगे बढ़ो। जैसे कोई गरीब होता है उसको लाटरी मिल गई तो उसका चेहरा और चलन बोलता है ना! उसका चेहरा देख करके सब अनुभव करते हैं आज इसको कुछ मिला है। ऐसे ही आपकी चलन और चेहरे से मान जाएं कि इन्हीं को कुछ

तो आज बापदादा क्या चाहता है? ब्रह्मा बाप समान बनो। फॉलो फादर क्योंकि समय की हालतें तो हलचल में आ भी रही हैं और आनी भी हैं इसलिए बापदादा हर बच्चे को यही शिक्षा देने चाहते हैं कि सदा खुश रहो और खुशी बांटो। जितनी खुशी बांटेंगे उतनी खुशी बढ़ेगी। आपको खुशनुमा देख दूसरे भी 5 मिनट के लिए तो खुश होवे। दुःखी आत्मायें अगर आपको देख करके 5 मिनट भी खुश हो जाएं तो उन्हीं के लिए तो बहुत दिलपसन्द बात है। तो आज बापदादा विशेष सन्तुष्टता की शक्ति हर एक बच्चे को चलन और चेहरे से धारण कर और अन्य को भी कराने का विशेष ध्यान खिंचवा रहे हैं। अच्छा।

सभी आज जो पहली बार आये हैं वह उठो। देखो, आपको दिखाई दे रहा है। आधा क्लास पहले बारी के हैं। हाथ उठाओ। देखो सभी के हाथ देखो। आपके नये-नये भाई बहिन कितने आपके साथी बने हैं। मुबारक हो, बहुत-बहुत मुबारक हो। अभी जैसे यहाँ तक पहुंचे हो ना! बापदादा से मिलने तक पहुंचे हो, आगे क्या करना है? फॉलो फादर ब्रह्मा बाप। बापदादा को भी आप बच्चों को देख करके खुशी होती वाह! बच्चा आ गया! सारे परिवार को भी खुशी होती है हमारे भाई बहन आ गये, आ गये, आ गये। अभी फॉलो ब्रह्मा बाप। कभी भी कुछ भी होवे, कोई क्वेश्चन हो या कोई प्रॉब्लम हो, प्रॉब्लम की तो दुनिया ही है। तो फौरन अपनी टीचर द्वारा उसका हल करा देना। दो दिन हो गया है, ऐसा है, यह नहीं करना क्योंकि बहुत पीछे आये हो ना और जाना तो आगे चाहते हो ना! पीछे रहना चाहते हो? नहीं। आगे जाने चाहते हो तो आगे जाने की यही एक बात करना, दिल में कोई भी व्यर्थ बात नहीं रखना। इसके लिए अपना अमृतवेले बाप से मिलने के बाद, एक तो अमृतवेला जरूर करना और उसके बाद अपने सारे दिन की दिनचर्या जिसमें मन बिजी रहे, कोई न कोई ड्रिल, अनेक ड्रिल बापदादा ने सुनाई है, लेकिन कोई न कोई ड्रिल साथ-साथ करते रहना। बापदादा सभी के लिए कहते हैं कि बीच-बीच में समय निकाल के चाहे पुराने, चाहे नये सभी को एकदम अशरीरी बनने की ड्रिल जरूर करना है क्योंकि आने वाले समय में सेकण्ड में अशरीरी बनना ही पड़ेगा। तो यह ड्रिल कोई कहे समय नहीं मिला, कितना भी कोई बिजी हो, पानी की प्यास लगती है तो क्या पानी पीने नहीं उठेंगे। जरूरी समझके उठेंगे ना। तो यह एक मिनट अशरीरी बनने की ड्रिल यह प्रैक्टिस जरूर करो। उस समय प्रैक्टिस नहीं कर सकेंगे। कई समझते हैं ना, समय आयेगा कर लेंगे। लेकिन नहीं। यह जन्म-जन्म का बॉडीकान्सेस का अभ्यास उस समय अशरीरी बनने नहीं देगा इसलिए अभी से कोई भी समय निकाल सारे दिन में समय प्रति समय जो भी समय निश्चित करो एक सेकण्ड में अशरीरी आत्मा हूँ, आत्मा स्वरूप में स्थित हो जाए। बॉडी कान्सेस अपने तरफ खींचें नहीं। यह अभ्यास सभी को करना है। चाहे पुराने चाहे नये क्योंकि बापदादा ने कुछ समय से यह बात कही है। लेकिन करना जरूरी है। नहीं तो श्रीमत का हाथ में हाथ देकरके नहीं चल सकेंगे। आपका वायदा है साथ चलेंगे, साथ राज्य में आयेगे। तो यह ड्रिल सभी को करना है। बाकी नये जो भी आये हैं, खुश रहो आबाद रहो, आगे से आगे बढ़ते रहो। अच्छा।

**सेवा का टर्न महाराष्ट्र, आन्ध्र और मुम्बई का है:-** अच्छा। इस ज़ोन की भी संख्या बहुत है। नाम है महाराष्ट्र। तो महा होंगे ना! तो जैसे नाम है वैसे ही संख्या भी महान है। बापदादा का बाम्बे और दिल्ली दोनों तरफ एक बात का उमंग उत्साह है। सर्विस तो करते हो, वह तो कहने की बात नहीं है। अच्छी कर रहे हैं, करते रहेंगे लेकिन बापदादा देहली और बाम्बे से यही चाहते हैं कि जो आपके सम्बन्ध सम्पर्क में आये हुए विशेष आत्मायें जो माइक भी बन सकते हैं और फिर वारिस भी बन सकते हैं, ऐसे कोई गुप निकालो क्योंकि लिस्ट सभी वर्गों ने मैजारिटी बापदादा को भेजी थी। देखी है वह लिस्ट। अच्छे अच्छे हैं लिस्ट में जो नाम बाला कर सकते हैं। अभी उनको प्रत्यक्ष करो। आपके बजाए वह भाषण करें। अनुभव सुनायें आपका, ज्ञान क्या है, हमने जीवन में क्या अन्तर किया है, वह वर्णन करें। जब फंक्शन होता है, अभी भी तो अपना अनुभव कई अच्छे-अच्छे सुनाते भी हैं लेकिन वह तो फंक्शन में सुनाया, लेकिन लगातार जीवन का अनुभव करें। यह अटेन्शन देंगे तो निकलने वाले हैं क्योंकि बापदादा ने लिस्ट जो देखी सभी की उसमें ऐसे योग्य हैं लेकिन थोड़ा पुरुषार्थ करके उन्हीं को आगे बढ़ाओ। हर एक वर्ग को वास्तव में यह लिस्ट प्रत्यक्ष रूप में परिवार और बाप के सामने लानी चाहिए। कार्य किया है वर्गों ने। बापदादा ने देखा कार्य किया है लेकिन बहुत समय से कर रहे हैं अभी कोई नवीनता लाओ। नवीनता यह है वारिस बनाओ। कम से कम जो सम्पर्क वाले हैं वह सम्बन्ध में आवे, सम्बन्ध के बाद सेवा में लगे। सम्बन्ध यह नहीं, आने जाने का संबंध नहीं लेकिन बाप और परिवार के साथी बन जाएं। यह भी होना है, अभी बापदादा ने देखा कि अगर

ब्राह्मण मिलके कोई भी एक संकल्प करें तो हुआ ही पड़ा है लेकिन सबका एक ही संकल्प हो तो क्योंकि अभी वायुमण्डल बदल गया है। जब से आपने यह 75 वर्ष का मनाया है तब से लोगों को समझ में आया है कि यह कुछ कर रहे हैं और जो कहते हैं वह अच्छा कहते हैं, कर सकते हैं। अभी इतने तक चेंज आई है इसलिए अभी आप भी चेंज देख करके और थोड़ी मेहनत करेंगे तो आपका परिवार कितना बढ़ जायेगा। तो बापदादा ऐसों का कहाँ भी संगठन कराना चाहते हैं। मधुबन में मिलने आते हैं वह बात अलग है लेकिन परिवार के बनके आवे क्योंकि सर्विस में कोई न कोई नवीनता तो चाहिए ना! अच्छा। बापदादा खुश है क्योंकि यह उठे हैं ना तो बापदादा देख करके खुश है। बाकी बापदादा की एक आशा रह गई है और भी। ज़ोन वालों के प्रति। वह कौन सी है? हर सेन्टर यह खुशखबरी लिखे कि हमारा सेन्टर निर्विघ्न है। मिलनसार है। सब बाबा के बच्चे एक्यूरेट, जो कार्यक्रम बना हुआ है उस तरफ बिजी हैं। निर्विघ्न हैं। यह अभी किसी ज़ोन का नहीं आया है। तो महाराष्ट्र तो महान कार्य करेंगे ना! किसी भी ज़ोन ने अभी यह खुशखबरी नहीं भेजी है। बनना है, बनना तो आपको ही है और कौन बनेंगे! आपकी तपस्या कम नहीं है। चाहे टीचर है, चाहे स्टूडेंट हैं दुनिया के हिसाब से हर एक महान आत्मायें हैं। अभी-अभी देखना आपको यह निर्विघ्न का थोड़ा सा करो तो सभी आपको जैसे आपके जड़ चित्र में शुभ भावना से देखते हैं, ऐसे आपको चैतन्य रूप में देवियों के रूप में, देवताओं के रूप में देखेंगे। बाकी सेवा सभी ने अच्छी की है। उसकी बापदादा मुबारक दे रहे हैं।

यह निज़ार उठो। (बापदादा ने निज़ार भाई को उठाया)

बापदादा ने समाचार सुना तो जो आपकी रूपरेखा बनी हुई है, ऐसे ही अच्छा है और आगे भी अच्छा बनता जायेगा इसलिए आगे बढ़ते चलो। बापदादा ने समाचार सुने हैं।

**आई.टी. ग्रुप:-** चित्र और बोर्ड भी अच्छा बनाते हैं। बापदादा ने पहले भी सुना दिया है, बापदादा ने देखा हर एक वर्ग कुछ न कुछ नवीनता भी कर रहे हैं और अभी हर वर्ग में आवाज भी बाहर फैला है, जैसे डाक्टरों की सर्विस में, मैडीकल में अभी हार्ट के इलाज का आफिशियल डाला है, तो यह जो आफिशियल बुक में डाला है यह बापदादा ने देखा, तो वह एडवर्टाइज के लिए अच्छा है। ऐसे ही और भी ज़ोन वालों ने अच्छे अच्छे निमित्त बने हुए जो आवाज फैला सकते हैं उनसे कनेक्शन रखा है और उसकी रिजल्ट भी है। तो बापदादा हर वर्ग वालों को यही कहते हैं तो जैसे अभी आगे बढ़े हो ऐसे और भी आगे बढ़ते जायेंगे तो सबकी नज़र आपके ऊपर जायेगी। धीरे-धीरे विश्व में प्रसिद्ध होते जायेंगे इसलिए बापदादा इस वर्ग को भी मुबारक दे रहे हैं। सभी पुरुषार्थ अच्छा कर रहे हैं और पुरुषार्थ के साथ बापदादा आप सबके साथ है। अच्छा।

**डबल विदेशी भाई बहिन:-** डबल विदेशी, डबल से डबल होते जाते हैं। बापदादा ने देखा कि स्व के ऊपर, स्वमान के ऊपर और अपने वृत्ति के ऊपर अटेंशन अच्छा दे भी रहे हैं और दिला भी रहे हैं। यज्ञ स्नेही का पार्ट भी, यज्ञ सहयोगी का पार्ट भी अच्छा बजा रहे हैं इसलिए बापदादा डबल विदेशियों को अनेक बार की मुबारक दे रहे हैं। बापदादा आप लोगों की कहानियां सुनते रहते हैं। सिर्फ स्नेही नहीं हैं लेकिन स्नेही के साथ सहयोगी, हर कार्य में बनते हैं और अपना भविष्य जमा करने में होशियार हैं इसलिए देखो कितने देशों के आ गये हैं। बापदादा यह संगठन देख स्नेही सहयोगी हर कार्य में हाथ बढ़ाने वाला ग्रुप देख करके खुश हो रहे हैं। खुश है, आप भी खुश बाप भी खुश और परिवार भी खुश। मधुबन वाले तो कहते ही हैं कि डबल विदेशी मधुबन का श्रृंगार हैं और बाप का विश्व कल्याणी नाम विदेश ने सिद्ध किया है इसलिए सभी तीव्र पुरुषार्थी बनके रहना। पुरुषार्थी नहीं तीव्र पुरुषार्थी क्योंकि अभी समय है, सभी के लिए तीव्र पुरुषार्थी बनने का। पुरुषार्थ का समय अभी गया, अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। तो कभी भी साधारण पुरुषार्थी नहीं बनना। सदा चेक करना, तीव्रता है? साधारण तो नहीं हो गया! वैसे अभी समय भी सूचना दे रहा है - तीव्र पुरुषार्थी बनने का। तो बापदादा खुश है, परिवार भी खुश है और सबको मुबारक दे रहे हैं। खुशी है बाप को। कितने देशों से देखो इकट्ठे हुए हैं। अच्छा।

चारों ओर के दूर बैठे दिल में समाने वाले बच्चों को बापदादा भी देख रहे हैं। सभी के प्यार की खुशबू मधुबन में पहुंच रही है। तो सभी अभी तीव्रगति से चलना है, तीव्र पुरुषार्थ करना है, तीव्रता दुनिया के लोगों में सुख की लानी है। दुःखी को सुखी करना है। यह सुखी करने का सन्देश दे करके सभी को सुखी बनाना है, इस सेवा में तीव्रता है

भी और लानी भी है। अच्छा। सबको दिल का बहुत-बहुत यादप्यार स्वीकार हो।

**मोहिनी बहन से:-** ऐसे ही एमर्जेन्सी में तीव्र पुरुषार्थ करना। ऐसा तीव्र पुरुषार्थ करो जो सब देख करके चक्रित हो जाएं वाह इसने तो कमाल कर दी। पहले से ही चेक कराते रहो। छोड़ देती हो ना, चेकिंग बीच-बीच में कराती रहो तो क्या है, होने के पहले ही दवाई हो जायेगी। समझो हर 15 दिन या मास में कराना ही है चेकिंग। फिर ठीक रहेंगी। बहुत अच्छा।

**नीलू बहन से:-** सहज है ना यात्रा। मुश्किल तो नहीं है। (पास हो गई) पास ही रहना। (गुल्जार दादी ने मोहिनी बहन और नीलू बहन दोनों को बहुत अच्छी सकाश दी) सभी ने दी। मधुबन को कोई भूल नहीं सकता है। मधुबन तो सभी के रग रग में समाया हुआ है। अच्छा।

**दादी जानकी से:-** लण्डन तो जा रही हो ना, अगर तबियत चलने लायक हो जाए तो जाना, नहीं तो नहीं जाना। (अमेरिका वाले बहुत तैयारी कर रहे हैं) तैयारियाँ क्या भी करें, आप चला सकती हो तो चलाना। आप अपनी तबियत को देख चल सकती हो तो चलाओ।

**तीनों वरिष्ठ भाईयों से:-** बापदादा ने आपकी मीटिंग का समाचार सुना। तो जो सोचा है वह अच्छा सोचा है और उसी अनुसार करते चलो। मदद मिल भी जायेगी। थोड़ा फैलायेंगे ना तो मदद देने वाले भी आ जायेंगे। बाकी जैसे सोचा है वैसे ठीक है। (युनिवर्सिटी के बारे में रमेश भाई ने पूछा)

बापदादा समझते हैं पहले भिन्न-भिन्न युनिवर्सिटी में सेवा करो। जैसे एक युनिवर्सिटी में कनेक्शन किया है ना ऐसे और युनिवर्सिटी में पहले सेवा करो। उन्हों की सेवा करके साथी बनाओ। अभी कितनी युनिवर्सिटी रही हुई हैं, पहले उनकी सेवा करो, पीछे आपेही आपको आफर करेंगे, कहेंगे आपको इतना खर्चा करने की जरूरत नहीं है। जैसे एक युनिवर्सिटी में किया है तो उससे प्रसिद्ध तो हुआ है ना। ऐसे 10-12 युनिवर्सिटी जो बड़ी-झुंडी हैं उसको अपनाकर देखो। तो वही आपको युनिवर्सिटी बनाकर देंगे, आपको खर्चा करने की जरूरत नहीं है। बापदादा खुश है ऐसे मिलते रहो और फाइनल करते रहो।

(चण्डीगढ़ में प्लैटिनम जुबली का कार्यक्रम बहुत अच्छा हुआ, पुरी में होने वाला है) सभी जगह में अपने अपने विधि प्रमाण खुशी से और खुली दिल से किया है। सब तरफ की रिजल्ट अच्छी है।

### **भ्राता रामनारायण मीणा, उपाध्यक्ष - राजस्थान विधानसभा**

अभी ब्राह्मण कुल में विशेष पार्ट बजाओ। (आपके बच्चे हैं) सबसे अच्छा बच्चे बालक सो मालिक हो। बालक सदा मालिक होता है। अमृतवेले उठके जितने बजे भी उठ सको तो अमृतवेले बाप को याद करके रोज बाप से आशीर्वाद लो। बाप से आशीर्वाद मिलेगी जिससे खुश भी रहेंगे, निर्विघ्न भी रहेंगे। सब ठीक हो जायेंगे। आपमें शक्ति भरेगी तो उन्हों में भी शक्ति भरेगी। हो जायेगा सिर्फ यह थोड़ा उठके बाप को याद करके शक्ति लेते रहो। मेरा बाबा कहना और शक्ति लेना।

मधुबन देखा, परिवार देखा अच्छा लगता है ना। अभी इसी परिवार में जितना नजदीक आयेंगे ना उतना लाभ मिलता जायेगा।

**सुरेश ओबेराय:-** जैसे सर्विस उठाई है ना वैसे करते चलो।

**शिवानी बहन से:-** वरदान है। बाप से वरदान अच्छा मिला है।

## “मेरे को तेरे में परिवर्तन कर बेफिक्र बादशाह बनो, बाप की मोहब्बत और सेवा में मन को इतना बिजी कर दो जो व्यर्थ आने की मार्जिन न रहे”

आज बापदादा चारों ओर के अपने बेफिक्र बादशाहों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा सवेरे से उठ बेफिक्र स्थिति में स्थित हो हर कर्म करता है। हर एक बच्चे को अनुभव है कि यह बेफिक्र बादशाह की जीवन बादशाही भी और बेफिक्र भी, कितनी प्यारी लगती है क्योंकि आप सभी ने बाप को फिक्र देकरके फखुर ले लिया है। फखुर भी अविनाशी फखुर ले लिया है। हर एक अनुभव करते हैं कि यह बेफिक्र जीवन कितनी प्यारी है। दिनरात कोई भी बात का फिक्र नहीं लेकिन फखुर है। जानते हो कि यह बेफिक्र रहने की जीवन बाप ने इस एक जन्म के लिए नहीं लेकिन अनेक जन्मों के लिए बेफिक्र बादशाह बना दिया। अभी अनुभव करते हो बेफिक्र जीवन अगर है तो सदा मस्तक में दिव्य ज्योति चमकती रहती है। और अगर फिकर है तो माथे पर अनेक प्रकार के दुःखों का टोकरा भरा हुआ होता है। यह बेफिक्र जीवन की विधि बहुत सहज है। जो भी हद का मेरा-मेरा है उसको तेरा कर दिया। मेरा और तेरा में एक मात्रा का ही फर्क है। मे और ते। लेकिन मेरे को तेरा करने से जीवन कितनी खुशनुमा बन जाती है। बन गई है ना! कांध हिलाओ, बन गई। बेफिक्र जीवन बन गई।

अभी बापदादा यही हर बच्चे से चाहता है कि फिकर वाली जीवन का आधार है व्यर्थ संकल्प, तो हर बच्चे के अन्दर व्यर्थ संकल्प का निशान भी नहीं रहे क्योंकि जब मेरे को तेरे में बदल दिया तो आप क्या हो गये? आप हो गये बेफिक्र बादशाह और यह बेफिक्र बादशाह की जीवन कितनी प्यारी है। हर कर्म करते बेफिक्र बादशाह। कोई फिक्र नहीं क्यों, क्या, कैसे, कब तक... यह सब समाप्त हो गये। बापदादा आज इस सीजन के लास्ट दिन यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा व्यर्थ को मेरे के बदले तेरा कर दे। बाप आपेही भस्म कर देंगे। आप सिर्फ एक मात्रा का अन्तर करो, मंजूर है! हो सकता है? अगर हो सकता है तो हाथ उठाओ। बहुत अच्छा क्योंकि यह 5-6 मास आप सभी को विश्व के आगे दुःखी आत्माओं को पावरफुल वृत्ति द्वारा सुख शान्ति की किरणें देनी हैं। इसी में ही अपना मन बिजी रखना है। व्यर्थ संकल्प भी किसमें आते हैं? मन में आते हैं ना! तो बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बेफिक्र बादशाह बच्चा अपने मन को अर्थात् वृत्ति को इतना बिजी रखे जो व्यर्थ को आने की मार्जिन ही नहीं रहे। मेहनत नहीं करनी पड़े लेकिन बाप के मोहब्बत में इतना बिजी रहो, वृत्ति की सेवा में इतना मन को बिजी रखो जो युद्ध भी नहीं करनी पड़े। कई बच्चे कहते हैं चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाते हैं। इसको क्या कहेंगे? कि मन को बाप के प्यार और सेवा में बिजी नहीं रखा। सभी से पूछते हैं कि आपका प्यार बाप से कितना है? तो क्या कहते? बेहद है। तो जिससे प्यार होता है उसका कहना मानना कोई मुश्किल नहीं होता। तो आप सभी का बाप से अटूट प्यार है ना! कि कभी-कभी है? सदा है या कभी-कभी है? जो कहते हैं सदा प्यार है वह हाथ उठाओ। सदा प्यार है, देखो सोचो, सदा प्यार है तो बाप का कहना और बच्चे का करना। यह तो जानते हो ना!

तो अभी इस सीजन में बापदादा बच्चों को यही दृढ़ संकल्प कराने चाहते हैं, तैयार हो ना! कांध हिलाओ। तैयार हो दृढ़ संकल्प करने के लिए? पीछे वाले तैयार हैं? मातायें भी तैयार हैं? पाण्डव भी तैयार हैं? अच्छा हाथ उठाओ। इसमें दो-दो हाथ उठाओ। हाथ उठाते हो तो बापदादा को खुश तो कर देते हो। अभी जैसे यह हाथ उठाया ऐसे मन का हाथ उठाओ। कभी भी व्यर्थ संकल्प को आने नहीं देंगे। उनका काम है आना, आपका काम क्या है? समाप्त कर देना। तो इस सीजन में बापदादा ने पहले भी कहा है कि दो बातों का ध्यान रखना है एक तो संकल्प, दूसरा समय। जानते हो आप, इस संगम का समय एक-एक मिनट का कनेक्शन 21 जन्म के साथ है। और इस समय बापदादा का बच्चों से, बच्चों का बाप से प्यार है। तो संगम समय का एक सेकण्ड, सेकण्ड नहीं है क्योंकि

21 जन्मों का कनेक्शन है। अगर अब नहीं समय को बचाया तो 21 जन्म जो बाप से प्यार है और हर एक चाहता है कि बाप के साथ अब भी रहें, साथ भी चलें। अपने घर लौटना है ना अभी। तो घर में भी साथ में चलें और फिर राज्य में भी बापदादा के साथ विशेष ब्रह्मा बाबा के साथ राजधानी में नजदीक साथ में आयेँ इसलिए ब्रह्मा बाप तो फरिश्ता रूप में है और आपको साथ में चलना है तो क्या करना पड़े? फरिश्ता बनना पड़े ना! फरिश्ता बनेंगे, बनना ही है ना!

बाप ब्रह्मा के हाथ में हाथ देके साथ चलना है, तो हाथ क्या है? फरिश्ते को स्थूल हाथ तो हैं नहीं। ब्रह्मा बाप का हाथ क्या है? श्रीमत। तो बापदादा की यही श्रीमत है कि अब बेफिक्र बादशाह बन सदा जैसे आपकी जगदम्बा ने पुरुषार्थ किया, बाप का कहना और जगत अम्बा का करना। ऐसे जगत अम्बा को फॉलो करो। समय और संकल्प को सफल करना ही है। व्यर्थ नहीं जाये। सुनाया ना एक-एक संकल्प का 21 जन्म का कनेक्शन है। तो बापदादा यही चाहते हैं कि सदा मन को बिजी रखो। चाहे मुरली के मनन में, चाहे सेवा में, हर समय बिजी रहो। अपना चार्ट बनाओ हर समय बीच-बीच में जो बापदादा ने ड्रिल सुनाई है भिन्न-भिन्न, जानते हो ना ड्रिल अशरीरी बनने की। अपने तीन स्वरूप स्मृति की ड्रिल। जानते हो ना! जैसे बाप के तीन रूप हैं ऐसे आपके भी तीन रूप हैं। ब्राह्मण, फरिश्ता और देवता, इन तीनों रूपों में ड्रिल द्वारा अपने मन को बिजी रखो इसलिए महामन्त्र क्या है? मनमनाभव।

बाकी बापदादा का हर बच्चे से बहुत-बहुत प्यार है इसलिए बापदादा यही चाहते हैं कि हर बच्चा विजयी भव के वरदानी बनें। सुनाया था ना कि कई बच्चे सोचते हैं हम विजयी तो बनें लेकिन माला तो 108 की है, तो विजयी बनके माला में तो आ नहीं सकेंगे लेकिन बापदादा का इतना प्यार है कि आप विजयी बनो तो बापदादा माला में भी लड़े लगा देगा। आप सिर्फ विजयी बनो। तो क्या संकल्प है? विजयी बनना ही है ना! कि सिर्फ 108 विजयी बनेंगे? नहीं। बाप का हर बच्चा विजयी है। बापदादा हर बच्चे के मस्तक में क्या देख रहे हैं? विजय का तिलक क्योंकि साधारण रूप में बाप को पहचान लिया है ना! चाहे लास्ट बच्चा है, पुरुषार्थ में ढीला है लेकिन उसमें यह विशेषता है कि साधारण रूप में आये हुए बाप को पहचान मेरा बाबा तो कहता इसलिए हर एक बच्चे को हिम्मत रख विजय प्राप्त करनी ही है। सिर्फ क्या करना है? कोई मेहनत की बात नहीं है, प्यार की बात है। बापदादा से प्यार है, परिवार से प्यार है तो प्यार वाले से अलग नहीं रहा जाता है। तो ब्रह्मा बाबा से कितना प्यार है? जो समझते हैं कि ब्रह्मा बाप से शिव बाप से हमारा अटूट प्यार है वह हाथ उठाओ। अटूट, अटूट? बहुत अच्छा। तो दूसरी सीजन में बापदादा क्या देखने चाहता है? जानते तो हो। 5 मास 6 मास मिलना है आपको, व्यर्थ से समर्थ संकल्प करने में।

तो बोलो, मधुबन वाले उठो, चाहे नीचे चाहे ऊपर। बहुत हैं। तो मधुबन वाले बापदादा को प्यारे हैं। ऐसे नहीं दूसरे प्यारे नहीं हैं। वह प्यारे हैं लेकिन मधुबन वालों से एक बात का विशेष प्यार है, वह क्या? मन्सा में याद तो सब करते हैं। योगी तू आत्मायेँ तो सभी हैं, ज्ञानी आत्मायेँ भी सभी हैं लेकिन मधुबन वालों को अपना भविष्य सहज बनाने की एक लिफ्ट है। वह लिफ्ट क्या है? जो भी मधुबन में आते हैं, उनकी सेवा के निमित्त हैं। जैसे खाना बनाने वाले जो भी कोई ड्युटी करने वाले हैं। बापदादा तो कहते हैं कोई झाड़ू लगाने वाला भी है ना, वह भी भाग्यवान है क्यों? जो भी आते हैं वह यह वायुमण्डल देख आपके दिल के प्यार की शक्ति देख खुश हो जाते हैं। चाहे खाना बनाने वाला, चाहे कोई भी ड्युटी वाला है लेकिन मधुबन वालों को चांस है। मधुबन का प्यार और शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने का, इसलिए बापदादा मधुबन वालों को बहुत-बहुत मुबारक दे रहे हैं कि यह सीजन समाप्त की और आगे के लिए भी अपने मन में आत्माओं को सन्तुष्ट करने में और शक्तिशाली अनुभव कराने में निमित्त बनते रहेंगे इसलिए सब ताली बजाओ मधुबन वालों के लिए। अच्छा।

आज बापदादा को अमृतवेले मधुबन के सेवाधारी सामने आये। हर एक से बापदादा वतन में भी मिले और खास आपको पहले भी बताया है कि चार बजे के समय आपकी एडवांस में गई हुई विशेष दादियां जरूर आती हैं। तो

आज भी विशेष दादियाँ और विशेष भाई पहुंचे थे। उन्होंने खास मधुबन वालों को इमर्ज करने के लिए कहा। विशेष दीदी और दादी दोनों ने और विशेष भाईयों ने भी मधुबन वालों को याद किया। और दादी ने विशेष याद दी और साथ में वतन का आम, जानते हो ना वतन का फल कितना बढ़िया होता है, लाठी नहीं लगानी होती है, जो फल चाहिए वह आप हाथ से ही ले सकते हो। तो दादी ने कहा आज मधुबन वालों से आम की पिकनिक करते हैं। दूसरी दादियां तो साथ में थी और विशेष भाई भी थे। तो बापदादा ने कहा उन्हीं से पूछो तो मधुबन के लिए आपको मन में क्या आता है? तो दादी क्या बोली? पता है, जानते तो हो, दादी को तो जानते हैं ना! दादी कहती थी मेरी यह अभी तक भी दिल है कि हर एक मधुबन वाला चाहे पुरुषार्थ में कोई भी कमी अभी रह गई है उसका तो पुरुषार्थ करना है लेकिन मैं एक बात चाहती हूँ, मधुबन वालों से। वह क्या चाहती हूँ? एक-एक मधुबनवासी बाप समान बन जाये। वैसे तो सभी को बनना है लेकिन मधुबन विशेष है, मधुबन वालों को दादी से प्यार था, यह दादी कहती थी मुझे पता है। तो प्यार के रिटर्न में मैं यही चाहती हूँ कि जैसे मम्मा ने लक्ष्य रखा बाबा ने कहा मम्मा ने किया, यह तो मधुबन वाले जानते ही हैं। ऐसे ही अमृतवेले से लेके रात तक हर एक मधुबन वाले अगर बाबा के साथ मेरे से भी प्यार है, दादियों से भी प्यार है, तो जैसे मम्मा ने बाप की हर राय जीवन में लाई, ऐसे हमने भी लाई। तो अगर दादियों से प्यार है, तो यही करके दिखायें, सवेरे से रात तक ऐसा कोई संकल्प बोल कर्म नहीं लावें जो दादियों को या बाप को या किसी को भी पसन्द नहीं हो। यह हमारा सन्देश खास मधुबन वालों को देना। तो हमने (गुल्जार दादी ने) दादी को कहा, दादी आप मधुबन में कभी चक्र लगाती हो? अभी मैं (गुल्जार बहन) वतन का समाचार मधुबन वालों को सुना रही हूँ। तो मैंने गुल्जार बहन ने, उनको कहा दादी मधुबन वालों को तो आप जो कहेंगे वह करेंगे। तो मैंने ठीक कहा, करेंगे? हाथ उठाओ। दो-दो हाथ उठाओ। करेंगे? बहुत अच्छा।

तो आज इस सीजन का लास्ट है ना, तो और भी वतन में रौनक थी। दूसरे आप मधुबन वाले तो मिलके मर्ज हो गये, लेकिन दादियों ने डबल विदेशियों को भी इमर्ज किया। डबल विदेशी उठो। तो विशेष दादियों के बदले, दादी कह रही थी तो दादी ने कहा कि मुझे डबल विदेशियों की यह बात बहुत अच्छी लगती है क्योंकि जब हम वहाँ थे और इन्हीं की सीजन शुरू हुई तो मैंने देखा इन्हीं को मधुबन में आने के लिए टिकेट के लिए कितनी युक्ति से इकट्ठा करते थे टिकेट का पैसा और जब हम सुनती थी तो ऐसे-ऐसे इकट्ठा करके आये हैं तो मुझे बहुत प्यार आता था और डबल विदेशियों का मैंने देखा उमंग उत्साह भी बहुत अच्छा था। आने से ही मेरा बाबा कहके इतने खुश होते थे जो मेरा कहने में ही मेरा हो जाते थे, उनकी शक्ल, उनका उमंग बहुत अच्छा दिखाई देता था, इसलिए डबल विदेशियों को हम और बापदादा कहते थे कि डबल विदेशी मधुबन का श्रृंगार हैं। तो अभी भी डबल विदेशी जो कार्य भी मधुबन का होता है वह बहुत रूचि से करते हैं इसलिए हमारी भी डबल विदेशियों को बहुत बहुत बहुत बहुत यादप्यार देना और कहना सदा बाप के दिल में आप हो और आपके दिल में बाप है, यही वरदान हमारे तरफ से देना। तो यह था आज अमृतवेले वतन का समाचार।

बाकी सभी चारों ओर के जो दूर बैठे हैं या सम्मुख बैठे हैं सभी को बापदादा क्या देख रहे हैं? बापदादा देख रहे हैं हर एक के मस्तक में चमकती हुई ज्योति चमक रही है। सभी के मन में संकल्प यही है कि हमारे को कैसा बनना है? जैसे बाप वैसे हम। यह उमंग उत्साह भी सभी के मन में है।

बाकी तो इस सीजन में बापदादा टीचर्स को विशेष उठाने चाहते हैं। सब टीचर्स उठो। देखो। कितनी टीचर्स हैं। चौथा हाल तो टीचर्स हैं। तो टीचर्स को देख बापदादा भी खुश होते हैं क्योंकि बाप समान सीट का भाग्य मिला है। बाप की मुरली सुनाने की सीट मिली है। बाप हमेशा टीचर्स को साथी कहते हैं। अभी टीचर्स के लिए बापदादा एक बात चाहते हैं। सुनायें क्या? बापदादा चाहते हैं कि हर एक टीचर चेहरे से ब्रह्मा बाप समान ऐसे खुशनुमा नज़र आये। नज़र आवे अन्दर पुरुषार्थ होगा भी लेकिन आपकी सूरत से बाप प्रत्यक्ष हो। कोई को भी देखे तो आपमें बाप

की चमक दिखाई दे। ऐसे चेहरे से सेवा करने वाली बाप को प्रत्यक्ष कर ही लेंगी। अब समय आ गया है, बाप को अपने चेहरे से प्रत्यक्ष करने का। तो टीचर्स को सदा मेरा बाबा तो स्वतः ही याद है। अभी बाप को चेहरे से प्रत्यक्ष करना है। कर सकते हैं ना! कर सकते हैं तो करो। देखो अभी तक की रिजल्ट में क्या सभी कहते हैं। ब्रह्माकुमारियां बहुत अच्छा काम कर रही हैं, बाप प्रत्यक्ष नहीं है। वह अभी भी गुप्त है। तो अभी समय समीप आ रहा है तो आप द्वारा चाहे निमित्त टीचर्स हैं या कोई भी बच्चा है, अभी बाप को प्रत्यक्ष करो। ब्रह्माकुमारियां अच्छा कार्य कर रही हैं, यह तो हो गया। यहाँ तक पहुंच गये हो। लेकिन अभी यह प्रत्यक्ष करो कि स्वयं परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रत्यक्ष हो ब्रह्माकुमारियों को ऐसे योग्य बना रहे हैं। अभी यह प्वाइंट रही हुई है। गीत तो गाते हैं मेरा बाबा आ गया, लेकिन अभी अन्य आत्माओं के अन्दर यह प्रत्यक्ष हो कि भगवान स्वयं प्रत्यक्ष हो यह कार्य बहिनों द्वारा या भाईयों द्वारा करा रहे हैं। यह प्रत्यक्षता करनी है ना! कब करेंगे? अब। क्या कहेंगे? अब ना! (अभी शुरू करेंगे, अगली सीजन तक हो जायेगा) आप सभी साथ में हो, अगली सीजन तक हो जायेगा? हाथ उठाओ जो समझते हैं! थोड़े हाथ उठा रहे हैं। जो हाथ नहीं उठा रहे हैं वह देखेंगे, और आप करेंगे। टीचर्स ने तो संकल्प किया है ना! क्योंकि देख रहे हो बापदादा तो कहते ही हैं कि सब अचानक होना है। कोई बच्चे समझते हैं अचानक, अचानक भी बहुत समय हो गया है। अभी होना चाहिए। लेकिन अचानक तब हो जब बच्चे भी बाप समान बन जायें। आपकी सूरत मूरत एक-एक बोल बाप को प्रत्यक्ष करे। हो जाना तो है ही। होना ही है अभी सिर्फ निमित्त बनना है। अभी अगली सीजन में क्या करेंगे? एक तो अपने को बाप समान बनायेंगे। जो भी कमी रह गई है, उसको सम्पन्न करेंगे। और बापदादा को खुशी है किस बात की? तो बच्चों ने जैसे अभी छोटे मोटे सेन्टर ने वाणी द्वारा प्रसिद्ध किया कि हम क्या कार्य कर रहे हैं। वायुमण्डल को चेंज किया है। इसकी बापदादा मुबारक दे रहे हैं। जिन्होंने जहाँ भी प्रोग्राम्स किये हैं, अच्छे किये हैं, और सभी के अटेंशन में भी आया है कि ब्रह्माकुमारियां सचमुच गुप्त रूप में अपने कार्य का समय 75 वर्ष पूरा किया है। अभी यह कहें कि ब्रह्माकुमारियों का भगवान बाबा आ गया है। लक्ष्य है ना! तो अगले सीजन तक यह कार्य आरम्भ हो जाना चाहिए। इसका प्रत्यक्ष प्रोग्राम बनाना। प्रोग्राम बनाते हैं ना, मीटिंग करते हैं ना! तो मीटिंग में यह प्रोग्राम बनाओ कि अभी सब बच्चों को पता तो पड़े कि वर्सा देने वाला बाप आ गया। वंचित नहीं रह जाएं। बाप को तो बच्चों के दुःख को देख बहुत तरस पड़ता है। जब दुःख में चिल्लाते हैं, बाप को तरस पड़ता है। आप देव और देवियों को भी बहुत पुकारते हैं। तो अगली सीजन में एक तो व्यर्थ का नामनिशान नहीं, मंजूर है? मंजूर है! दिल का हाथ उठाओ। दिल का हाथ उठाना। व्यर्थ होता क्या है, यह मालूम ही गुम हो जाए। जैसे स्वर्ग की शहजादियां आती हैं ना तो उनको दुःख और अशान्ति का पता ही नहीं है, कहते हैं क्या कहते हैं, यह क्या होता है। ऐसे ही ब्राह्मण परिवार में व्यर्थ का पता ही न हो, व्यर्थ होता क्या है। स्वचितन, स्वचितक। अच्छा।

**सेवा का टर्न दिल्ली और आगरा:-** अच्छा है, सभी टी.वी. में रौनक देखो (मेरा बाबा की पट्टी सब हिला रहे हैं) बहुत अच्छा। अभी झण्डे नीचे करो। अच्छा। दिल्ली वालों को तो अपनी दिल बड़ी करनी पड़ेगी। क्यों? जो भी ब्राह्मण हैं वह देवता बनके कहाँ आयेंगे? दिल्ली में ही आयेंगे ना! तो दिल्ली वालों को बहुत बड़ी दिल बनानी पड़ेगी। देखो अगर ब्रह्मा बाप भी कृष्ण बनके आयेंगे, तो भी कहाँ आयेंगे! दिल्ली में ही आयेंगे। तो दिल्ली वालों को अभी भी दिल्ली के ब्राह्मण संख्या दिल खोलके बढ़ानी पड़ेगी। सब ज़ोन से ज्यादा संख्या दिल्ली में होनी चाहिए। झण्डा लहराया है ना यहाँ, ऐसे एक-एक दुःखी आत्माओं के दिल में बाप का झण्डा लहराओ। तो झण्डे यह व्यर्थ नहीं जायें, यही झण्डे सत्य रूप से दुःखियों के दिल में लहराओ। बाकी सेवा तो हो रही है। सेवा तो करते हैं लेकिन बापदादा ने देखा कि इस वर्ष कोई भी ज़ोन सेवा में पीछे नहीं गया है। सभी ने दिल बड़ी करके खुशी-खुशी से जो भी प्रोग्राम किये हैं, बहुत सुन्दर रूप से और लोगों में यह स्पष्ट किया है कि आप आत्मा हो, शरीर नहीं हो। यह बात



मैजारिटी ने माना है। अब आत्मा जैसे प्रत्यक्ष की है, ऐसे परमात्मा की प्रत्यक्षता का पक्का करो। इसमें बापदादा देखेंगे कि नम्बरवन कौन लेता है? आत्मा का पाठ तो कईयों ने पक्का किया है अभी परमात्मा वर्सा दे रहा है, कुछ तो वर्सा ले लेवें। आपका परिवार है ना! वंचित नहीं रह जायें। तो क्या करना है? वह भी बता दिया। बाकी दिल्ली फाउण्डेशन है। वह भी दिन आयेगा जो यह सारी मिनिस्ट्री सोचेगी कि यह जो कह रहे हैं वह मानना ही पड़ेगा। यह कमाल करके दिखाओ। नम्बरवन दिल्ली करे या कोई भी करे, उसको बापदादा इनाम देंगे। अभी जो रही हुई बात है उसको पूरा करो। उमंग है ना! उमंग है? दिल्ली वालों को तो है ना! अच्छा।

**डबल विदेशी:-** बापदादा चाहते हैं कि जैसे आपको टाइटिल मिला है डबल विदेशी, ऐसे आपका टाइटिल हो डबल पुरुषार्थी। तीव्र पुरुषार्थी। तीव्र पुरुषार्थी डबल विदेशी आये हैं। हो सकता है? जैसे डबल विदेशी हो वैसे तीव्र पुरुषार्थी। कोई भी साधारण पुरुषार्थी नहीं। बापदादा खुश होते हैं, हिम्मत रख करके पहुंच जाते हैं। कोई भी टर्न इस सीजन में नहीं देखा है जिसमें विदेशी नहीं आये हों। तो जैसे यह हिम्मत रख करके कर रहे हो। ऐसे ही अभी यह एक्जैम्पुल दिखाओ कि डबल विदेशी अर्थात् तीव्र पुरुषार्थी। हो सकता है? हाथ उठाओ। तो अगले ग्रुप में जो भी आयेंगे वह तीव्र पुरुषार्थी ग्रुप। जो आगे बढ़े, ऐसे अगले सीजन में बापदादा सभी को उठवायेंगे, जो भी तीव्र पुरुषार्थी बने हैं, बीच में रूकावट नहीं हुई है, उसको उठायेंगे। तो डबल विदेशी तो उठेंगे ही। और भी तीव्र पुरुषार्थ करना और ऐसा तीव्र पुरुषार्थ करना जो बापदादा के आगे हाथ उठा सको। ठीक है मंजूर है? पहली लाइन मंजूर है! मधुबन वालों को पसन्द है ना! यह सब मधुबन वाले बैठे हैं। पसन्द है? मधुबन वाले फिर उठो। अच्छा। यह टी.वी में आ रहे हैं। अगर बापदादा कहे कि यह कौन-कौन थे, वह टी.वी. से निकाल सकते हैं। अच्छा। तो जो भी आये हैं, वैसे तो सुन सभी रहे हैं लेकिन मधुबन वाले तीव्र पुरुषार्थियों में हाथ उठायेंगे। उठायेंगे? अभी हाथ उठाओ। अच्छा। आपको तो पदमगुणा मुबारक है। बहुत अच्छा। बापदादा नोट करेंगे, हर एक ज़ोन से कितने तीव्र पुरुषार्थी हैं। आप लिस्ट देना। हर एक ज़ोन वाले, जो नहीं भी आवे तो लिस्ट जरूर ले आवे जो तीव्र पुरुषार्थ करते हैं उन्हीं का नाम लिस्ट लावें। ठीक है। पीछे वाले, ठीक लगता है? आपको ठीक लगता है? बहुत अच्छा। बापदादा को तीव्र पुरुषार्थी बहुत पसन्द हैं। कब तक साधारण पुरुषार्थ करेंगे। चलना है ना अभी तो घर जाना है ना! तो तीव्र पुरुषार्थी बनके जाना है ना! बापदादा को, सुनाया भी हर एक बच्चा विजयी हो, यह अच्छा लगता है। यह हुआ, यह हुआ... यह समाचार सुनना अच्छा नहीं लगता है। तो कम से कम जो भी ज़ोन हैं, वह इन 6 मास में, सभी ने तीव्र पुरुषार्थ किया, यह रिजल्ट तो दे सकते हो। अगर 6 मास तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तब तो आदत पड़ जायेगी। पड़ जायेगी ना आदत! तो रिजल्ट लेंगे तीव्र पुरुषार्थी 6 मास में कितने बनें? और बापदादा इनाम भी देंगे। जिस ज़ोन में ज्यादा से ज्यादा तीव्र पुरुषार्थी होंगे उनको इनाम भी देंगे। मंजूर है! मंजूर है मधुबन वाले? अच्छा।

**पहली बार बहुत आये हैं:-** बहुत अच्छा। जो भी पहले बारी आये हैं उन्हीं को बापदादा बहुत-बहुत मुबारकें दे रहे हैं। क्यों? क्योंकि इस दुःख के वायुमण्डल को पार करते हुए सुख चैन के तरफ पहुंच तो गये हैं। हर एक आने वाला अपने जीवन द्वारा और आत्माओं को भी परिचय तो दे सकेंगे। और आने वालों को यह भी मालूम हो कि लास्ट सो फास्ट जाकरके आप भी पुरुषार्थी बन ऊंच बन सकते हो क्योंकि बाप को मान लिया ना! तो बाप द्वारा वर्से के अधिकारी बन गये। बापदादा को खुशी है कि समय समाप्त होने के पहले अपने घर में तो पहुंच गये। बाप को भी खुशी है कि बच्चे अपने परिवार में पहुंच गये हैं। अपने घर में पहुंच गये हैं। वह है कार्य करने का स्थान लेकिन घर परमात्मा का घर सो आपका घर इसलिए बाप पदमगुणा खुश है कि बिछुड़े हुए बच्चे अपने परिवार में, अपने घर में पहुंच गये हैं। अभी लास्ट सो फास्ट बन सकते हो। मार्जिन है। अगर तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो जितना आगे बढ़ने चाहो उतना बढ़ सकते हो। सिर्फ अटेंशन देना पड़ेगा बस। और बापदादा को तो खुशी होगी कि वाह बच्चे वाह! तो भले आये, और आते हुए अपने आपको आगे बढ़ाते रहना। तीव्र पुरुषार्थ करते रहना, ओम् शान्ति। अच्छा।

सभी चारों ओर के बच्चों को बापदादा का दिल का यादगार और साथ-साथ बाप हर एक बच्चे को अपने स्वमान के नशे में निश्चय में देख हर्षित होते हैं, कभी भी स्वमान को नहीं छोड़ना। स्वमानधारी अर्थात् सदा सर्व प्राप्तवान, स्वमान की लिस्ट बड़ी लम्बी है, रोज़ एक-एक स्वमान स्मृति में रख स्वरूप में लाते तीव्र पुरुषार्थी बन आगे बढ़ते चलो। बापदादा को दिल में बिठाके और अपने को बापदादा के दिल में बिठाके निर्भय होके मास्टर सर्वशक्तिवान बन चलते रहो, उड़ते रहो और उड़ते रहो। ओम् शान्ति।

**मोहिनी बहन से:-** चलना आ गया है ना। चलते जाना। साथ हैं, हाथ है और क्या चाहिए।

(दादी जानकी जी आज तबियत के कारण स्टेज पर नहीं आई हैं) बापदादा तो सामने देख रहा है, बच्ची कहाँ भी है लेकिन बाप के दिल में बैठी है। बापदादा बच्ची को सर्व शक्तियों की किरणें दे रहे हैं। सेवा के निमित्त बनी हुई आत्मा हो इसलिए सभी आत्मायें भी परिवार भी आपको यादगार दे रहा है। निमित्त हो, निमित्त बनना ही है। बाकी यह थोड़ा बहुत हिसाब किताब, यह भी चुक्ती हो ही जायेगा। बापदादा और परिवार की शुभ आशायें आपके साथ हैं और सदा रहेंगी। अच्छा।

**परदादी से:-** ठीक है, हर्षितमुख। बहुत अच्छा है। कितनी भी कुछ तकलीफ हो लेकिन शक्ल से नहीं लगता। साक्षी होके चल रही हो। साक्षी होके चलने में होशियार हो। नम्बर ले लेंगी।

**तीनों भाइयों से:-** यह मिलने की विधि बहुत अच्छी है। अभी विशेष यही है कि वायुमण्डल को और पावरफुल बनाओ। जो दरवाजे से कोई आवे तो अनुभव करे कि कौन से स्थान पर आ रहे हैं। शान्ति तो अनुभव करते हैं लेकिन शक्ति की अनुभूति हो कि यहाँ से जो चाहे वह मिल सकता है। ऐसा वायुमण्डल कहाँ नहीं देखा है, विचित्र स्थान है यह। यह अनुभव करें। और आपस में मिलकर जो भी डिपार्टमेंट वाले हैं उन्हों को सप्ताह में एक या दो बारी आपस में कोई विषय पर टाइम निकालके हालचाल पूछके कोई प्रबन्ध चाहिए, सैलवेशन चाहिए, वह भी पूछे और साथ-साथ कोई न कोई प्वाइंट का होमवर्क देवे जो फिर दूसरी बारी पूछे। तो हर एक डिपार्टमेंट में यह होना चाहिए। नहीं तो सिर्फ कामकाज करते हैं ना बिजी हो जाते हैं। आपस में कुछ रूहरिहान भी करें। जैसे तीव्र पुरुषार्थी ग्रुप करता है ना। तो यह इतना नहीं कर सकते। हफ्ते दो में यह प्रोग्राम अपने डिपार्टमेंट में रखें तो पता पड़ेगा क्या है क्या नहीं। कुछ चाहिए सैलवेशन तो बतावे, फिर सोच समझके देवें। मतलब कुछ ज्ञान का भी डिपार्टमेंट में हो सिर्फ काम काम नहीं। यह हो सकता है ना। हो सकता है? तो यह करो। सेन्टर वाले आपस में रात में बैठते हैं और बैठना चाहिए। चाहे हफ्ते में बैठें चाहे 15 दिन में बैठें। पॉजिटिव करेंगे तो निगेटिव दबता जायेगा। सब राय करके यह मीटिंग होगी ना उसमें राय करो।

(हू एम आई फिल्म को एज्युकेशनल फिल्म के रूप में गवर्मेन्ट ने पास किया है) सभी को यह खबर पहुंचाओ। कुछ न कुछ आवाज फैलाते जाओ। अभी क्या है, वायुमण्डल ठीक है। अभी जो भी करेंगे ना उसका प्रभाव पड़ेगा।

(अभी 6 मास तो नहीं मिलेंगे) मिलते रहेंगे, अमृतवेले तो मिलेंगे।

## “सन्तुष्टमणियों का भाग्य, दिल का गीत पाना था सो पा लिया”

आज बच्चों के याद और प्यार ने बापदादा को इस साकारी दुनिया में अपनी आकर्षण से बुला लिया। बापदादा भी बच्चों को साकारी दुनिया में साकार रूप में देख रहे हैं। चारों ओर के बच्चे भी बाप को देख रहे हैं और बाप भी साकार स्वरूप में देख रहे हैं। और दिल में चारों ओर के बच्चों प्रति वाह! बच्चे, कल्प-कल्प के पात्र बच्चों को देख खुश हो रहे हैं। हर एक बच्चे के भाग्य और प्राप्ति को देख मिलन मना रहे हैं। दिल ही दिल में हर बच्चे के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। हर बच्चे के चेहरे में चमकता हुआ भाग्य दिखाई दे रहा है। मस्तक में लाइट की प्राप्ति चमक रही है। हाथों में ज्ञान का भण्डार दिखाई दे रहा है। दिल में दिलाराम दिखाई दे रहा है। पांव में कदम में पदम दिखाई दे रहा है। ऐसा भाग्य देख हर एक का चेहरा चमक से चमक रहा है। सभी चारों ओर के बच्चे सन्तुष्ट स्वरूप दिखाई दे रहे हैं। ऐसे चेहरे चमकते हुए देख अन्य आत्मायें भी सोचती हैं इन्हों को क्या मिला है! तो आप क्या जवाब देंगे? जो पाना था वो पा लिया...। सब सन्तुष्ट मणियों के रूप में चमक रहे हैं। ऐसी अपनी मूर्त को आप भी देख रहे हो ना! बापदादा भी ऐसी सन्तुष्टमणि आत्माओं को देख क्या गीत गाते हैं! वाह मेरे सन्तुष्ट आत्मायें वाह!

तो आज सिर्फ बच्चों का दिल का उल्हना पूर्ण करने के लिए आये हैं। आप सभी का भी उल्हना तो पूरा हुआ ना! आगे जैसे ड्रामा निमित्त बनायेगा ऐसे मिलते रहेंगे। आज इतना ही ड्रामा में मिलन है।

सभी बच्चों ने बहुत अच्छी रथ की सेवा की है। बापदादा सभी सेवा के निमित्त आत्माओं को विशेष मुबारक दे रहे हैं। अभी सिर्फ बच्चों का मिलने का उल्हना पूरा करने आये हैं। तो सभी ठीक है! ठीक है सभी हाथ उठाओ। रथ की भी सेवा करने वालों को दिल की मुबारक है। चाहे कहाँ भी रथ को रहना पड़ा लेकिन बापदादा ने देखा गुजरात भी कम नहीं है। कहाँ हैं गुजरात के! तो बापदादा और साथ में हमारे निमित्त बने हुए पाण्डव निर्वैर बच्चे ने भी बहुत साथ दिया। आओ। (सरला दीदी को) बहुत अच्छा किया। सभी दादियों को निमित्त बन सम्भालने के लिए आपको और आपके साथियों को बहुत-बहुत मुबारक हो।

(दादी जानकी के लिए) अच्छा सुना, सब ठीक हो ही जाना है।

**दादी जानकी से:-** सभी ने मिलके अच्छा पार्ट बजाया है। दादी की आवाज भी आ रही है।

आज सिर्फ मिलने के लिए ही आये हैं। अभी आते रहेंगे और मिलते रहेंगे। अच्छा।

**तीनों बड़े भाईयों से:-** अभी बापदादा कमाल देखने चाहते हैं, कौन सी कमाल देखने चाहते हैं? परिवार की आप तीनों में बहुत उम्मीदें हैं। अब बापदादा भी समझते हैं एक विचार कर अलग-अलग विचार तो होता ही है लेकिन विचार को मिलाना, वह अपने हाथ में होता है। तो बापदादा भी आप निमित्त बने हुए पाण्डवों में यह कमाल देखने चाहते हैं, विचार भिन्न-भिन्न होते हैं लेकिन मिलाना भी होता है। तो अभी तीनों यही कमाल दिखाना, तीन नहीं लेकिन तीनों एक हैं, बाकी तो सब अच्छे हैं, निमित्त होके चला रहे हैं। अच्छा।

देश विदेश के भाई बहिनों को बहुत-बहुत मुबारक हो, जो दोनों ही निमित्त दादियों की सम्भाल बहुत अच्छी की है, उसकी विशेष मुबारक है। और सभी तरफ के भाई बहिनों को विशेष दिल की याद प्यार दे रहे हैं और सदा दिल में समाये हुए हैं इसलिए सदा याद में रहना और एक दो को याद दिलाते रहना। अच्छा।

आज तो सिर्फ जो सभी को संकल्प था, मिलना है, मिलना है, मिलना है। वह शरीर के हिसाब से पूरा हुआ। अब आगे जो ड्रामा में होगा मिलते रहेंगे। बापदादा बच्चों से कभी भी दूर नहीं रह सकते। जैसे बच्चे बाप से दूर नहीं रह सकते

तो बाप भी बच्चों से दूर नहीं रह सकता। बापदादा सभी बच्चों को देख खुश है, मुबारक भी देते हैं कि अभी हर एक समझे कि मैं इस बेहद के कार्य के लिए सिर्फ स्वयं के लिए नहीं, स्वयं के साथ सेवा के भी निमित्त हूँ। अब ऐसी कमाल दिखाओ, दुनिया में हलचल और हलचल को अचल बनाने वाले निमित्त आप हो। वह अपना कार्य नहीं छोड़ते तो आप भी अपने को निमित्त समझ वह हलचल आप अचल, दोनों साथ-साथ पार्ट बजाओ। अच्छा। आज सिर्फ मिलने आये थे।

**महाराष्ट्र, मुम्बई, आंध्रप्रदेश के भाई बहिनों की सेवा का टर्न है:-** सभी हाथ हिला रहे हैं। हर एक ज़ोन को निमित्त बनने का पार्ट मिलता है। और बापदादा ने देखा कि हर एक ने पार्ट बजाया भी है और बजायेंगे भी।

**चार विंग्स, एज्युकेशन, धार्मिक, साइंस-इंजीनियर, कल्चरल और कैड ग्रुप भी आया है।** जो भी विंग्स वाले हैं, वह हर एक विंग एक दो से आगे है और अटेन्शन दे कार्य को आगे बढ़ा भी रहे हैं, उसकी मुबारक हो, मुबारक हो।

चारों ओर के बच्चों को अपना-अपना कार्य करने की मुबारक भी हो और आगे के लिए हर एक विंग या हर एक ज़ोन आगे से आगे बढ़ते रहेंगे, यह बापदादा की मुबारक है।

डबल विदेशी जो भी आये हैं, वह खड़े हो जाओ। बापदादा अभी डबल विदेशी नहीं कहते, डबल पुरुषार्थी। क्योंकि डबल पुरुषार्थी अभी भी चारों ओर बढ़ रहे हैं, छोटे छोटे स्थानों में भी अटेन्शन दे रहे हैं इसलिए सेवा की भी मुबारक है और डबल पुरुषार्थ की भी मुबारक है। अभी डबल विदेशी नहीं कहो, डबल तीव्र पुरुषार्थी कहो। ठीक है। डबल पुरुषार्थी, डबल माना तीव्र पुरुषार्थी। तो बापदादा को याद है कि डबल पुरुषार्थी कहाँ-कहाँ से आये हैं, लेकिन सबसे दूर कौन है? सबसे दूर कौन है? अमेरिका वाले। वह भी इस दुनिया के हैं। लेकिन बापदादा कहाँ से आये हैं? बच्चों ने कहा और बाप हाज़िर। चाहे शरीर का कुछ भी हो लेकिन बच्चे, बच्चे हैं। बाप सदा जी हाज़िर हो जाते हैं। अच्छा, चारों ओर के बहुत-बहुत अपना अच्छा पार्ट बजाने वाले ऐसे बाप ने कहा, बच्चों ने किया, ऐसे बच्चे सदा बाप के दिल में रहते हैं। तो चारों ओर के ऐसे बच्चों को पदमगुणा यादप्यार। अच्छा।

(जानकी दादी को सिर में चोट लगी है) यह तो होता रहता है, इसकी कोई बात नहीं है। और ही सुन्दर हो गई हो। (दादी जानकी सिर ढके हुए है) दादी दादी कहती हो ना, तो दादी का रूप भी तो देखो। यह ठीक है? (हंसा बहन, प्रवीणा बहन से) थकती तो नहीं हो। अच्छा है। (हंसा बहन से) सेवा अच्छी कर रही हो। सेवा जो भी करते हैं ना, आप लोगों को देखके उन्हीं को भी उमंग आता है इसीलिए उन्हीं की मुबारक मिलती रहती है, जो निमित्त बनते हैं। डाक्टर्स को भी याद भेजना।

(ऐसे दोनों दादियों के साथ ही क्यों हुआ) यह उत्तर ड्रामा देगा। ड्रामा। अभी इसके आगे तो कोई नहीं बोल सकता। ड्रामा, ड्रामा ही है। (नीलू बहन उल्हना दे रही है) जो बोलना हो, बोलो। अच्छा, सब बिन्दु रूप में स्थित हो जाओ।

दादी जानकी जी ने 27 नवम्बर 2012 को 7.30 बजे ओम् शान्ति भवन में क्लास कराया, डबल विदेशियों से अलग से मिली, टोली खिलाई उसके पश्चात हाल से बाहर आते समय अचानक गिर पड़ी, जिससे सिर में काफी चोट आई। दादी जी का वह विशेष क्लास आपके पास भेज रहे हैं:-

सवेरे अमृतवेले शान्तिवन डायमण्ड हॉल में थी, दिन में ज्ञानसरोवर में थी, शाम को यहाँ बैठी हूँ। कितना बड़ा भाग्य है!

राजयोग से सुख-शान्ति मिलती है, आप सबको मिली है ना? क्योंकि सब राजयोगी हो ना! हठयोगी तो नहीं हो? वैरागी भी नहीं संसार से, खुशी और शान्ति सब मिली है। अमृतवेला डायमण्ड हॉल में बहुत पावरफुल हुआ। यहाँ फिर तीन दिन की भट्टी का प्रोग्राम रखा है। और मेरे को रोज़ दो बारी गुल्जार दादी से मिलने का चांस मिलता है। सुबह और शाम को दोनों समय जाके मिलती हूँ। उस मिलन से क्या फायदा हुआ है, वो क्या बताऊँ! वह तो सूरत मूरत बताती है। मैं ओम् शान्ति करती हूँ, दादी बाबा-बाबा करती है। कितना बारी माइक देते हैं दादी कुछ बोलो, कुछ बोलो... फिर भी एक दो शब्द ही बोलती है। तो मैंने अपने से क्वेश्चन पूछा, दादी से भी पूछा इतनी शान्ति, इतना प्रेम, इतनी खुशी जो दादी में है वह मेरे में और दादी में कोई अन्तर न रहे। यह कोई रीस नहीं है, हर एक का भाग्य अपना है पर बाबा की छुट्टी है, जितना जो पुरुषार्थ करे बाबा उसको साथ देता है। चलो, वो तो निमित्त रथ है, अव्यक्त पालना देने के अर्थ उसको बाबा ने ऐसा बनाके रखा है, उसने भी अपने आपको ऐसा बनाके रखा है। चेहरा ही ऐसा है। तो हम सबका भी ऐसा चेहरा हो, यह भावना है।

किसको अनुभव है भावना बहुत काम करती है? तो अगर आपके ऊपर भावना ने काम किया है, तो आप इतनी अच्छी ऊंची भावना रखो जो अनेकों को भावना से प्राप्ति हो। वन्डर है यह कैसे हुआ? भावना से। कुछ भी हो जाये, भावना जो है उसकी गहराई में जायेंगे तो आप भी अन्दर ही अन्दर अपने आपको बड़ा देखेंगे, कोई प्रॉब्लम नहीं है। मेरी भावना है, बाबा कैसे कर रहा है... वह देख रहे हैं। ड्रामा वन्डरफुल है, बना हुआ है।

हम ईश्वर के बच्चे हैं, सारा भक्तिमार्ग भावना के आधार पर चलता है। भावना से उन्हें साक्षात्कार होता है। किसी को धन मिलता है, पुत्र प्राप्ति होती है भावना से, पर हमको कोई धन पुत्र नहीं चाहिए। सच्चाई और प्रेम, खुशी और शक्ति चाहिए नहीं पर हमें मिली है। कैसे मिली है? भावना से मिली है, भगवान ने दी है, हमने ली है। भाग्य खुला है हमारा जो मधुबन बैठे हैं। दुनिया में जहाँ मनुष्य अकेला भी शान्त नहीं रह सकता है और यहाँ मधुबन बाबा के बेहद घर में सैकड़ों के बीच रह करके भी शान्त रहें, यह कमाल किसकी है? स्थान के वायुमण्डल की। कहने में आता है कि दीवारों को भी कान होते हैं माना वायुमण्डल दीवारों से बनता है। मन्दिर, मस्जिद, चर्च या गुरुद्वारों में जाओ तो... यह ब्रह्मा बाबा ने अपना यादगार स्थान ऐसा बनाया है। जैसा मेरा बाबा है, कितना मीठा है कितना प्यारा है...। सबसे न्यारा है। ऐसा मेरा बाबा हमको यहाँ खींचता है, बच्चे, जो बनना है अब बन लो। मैं बनाने वाला बैठा हूँ। अभी बनने का टाइम है। तुमको सिर्फ संकल्प करना है मुझे यह बनना है, पॉसिबुल है ना! क्योंकि वो बना रहा है इसलिए हमको कुछ मेहनत नहीं है, मुझे बनना है, बाबा बना रहा है। इसके लिए मैं कहती हूँ मुझे सिर्फ बाबा के सामने हाज़िर रहना है। बाबा के कई सारे बड़े अच्छे अच्छे बोल सारे दिन में याद आते हैं। जैसेकि बाबा सामने आके कहे बच्चे कोई हुक्म है? मैं मुस्कराने लगी। उस घड़ी मेरी कैसी स्थिति होगी, बस इसमें सदा ही हाँ जी किया है। बाप हमारे सामने सदा हाज़िर रहेगा, यह अनुभव आज दिन तक होता है। आपको अनुभव होता है? बाबा हमारे साथ है, जहाँ भगवान साथ है, वहाँ कोई बड़ी बात नहीं है। भगवान मेरे साथ है तो इतनी शक्ति, इतनी खुशी इतना अच्छा अनुभव होता है, कभी कदम कहाँ, कभी कहाँ क्योंकि अभी कदमों में पदमों की कमाई है। जहाँ कदम होगा वहाँ मेरी कमाई है। उसमें भी बाबा ने कहा था जब तबियत कैसी भी होती है, तो टाइम टू टाइम बैठ जाओ सो जाओ परन्तु एक बारी बाबा ने कहा बच्ची

“प्रकृति साथ देगी” आज 22 साल हो गया। भगवानुवाच, हाज़िरी में फायदा है।

हरेक अन्दर देखे कितना त्याग वृत्ति, अनासक्त वृत्ति, उपराम वृत्ति रहती है? वृत्ति से दृष्टि का कनेक्शन है। त्याग वृत्ति के कारण जो बात छोड़ा है ना, उसके बाद फिर कभी बिल्कुल टच नहीं किया। देह, सम्बन्ध... कहाँ बुद्धि न जाये, उसमें भी कोई आसक्ति नहीं, उपराम वृत्ति उपर रहे। बाबा कर रहा है, करा रहा है भावना यह है, ऐसी स्थिति बनाने से देखो हमारे संग का रंग लगेगा, वह भी उपराम बन जायेगा। नहीं तो मेहनत से भी नहीं बनता है, हम तो बाबा के संग में रह करके अव्यक्ति पालना मिलने से हमारे लिये ऊपर रहना इज़ी है। जैसे हम यहाँ हैं ही नहीं रहते ही ऊपर हैं।

बाबा कहते देवताओं समान सदा हर्षित रहो, तो इसका रिहर्सल मैं कर रही थी कि देवताओं की मुस्कराहट भावना वाली है, कैसे खुश होते हैं वह खुशी मैं भी ले लूँ। वो देवता देते नहीं हैं, देवताओं को देखके खुश होते हैं। बाबा से लेके अभी हम देने वाले हैं, कितने हम भाग्यवान हैं। सुख-शान्ति दाता के बच्चे हैं, यह रिहर्सल अपने आपको जान करके करने से साधारण नहीं होते हैं, कभी कैसे, कभी कैसे यह नहीं हो सकता है। अन्दर ही अन्दर ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ते को कोई माँ बाप नहीं होता है। फरिश्ता ईश्वर का डायरेक्ट बच्चा है पर थोड़े हैं। सूक्ष्म है, बहुत हल्का है, बहुत स्वच्छ है, बहुत सच्चाई है, इससे उड़ने की ताकत मिलती है औरों को। ऐसे उड़ने वाले फरिश्तों को देख मानते हैं, नुमाशाम के टाइम फरिश्ते ऊपर घूम रहे हैं। उसमें स्थिति मेरी ऐसी हो, ऊपर घूमती रहूँ, नीचे बैठी न रहूँ। ऐसी स्थिति है! यह रिहर्सल कर रहे हो? मेरी भावना है अच्छी स्थिति हो, अकेले है तो भी ऐसे, संगठन में भी हैं तो भी ऐसे। अच्छा। ओम् शान्ति।

## “मेरे को तेरे में परिवर्तन कर डबल ताजधारी बेफिक्र बादशाह बनी”

आज सारी सभा बेफिक्र बादशाहों की दिखाई दे रही है क्योंकि फिकर बाप को देके फखुर ले लिया है। आप सब भी सबेरे से लेकर रात तक बेफिक्र बादशाह हो क्योंकि स्वराज्य मिला हुआ है। तो चेक करते हो क्योंकि बेफिक्र बादशाह की निशानी है उनका मस्तक लाइट से चमकता है और बेफिक्र बादशाह हो तो डबल ताजधारी हो। डबल ताजधारी ही बेफिक्र बादशाह है। तो आप सभी अपने को बेफिक्र और बादशाह अनुभव कर रहे हैं? अगर डबल ताज नहीं अर्थात् बेफिक्र नहीं तो माथे पर क्या आता है? किचड़े का टोकरा। तो क्या अच्छा लगता है? तो बापदादा आज हर बच्चे को डबल ताजधारी बेफिक्र बादशाह देख खुश होते हैं। तो आप सभी बापदादा के साथी अपने को ऐसे अनुभव करते हो कि कभी करते हो कभी नहीं? यह डबल ताज सारे कल्प में सिर्फ आप बच्चों को प्राप्त होता है। राजे तो बहुत बनते हैं, द्वापर से लेके राजे तो बनते हैं लेकिन डबल ताज सिर्फ आपको ही मिलता है।

तो बापदादा ऐसे बेफिक्र बादशाह बच्चों से मिलने आये हैं। फिकर दे दिया ना कि थोड़ा बहुत रह गया है? फिकर दे दो, बाप को फिकर देना आता है ना! बेफिक्र बनने की विधि बहुत सहज है, मेरे को तेरे में बदल लो। कितना सहज है मेरा और तेरा। ते और मे, इतना फर्क है। तो सभी ने दे दिया है, मेरे को तेरे में बदल दिया है? जो समझते हैं हम बेफिक्र बादशाह हैं वह हाथ उठाना। लम्बा हाथ उठाओ। उठाओ हाथ उठाओ, बापदादा देखेंगे। फिर कभी तेरे को मेरा तो नहीं कर देते हो? अगर अभी भी थोड़ा बहुत रह गया हो तो फिकर को दे फखुर ले लो क्योंकि दिन प्रतिदिन विश्व में भय तो बढ़ने वाला है लेकिन आप सभी बाप के बच्चे बेफिक्र बादशाह बन औरों को भी फिकर से दूर करेंगे। इसके लिए सहज साधन है अमृतवेले से लेके रात तक फॉलो ब्रह्मा बाप क्योंकि ब्रह्मा बाप भी साकार तन में हर जिम्मेवारी होते बेफिक्र बादशाह रहा है। चाहे कई बच्चों ने ब्रह्मा बाप को साकार में देखा नहीं लेकिन उनके चरित्र, उनकी प्रैक्टिकल लाइफ जैसे आप साकार में हो वैसे ही इतनी बड़ी जिम्मेवारी होते भी बेफिक्र बादशाह रहा है। अन्त तक भी उन्हीं की सूरत में बेफिक्र के चिन्ह दिखाई दिये। अन्त दिन तक भी कोई आधार बिना लास्ट क्लास कराया है। ऐसे हेल्दी और फखुर में वेल्दी। तो आप सभी भी बेफिक्र बादशाह बने हो ना! चाहे शरीर का हिसाब किताब है, लेकिन स्थिति सदा बेफिक्र बादशाह।

तो आज बापदादा सभी बच्चों को ऐसे ब्रह्मा समान देखने चाहते हैं। तो चेक करना, चाहे शरीर कैसा भी हो लेकिन मन सदा बेफिक्र बादशाह हो। तो नोट करना सुबह को उठते ही चेक करो, सबकॉन्सेस में भी कोई फिकर तो नहीं है? बीच-बीच में चेक करना। तो मेरे को तेरे में परिवर्तन कर देंगे क्योंकि सारे कल्प में सिवाए आप बच्चों के डबल ताजधारी बेफिक्र बादशाह कोई नहीं बना है। आपके चित्रों में सदा डबल ताज है। द्वापर में कई राजे बने लेकिन डबल ताजधारी और फिर स्वराज्य वाला राजा, ऐसे कोई नहीं बना। तो आज का अपना टाइटल बेफिक्र बादशाह सदा याद रखना।

आज भी बहुत बच्चे आये हैं, सभी बच्चों को विशेष बापदादा मिलने आये हैं। अभी उल्हनें तो नहीं देंगे क्योंकि बाप का बच्चों से कितना प्यार है जो बाप बिना बच्चों के रह नहीं सकता। तो यह टाइटल अपना अमृतवेले से लेके स्मृति में रखना मैं कौन? बेफिक्र बादशाह। अच्छा।

सभी आये हुए बच्चों से मिलन मनाया, बाप भी खुश है बच्चे भी खुश हैं। लेकिन यह अपना वरदान कभी भी भूलना नहीं। कैसे भी हो, शरीर का हिसाब शरीर जाने लेकिन मन सदा बेफिक्र बादशाह। कैसा भी पेपर हो लेकिन पेपर और अनुभवी बनाके आगे बढ़ाने वाला है, डरना नहीं। कभी पेपर से डरना नहीं। अच्छा।

आज गुजरात ज़ोन का टर्न चल रहा है। तो गुजरात भी बापदादा के प्यारे हैं, हैं तो सब ज़ोन प्यारे, लेकिन आज टर्न इसका है, गुजरात वाले उठो, हाथ ऐसे करो। बहुत अच्छा। बापदादा ने सब समाचार सुना क्या-क्या पुरुषार्थ कर रहे हैं वह भी बच्चों ने अच्छा हिसाब किताब दिखाया है। तो बापदादा यही चाहते हैं कि सदा हर बच्चा ब्रह्मा बाप समान मास्टर ब्रह्मा बनें। हर ज़ोन दिल भरके आता है। बापदादा भी खुश हो रहे हैं, ऐसे बच्चे सारे कल्प में अब

संगम में ही मिलते हैं। चाहे सतयुग में भी साथी होंगे लेकिन अभी जो पहचान से मिलते हैं वहाँ की पहचान चेंज हो जायेगी।

तो चारों ओर के बच्चों को, निमित्त गुजरात है लेकिन बापदादा के सामने फॉरिन वाले भी हैं और छोटे-छोटे गांव वाले बच्चे भी हैं। एक-एक बच्चे को बापदादा, दोनों बाप सदा बढ़ते चलो, बढ़ाते चलो, अपना राज्य नजदीक लाते चलो, तो चारों ओर के बच्चे बापदादा के सामने हैं। साकार में आप हो लेकिन दिल में चारों ओर के देश विदेश गांव सब बाबा के दिल में समाये हुए हैं। अच्छा।

**दो विंग्स आई हैं, मेडिकल विंग और सिक्युरिटी विंग:-** मेडिकल वाले अब ऐसी तैयारी कराओ, करो जो सभी जैसे बापदादा ने कहा बेफिक्र बादशाह, फिक्र नहीं तो बीमारी भी नहीं। तो ऐसा प्लैन बनाओ जो यहाँ बैठे भी खुश रहें सभी, खुशी नहीं गंवायें, ऐसी दवाई निकालो जो कभी भी कोई थोड़ा सा तन से या मन से नाखुश हो तो दवाई को याद करते ही खुश हो जाए। वह दवाई क्या है? मेरा बाबा। तो सभी के मन में मेरा बाबा बिठा दो तो यह दवाई हो जायेगी। अच्छा। बहुत अच्छा, सेवा कर रहे हैं, करते चलो विजय तो आपके साथ है ही है।

**सिक्युरिटी विंग:-** सिक्युरिटी वाले पुरुषार्थ करके मेहनत तो है, लेकिन पुरुषार्थ करके ऐसी सहज सफल होने वाली दवाई माना मन्त्र, ऐसा निकालो जो दिनप्रतिदिन अभी दुःख तो बढ़ना ही है, हलचल तो होनी है लेकिन हलचल में भी स्वयं को अचल बना सकें, ऐसे कोई सहज बात निकालो जो वह बात सामने आने से मन खुश हो जाए तो तन की बीमारी फील नहीं होगी। यह सिक्युरिटी का इलाज शार्ट में ऐसा निकालो, जैसे ब्राह्मण लोग वरदान पढ़ करके खुश हो जाते हैं ना। ऐसे कोई सैलवेशन का साधन निकालो जो कोई भी अध्ययन करने से परिवर्तन हो जाए। सिक्युरिटी के कोई छोटे-छोटे साधन तैयार करो जो जैसे समय अभी और नाजुक होने वाला है, उसमें ऐसे समय पर कार्य में आवे।

आप तो एवररेडी हो ना? एवररेडी हो कोई भी समय आवे, कैसा भी समय आवे लेकिन ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी हर एक हर समय पर सदा खुश रहे। ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी की खुशी गायब नहीं हो, हो सकता है? हो सकता है हाथ उठाओ। अच्छा। बापदादा ने सबका हाथ देखा, आप हाथ उठाओ। तो समय तो आते रहेंगे, बापदादा रिजल्ट देखेंगे, सभी ने हाथ उठाया है तो समय पर भी बेफिक्र बादशाह। बेफिक्र भी बादशाह भी। छोटी बातें भी बड़ी बातें भी आनी तो हैं, लेकिन ब्रह्माकुमार और कुमारियों के लिए कोई बड़ी बात नहीं, कल्प-कल्प देखी हुई है। कल्प-कल्प पास किया है। ऐसे अनुभवी बन अब भी ऐसे पास हो जायेंगे जैसे खेल हो। ऐसी हिम्मत है ना। हिम्मत है! दो-दो हाथ उठाओ। पीछे वाले उठा रहे हैं।

**डबल विदेशी:-** डबल विदेशियों को अपना टाइटल याद है ना? कौन हो आप! डबल पुरुषार्थी। और बापदादा ने देखा है, हिम्मत अच्छी रखते हैं। मैजारिटी समय पर पास भी हो जाते हैं। बापदादा के पास समाचार आते हैं और आपकी निमित्त दादी वह भी सुनाती रहती है। सबको वाण भरती रहती है। अच्छा। आप सदा एक बात याद रखना - हमें विजयी बनना ही है। चाहे कोई भी सरकमस्टांश हो लेकिन हमारा नाम विजयी है। विजय हमारे जीवन का सहारा है। विजय हुई पड़ी है। अच्छा। बापदादा के पास समाचार आते हैं तो विदेश की रिजल्ट भी अच्छी है, बापदादा खुश है। अच्छा।

आज तो चारों ओर के बच्चों से मिलन मना रहे हैं। सभी के दिल में बाबा, बाबा और बाबा, यह अनुभव बाप को भी हो रहा है लेकिन शरीर का हिसाब शरीर जाने। बाकी आप सभी ने और बापदादा ने भी देखा और ही सभी को बापदादा की याद ज्यादा आती है, कब मिलेगा, कब मिलेगा, कब मिलेगा.. इसमें भूलता कम है। लेकिन संगम का समय मिलन का है तो मिलते रहेंगे।

**चारों तरफ के बच्चों का यादप्यार मिलता रहता है, जितना बच्चे याद करते उससे 100 गुणा ज्यादा बाप भी बच्चों को याद करते हैं। सदा बच्चे जैसे वाह बाबा, वाह बाबा कहते ऐसे बाप भी हर तरफ के बच्चों को वाह बच्चे! वाह बच्चे! कहते हैं और संकल्प में यादप्यार देते रहते हैं। अच्छा। आगे जो ड्रामा में होगा वह होता रहेगा।**



**मोहिनी बहन ने बहुत-बहुत याद दी है:-** अच्छी याद और हिसाब चुक्तू दोनों कर रही है। बापदादा भी शक्ति देते रहते हैं। बाबा के पास याद पहुंचती है।

**दादी जानकी से:-** (गले लगी) एक को किया अर्थात् सबको किया। बापदादा तो मिलते रहेंगे। संगमयुग है ही बाप और बच्चों के मिलन का, युग ही यह है इसीलिए मिलते रहेंगे।

(निर्वैर भाई ने कुछ भाई बहनों की याद दी) जिन्होंने भी याद दी है उनको पदमगुणा यादप्यार।

रुकमणी दादी ने भी याद दिया है, उसको भी पदमगुणा यादप्यार देना।

(3-4 दिनों में कुछेक भाई बहनों के एक्सीडेंट हुए हैं)

सभी को एक-एक जो भी कुछ नीचे ऊपर हुए हैं याद देना लेकिन थोड़ा सा आगे के लिए ड्राइवर जो हैं उनको थोड़ा सा कोई अलग में समझा दे ना! थोड़ा जल्दी करते हैं, यह जल्दी नहीं करना चाहिए। वह समझते हैं हम पहले पहुंचेंगे, पहुंचेंगे तो पहले लेकिन रिजल्ट? इसीलिए खास ड्राइवर्स को अभी थोड़ा सा इशारा देना चाहिए। ठीक है।

**गीता के भगवान के बारे में:-** अहिंसा का जो किया है वह ठीक है, इसमें कई साथी हो जायेंगे, वैसे भी कई हिंसा को मानते नहीं हैं, तो उन लोगों को नजदीक लाओ तो गीता का भगवान खुद ही सिद्ध हो जायेगा।

ओम शान्ति

12-12-12

मधुबन

आबू की पावन भूमि से 12-12-12 के विशेष दिन की प्यार भरी याद के साथ शक्तिशाली शुभकामनायें स्वीकार हों।

जैसा कि आप सभी जानते हैं यहाँ शान्तिवन में बाबा की गोद में आराम से बैठे आप सभी भारत और सम्पूर्ण विश्व के आशा के जगमगाते और सफलतामूर्त रत्नों को याद कर रही हूँ। इस पूरे चक्र में 12-12-12 यह दिन यह समय कल्प बाद ही फिर से आयेगा परन्तु यह तो हम सभी जानते ही हैं कि इस संगमयुग का हर दिन मूल्यवान और हम सबको सर्व शक्तियों से सम्पन्न बनाने वाला है तो ऐसे अवसर पर मीठी मधुर शान्ति में गहरे जाने का समय निकाले और त्याग तपस्या और सेवा का मजबूत किला बनायें।

हम सभी वरदानी आत्मायें सदा सर्व शक्तिमान परमात्मा के सहारे और मदद का अनुभव करते ही हैं। फिर चाहे शरीर का कोई भी पेपर हमारे सामने आये, चाहे विश्व की हालातों के अनुसार जो भी दृश्य आ रहे हैं, उसमें बापदादा से प्राप्त ईश्वरीय गुणों, शक्तियों और प्राप्तियों के आधार पर हम सभी अचल अडोल स्थिति का अनुभव करते रहते हैं। विश्व भर में हजारों लाखों अनुभवी ब्राह्मण फैले हुए हैं उन सभी के जीवन का एकमात्र आधार है मीठा प्यारा बाबा। हमारा बाबा कल्याणकारी है, ड्रामा में हर सीन कल्याणकारी है और हम सब विश्व कल्याणकारी हैं। इससे अधिक और क्या चाहिए।

जैसा कि हम छुट्टियों के समय और वर्ष के अन्त में कदम रख रहे हैं हमारी शुभकामना है कि हम तीव्र पुरुषार्थ करते हुए गहरे दैवी सम्बन्ध के आधार पर अच्छे ते अच्छा समय बितायें।

बापदादा की प्यार भरी याद के साथ

ईश्वरीय सेवा में  
बी.के.जानकी

## “इस नये वर्ष में हर एक सन्तुष्टमणि बन सन्तुष्टता की शक्ति द्वारा समस्या प्रूफ, समाधान स्वरूप बनी”

आज बापदादा अपने चारों ओर सन्तुष्ट मणियों को देख रहे हैं। हर एक की लाइट बहुत अच्छी चमक रही है क्योंकि सन्तुष्टता की शक्ति बहुत श्रेष्ठ है। जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ और शक्तियाँ भी आ जाती हैं। सन्तुष्टता की शक्ति किसी भी प्रकार की समस्या को सहज समाप्त कर सकती है। जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ कोई अप्राप्त शक्ति नहीं, सन्तुष्टता की शक्ति कैसा भी वायुमण्डल हो, कैसा भी सरकमस्टांश हो उनको सहज परिवर्तन कर सकती है। सन्तुष्टता माया और प्रकृति की हलचल को परिवर्तन कर देती है। तो हर एक अपने को देखे कि हम सन्तुष्टमणि बने हैं? कोई भी मनुष्यात्मा की परिस्थिति को परिवर्तन कर वायुमण्डल परिवर्तन कर सकते हैं?

बापदादा भी आज विशेष अपने सन्तुष्टमणि आत्माओं को देख बहुत खुश हो रहे हैं। बापदादा ने देखा यहाँ सेवा में, साथियों में सन्तुष्टता की शक्ति वायुमण्डल को परिवर्तन कर लेती है। तो अपने को ऐसे सन्तुष्टमणि अनुभव करते हो? जो समझते हैं सन्तुष्टता की शक्ति है और समय पर कार्य में लगाते सफलता का अनुभव भी होता है, वह हाथ उठाओ। अच्छा। लम्बा हाथ उठाओ। हाथ तो बहुत अच्छे उठाते हो। बापदादा भी सभी के हाथों के देख खुश है। लेकिन यह चेक करो कि कोई भी साथियों में हलचल होती है, उस समय यह शक्ति परिवर्तन करती है? उसकी रिजल्ट पहले अपने-अपने स्थानों को शक्तिशाली बनाने में सक्सेस है?

बापदादा ने देखा कई स्थानों में अभी भी सहनशक्ति से स्थानों को सदा निर्विघ्न बनाने में आवश्यकता की आवश्यकता है! बापदादा ने कार्य दिया था कि हर एक स्थान अर्थात् सेवाकेन्द्र, ज़ोन निर्विघ्न की रिपोर्ट देवे। याद है? है याद! उसी हिसाब से समय की आवश्यकता अनुसार अभी हर स्थान निर्विघ्न होना आवश्यक है। चाहे सेवास्थान है, चाहे अपने प्रवृत्ति में हैं, हर स्थान निर्विघ्न सन्तुष्टता की शक्ति से सम्पन्न हो। समय की रफ्तार तो देख रहे हो। तो बापदादा ने देखा सन्तुष्टता की शक्ति चाहे स्वयं में, चाहे संगठन में अभी अटेन्शन देने की आवश्यकता है।

ब्रह्मा बाप चारों ओर चक्कर लगाते हैं। सबसे सहज साधन सम्पूर्ण बनने का जानते हो कौन सा है? फॉलो फादर। आदि से लेके अन्त तक ब्रह्मा बाप ने सन्तुष्टता की शक्ति से हर परिस्थिति पर विजय प्राप्त की। तो बापदादा आज सभी को विशेष इशारा दे रहे हैं, हर एक सन्तुष्टमणि बन सन्तुष्टता की शक्ति को विशेष कार्य में लगाते जाओ।

अब नया वर्ष आ रहा है इसमें हर एक को यह चेक करना है कि सन्तुष्टता की शक्ति से स्वयं भी सन्तुष्ट, साथी भी सन्तुष्ट रह, जो बापदादा चाहते हैं वैसे ही सन्तुष्ट रहे? कोई भी समस्या सन्तुष्टता से समाप्त हुई? क्योंकि दुनिया में दिनप्रतिदिन असन्तुष्टता बढ़नी ही है, उसके लिए अपने को देखें कि मैं सारा दिन सन्तुष्टमणि रही या रहा? इसका सहज साधन है फॉलो ब्रह्मा फादर क्योंकि आजकल दुनिया में असन्तुष्टता बढ़नी ही है।

बाकी बापदादा ने सभी बच्चों को नये वर्ष के लिए विशेष अमृतवेले सहज वरदान के रूप में वरदान देने का प्लैन बनाया है। सब पूछते हैं ना नये वर्ष में क्या होगा? तो बापदादा का विशेष दृढ़ संकल्प वालों को पुरुषार्थ में सहयोग प्राप्त होगा, तो यह नये वर्ष की गिफ्ट सहज हो जायेगा। अमृतवेले का यह वरदान पसन्द है? पसन्द है! करते तो हो लेकिन बापदादा की तरफ से विशेष सहयोग स्नेह शक्ति प्राप्त होगी। ठीक है! ठीक है? क्योंकि बापदादा ने देखा सबको लगन अच्छी है। कुछ करना है, यह लगन अच्छी है लेकिन जो बीच में कोई न कोई सरकमस्टांश आते हैं उसके लिए इस वर्ष में सन्तुष्टता की शक्ति विशेष कार्य में लगाना। चेक करना तो आगे स्वतः ही बढ़ते जायेंगे। अच्छा।

सभी जगह-जगह से आये हैं। चारों ओर भी मधुबन में लगन से याद करते रहते हैं। तो आप क्या बनेंगे? सन्तुष्टमणि। पसन्द है! सन्तुष्टमणि बनना पसन्द है, तो हाथ हिलाओ। अगर हर एक सन्तुष्ट रहेगा तो चारों ओर क्या होगा! वाह वाह! का गीत बजेगा। तो आप सभी कौन हो? कौन हो? सन्तुष्टमणि हो सभी! सन्तुष्टमणि हैं? कि थोड़ा-थोड़ा हैं। कहो, हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा! बापदादा चक्र लगाये तो क्या देखेंगे? हर स्थान पर सन्तुष्टमणियों

की लाइट चमक रही है क्योंकि बापदादा को चारों ओर चक्र लगाने में देरी नहीं लगती है। तो यह वर्ष चारों ओर सन्तुष्टमणियों की लाइट कितनी चमक रही है, यह रिजल्ट देखेंगे।

इस वर्ष अपने में समस्या प्रूफ, समाधान स्वरूप की विशेष रिजल्ट देखनी है। चारों ओर के बच्चे मैजारिटी मधुबन में मन से पहुंचे हुए हैं। बापदादा देख रहे हैं, चारों ओर के बच्चे कितने लगन से मन द्वारा मधुबन में पहुंचे हैं। आप साकार में पहुंचे हैं, चारों ओर के बच्चों को बापदादा भी विशेष यादप्यार दे रहे हैं। और विशेष सन्तुष्टता की शक्ति का वरदान चारों ओर के बच्चों को दे रहे हैं। सन्तुष्ट रहना, सन्तुष्ट करना और सन्तुष्टता की शक्ति से विश्व में भी सन्तुष्टता का वायब्रेशन फैलाना। अच्छा। सभी खुश हैं? हैं खुश तो दो-दो हाथ उठाओ। बापदादा भी बच्चों को मधुबन में देख खुश है। कुछ भी होवे ना, कोई भी ऐसी प्रॉब्लम छोटी-मोटी आवे ना तो आप मधुबन में पहुंच जाना, मन से, तन से नहीं मन से। बापदादा बच्चों के मन में एकस्ट्रा खुशी की खुराक भर देंगे। अच्छा है, मधुबन में आना अर्थात् पुरुषार्थ में आगे कदम बढ़ाना। अभी भी चेक करना मधुबन में आये तो कितना अपने में आगे बढ़ने में सहयोग लिया? मधुबन में सहज सारा दिन क्या याद रहता है? बाबा, बाबा, बाबा..। सुनते हैं तो भी बाबा की बातें, चलते हैं तो मधुबन का पावन स्थान, खाते हैं तो ब्रह्मा भोजन, पावरफुल क्योंकि यहाँ विशेष ड्युटी वालों को याद दिलाया जाता है इसलिए मधुबन में आना अर्थात् अपने में ज्ञान, योग, धारणा और सेवा में कदम को आगे बढ़ाना। तो सभी ने मधुबन का यह सब फायदा उठाया है? उठाया है! फायदा उठाया है? क्योंकि यहाँ तो कोई जिम्मेवारी है ही नहीं। अपने को आगे बढ़ाने की जिम्मेवारी है? अच्छा।

**सेवा का टर्न, दिल्ली आगरा का है:-** दिल्ली वाले उठो। (सभी के हाथ में कैण्डल है) दिल्ली वाले लाइट माइट का रूप बनके आये हैं। अच्छा हॉल में रौनक हो गई है। अच्छा। देहली वालों को तो राजधानी तैयार करनी है क्योंकि सभी को राज्य तो करना है ना, तख्त पर भले नहीं बैठें, लेकिन होंगे तो राज्य अधिकारी। अच्छा है, दिल्ली वालों को सर्विस का उमंग तो अच्छा है। अभी दिल्ली को नम्बरवन निर्विघ्न ज़ोन यह रिजल्ट देनी है। उमंग तो अच्छा है लेकिन अभी प्रूफ देना है। दिल्ली वाले करेंगे ना! हाथ उठाओ क्योंकि अभी तक बापदादा को किसी भी ज़ोन से रिजल्ट नहीं आई है। तो इसमें भी नम्बरवन लेगी ना दिल्ली। हाँ टीचर्स हाथ उठाओ। तो लेंगे? थोड़ा ढीला-ढाला उठाया। भाईयों ने उठाया। अच्छा। भिन्न-भिन्न स्थान पर बैठे हैं। अच्छा है बापदादा ने देखा सेवा का उमंग सभी ज़ोन में है और इस वर्ष में चारों ओर सभी ने यथा शक्ति प्रोग्राम भी अच्छे किये हैं। सेवा का उमंग उत्साह चारों ओर है और यह सेवा का उमंग बढ़ाते जायेंगे तो क्या होगा? भारत महान बन जायेगा। अच्छा। दिल्ली वालों को मुबारक हो।

**डबल विदेशी:-** हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। बापदादा ने देखा कि मधुबन का फायदा फॉरेन वालों ने बहुत अच्छा उठाया है। चाहे रिट्रीट की, चाहे कोई भी प्रोग्राम किये लेकिन संगठन में जो एक दो को सहयोग और हिम्मत मिली उसकी रिजल्ट अच्छी है इसीलिए बापदादा डबल फॉरेनर्स को 100 बार फायदा उठाने की मुबारक दे रहे हैं। और डबल फॉरेनर्स को बापदादा ने क्या टाइटल दिया! डबल पुरुषार्थी। डबल फॉरेनर नहीं लेकिन डबल पुरुषार्थी हैं। जब भी कोई डबल कहे ना तो कहो डबल फॉरेनर्स ही नहीं, डबल पुरुषार्थी भी हैं। और अपने को चेक करना। बापदादा जानते हैं अटेन्शन है और विशेष अटेन्शन दिलाया भी जाता है इसीलिए बापदादा को अच्छा लगता है चाहे देरी से आये हैं, लेकिन पुरुषार्थ में पीछे नहीं हैं। आगे जा रहे हैं और आगे जाते रहेंगे। यह भी बापदादा देख रहे हैं। बापदादा खुश है इसकी ताली बजाओ।

**ज्युरिस्ट और आई.टी. वालों की मीटिंग है:-** बापदादा ने पहले भी कहा है कि सभी वर्ग सेवा अच्छी कर रहे हैं, ज्युरिस्ट हैं कोई भी हैं लेकिन जब से वर्ग बने हैं, जिम्मेवारी मिली है तो देखा गया है कि जिम्मेवारी अलग-अलग मिलने से पुरुषार्थ भी अच्छा कर रहे हैं और प्रोग्राम्स भी बापदादा सुनते रहते हैं कि प्रोग्राम्स जो भी वर्ग कर रहे हैं उसकी रिजल्ट सब वर्ग की अच्छी निकल रही है। तो ज्युरिस्ट की भी सेवा अच्छी चल रही है। बापदादा खुश होते हैं कि हर एक का अटेन्शन सेवा के तरफ भी अच्छा रहता है, कुछ करना है, कुछ करना है और कर भी रहे हैं। तो ज्युरिस्ट की सेवा भी जगह-जगह पर हो रही है, होती रहेगी। बहुत अच्छा। अच्छा।

अभी सेवा के प्रति तो बापदादा ने सभी को मुबारक दे दी, चाहे कोई भी वर्ग है। अभी बापदादा हर एक के पुरुषार्थ में प्रोग्रेस यह चाहते हैं, उसके लिए बापदादा ने सुनाया कि हर ज़ोन अपने ज़ोन को निर्विघ्न बनावे। अभी इसकी रिजल्ट नहीं आई है। सिर्फ अपना सेन्टर नहीं, ज़ोन निर्विघ्न होना चाहिए। ऐसा प्लैन बनाओ जो हर ज़ोन में कोई भी पुरुषार्थ में कमजोर नहीं रह जाए। जैसे अभी साथी हो, वैसे पुरुषार्थ में भी अच्छे ते अच्छे साथी बनके चलें क्योंकि आप निर्विघ्न बनेंगे तो उसका वायुमण्डल विश्व में फैलेगा। सारी विश्व परिवर्तन होनी है। अच्छा।

चारों ओर को बापदादा ने यादप्यार तो दे ही दिया है लेकिन इस वर्ष में पुरुषार्थ में चारों ओर सब तरफ नम्बरवन हो, ऐसा अभी एक दो के सहयोगी बन ऐसी रिजल्ट निकालो। जो भी ज़ोन देखो नम्बरवन हो। यह हो सकता है? हो सकता है? दादियां सुनाओ, हो सकता है? हाँ बोलो, हो सकता है? (हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा, हम ही तो करेंगे) हाथ उठाओ, डबल पुरुषार्थी बनेंगे! जहाँ भी जो सुन रहे हैं, देख रहे हैं सब यह संकल्प करो करना ही है और जो बहादुर होंगे वह तो कहेंगे बाबा बड़ी बात क्या है, हुआ ही पड़ा है। (पावर आफ फ्युचर की सेवा भी निज़ार भाई और पार्टी अच्छी कर रहे हैं) भारत भी कर रहा है, फॉरेन भी कर रहा है। उमंग सभी को है लेकिन निर्विघ्न, यह रिपोर्ट आवे हर ज़ोन निर्विघ्न है, नम्बरवन पुरुषार्थी है क्योंकि आपका वायब्रेशन दुनिया तक जाये। आप लोग अगर पुरुषार्थ में आगे जायेंगे तो उसका वायब्रेशन दुनिया के दुःखी लोगों तक पहुंचेगा। आजकल तो कितना दुःख बढ़ रहा है! कारण ही ऐसे बनते हैं जो दुःख ही दुःख फैल जाता है। अच्छा -

सभी को याद है, अगले वर्ष क्या करना है? तो ऐसा पुरुषार्थ करके आगे बढ़ो और आगे बढ़ाओ। अच्छा। (ईश्वरीय सेवा के लिए कोई नया प्लैन) वह बतायेंगे, ठीक है। अच्छा है। अच्छा।

**दादियों से:-** (इस बार टीचर्स संगठन में भी यही रूहरिहान हुई कि संगठन को पावरफुल कैसे बनायें)

**मोहिनी बहन से:-** अभी भी इसका पार्ट है और सहयोग भी है। अभी ठीक है? हो जायेगा। कोई विचार नहीं करो, ठीक हो जायेगा। थोड़ा बीच में होता है ना। अभी डायरेक्शन ठीक मिला है ना तो ठीक हो जायेगा। खुश तो है ना। थोड़ा हलचल हुई है इसलिए होता है, ठीक हो जायेगा। बीमारी बढ़ गई है ना तो उसमें थोड़ा बहुत होता है। अभी थोड़ा लगातार एक-एक को ठीक करते जाएं बस, हो जायेगा। फिर भी ठीक है। तैयार हो जायेगी तो फिर दौड़ेगी। (कल इनका जन्म दिन है, 72 वर्ष)

**तीनों भाईयों से:-** तीनों मिलकर ऐसा प्रोग्राम बनाओ जो मधुबन सदा ही निर्विघ्न रहे। सब सन्तुष्ट भी रहें, त्यागी भी रहें, सन्तुष्ट भी रहें, दोनों ही। ध्यान दे रहे हो और भी थोड़ा देते चलो। तीनों ही आपस में राय करके एक विचार वाले हो जाओ। तीनों में एक ही लहर हो। विचार भिन्न-भिन्न होते हैं, लेकिन विचारों को भी मिलाना होता है। तो तीनों का एक विचार हो, यह एक दो में मिलते, एक जैसे संकल्प करो। अच्छा है। जैसे बहनें आपस में हैं ना, ऐसे भाई भी एकमत हों। जो भी जिसकी मत हो विचार लो लेकिन एक हो करके चलो।

### **बापदादा ने सभी बच्चों को नये वर्ष 2013 की बधाईयां दी:**

चारों ओर के बच्चों को नये वर्ष की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। इस नये वर्ष में कुछ न कुछ नवीनता अपने में लानी है। जो अभी तक परिवर्तन नहीं किया हो, मुश्किल लगता हो वह इस नये वर्ष में करके समाचार लिखना। अपने को निर्विघ्न बनाना और दूसरों को भी निर्विघ्न बनाने में सहयोगी बनना। सब सन्तुष्टमणियां, चमकती रहे, ऐसे बापदादा देखने चाहते हैं।

अच्छा - चारों ओर के बच्चों को बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार और परिवर्तन मनाने की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।